सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 11 ★ मूल्य : 10 रु.
10 नवम्बर, 2010 ★ कार्तिक, 2067

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी

अध्यात्म-चेतना वर्ष

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आयरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

जयगुरु हस्ती
जयगुरु हीरा
जयगुरु मान
धोवन पानी आरोग्य के लिये हितकर है।
भारतवर्ष का स्वर्णतीर्थ
महकते
सपनोंके लिये
खास
अपनोंके लिये
वेडिंग
ज्वेलरी कलेक्शन
ॲन्टीक
ज्वेलरी कलेक्शन
डायमंड
ज्वेलरी कलेक्शन
सर्टिफाईड डायमंड ज्वेलरी और राशीरत्न
फॅन्सी शुद्ध सोने के अलंकार
शुद्ध चांदी के बरतन
रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
आकाशवाणी चौक, औरंगाबाद 0240-2244520
सुभाष चौक, जलगाँव 0257-2223903
उंटेवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक 0253-2315644
Visit us at : rcbafnajewellers.com
जहाँ विश्वास ही परंपरा है।
ग्राहक सेवेची पंचसुत्री
१ | प्रामाणिकता
२ | वाजिबता
३ | विविधता
४ | हजर स्टॉक
५ | सदाचार

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,

जयपुर-302003 (राज.)

फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड

जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081

E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57

डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2010-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

तओ से मरणंतंमि,
बाले संतस्सई भया।
अकाममरणं मरइ,
धुत्तेव कलिणा जिए॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.16

वह अज्ञ मृत्यु की बेला में,
परलोक-ताप से डरता है।
हारे जुआरी सम सशोक वह,
अकाममरण से मरता है॥

नवम्बर, 2010
वीर निर्वाण संवत्, 2537
कार्तिक, 2067

वर्ष 67 अंक 11

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 5000 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 11000/-
संरक्षक सदस्यता : 5000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 3000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	गौरवशाली रत्नसंघ	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	10
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	11
प्रवचन-	सामायिक-साधना में शुद्धि का महत्त्व	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	12
हस्ती-शताब्दी-	अमरत्व का वह उपासक (11)	-श्री सम्पतराज चौधरी	22
चिन्तन-	जैन धर्म की हिन्दू धर्म से पृथक्ता	-डॉ. अनेकान्त कुमार जैन	32
अध्यात्म -	मैं कौन हूँ	-श्री रणजीत सिंह कूमट	39
अंग्रेजी-स्तम्भ-	RISHIBHASHITA : A VALUABLE WORK	-*Prof. Sagarmal Jain*	42
जीवन व्यवहार-	गृहस्थ-जीवन में आत्म-साधना के प्रश्न	-श्री उदयमुनि जी म.सा.	45
तत्त्व ज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (63)	-श्री धर्मचन्द जैन	51
श्रद्धा-संस्मरण-	अन्तिम शरण	-डॉ. दिलीप धींग	54
	प्रभावशाली मांगलिक	-सुमन सिंघवी	58
	गुरुदेव के उपकार को नमन	-श्री अशोक एवं राजेश गुगलिया	62
	योगी महापुरुष	-श्रीमती प्रेमलता सिंघवी	74
युवा-स्तम्भ-	तारीफ करना भी एक गुण है	-श्री राजकुमार जैन	57
नारी-स्तम्भ-	एक श्राविका का प्रेरक पंडितमरण	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	59
बाल-स्तम्भ-	जयघोष और विजय घोष मुनि	-मुथा श्री चांदमल राठौड़	71
विचार-	जैन इतिहास में आचार्य हस्ती की सूक्तियाँ	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	61
कविता/गीत-	हस्ती गुरुवर का क्या कहना	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	21
	जिनवाणी को तुम, अन्तर से स्वीकार करो	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	41
	तुम्हारे दीन दासों को तुम्हारा ही सहारा है	-श्री दिलरूपचन्द भण्डारी	64
	मुक्तक	-श्रीमती कंचन सुराणा	65
	आचार्य हस्ती आरती	-डॉ. दिलीप धींग	77
साहित्य-समीक्षा-	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	75
श्राविका-मण्डल -	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (11)		66
सम्मान-समारोह -	संघ-सेवा शिरोमणि एवं संघ रत्न सम्मान	-नौरतन मेहता	81
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		97
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		116

सम्पादकीय

गौरवशाली रत्नसंघ

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. ने जिस प्रकार अपने शिष्य-समुदाय रूप संत-सतीवृन्द के जीवन को घड़ने का कार्य किया, उसी प्रकार श्रावक-श्राविकाओं के जीवन को भी वे अपने विचारों एवं वचनों से घड़ते रहते थे। वे पात्र की परीक्षा करना भलीभांति जानते थे तथा उसके अनुरूप उसके जीवन को ऊँचा उठाने की प्रेरणा करते थे। वे प्रथम बार में ही ऐसा दुलार देते थे कि नया व्यक्ति भी बार-बार उनके श्रीचरणों में उपस्थित होने के लिए लालायित रहता था। वे कोई सांसारिक लाभ का लोभ नहीं दिखाते थे, अपितु जीवन को सद्गुणों की सौरभ से सुरभित करना चाहते थे। जो उनके इस भाव को पहचान लेता था एवं अपने जीवन को सद्गुणी बनाना चाहता था, वह आचार्य हस्ती का श्रद्धालु भक्त श्रावक बन जाता था। वे श्रीमंतों, प्रशासकों, वकीलों, न्यायाधिपतियों, प्रोफेसरों, लेखा-विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों आदि सबको अपने वचनों एवं तर्कपूर्ण उत्तरों से संतुष्ट कर देते थे। जहाँ कठोरता की आवश्यकता होती, वे कठोरता का भी व्यवहार करते, किन्तु उसके पीछे भी हित का भाव ही निहित रहता था।

श्रावकों का संघ विशाल होता है। सबकी योग्यता, भूमिका एवं रुचि भिन्न होती है। जो जिस भूमिका में है उसे उसकी योग्यता के अनुसार धर्मक्षेत्र में आगे बढ़ाया जा सकता है। कोई श्रावक बारह व्रतधारी होता है तो कोई एक व्रतधारी। कोई श्रद्धालु श्रावक भी हो सकता है तो कोई भक्ति एवं समर्पण के बल पर भी अपने जीवन को आगे बढ़ा जा सकता है। जिस प्रकार शरीर में प्रत्येक अंग भिन्न-भिन्न भूमिका के अनुसार कार्य करता है, इसी प्रकार संघ-श्रावकों की भूमिका में भेद हो सकता है, किन्तु संघ का हित उन सबका उसी प्रकार लक्ष्य रहता है जिस प्रकार कि शरीर के विभिन्न अंगों का कार्य सम्पूर्ण शरीर का रक्षण। इसी आधार पर आचार्यप्रवर किसी को स्वाध्याय की बात कहते, किसी को लेखन की, किसी को सामायिक की, किसी को सेवा की, किसी को व्यसन-त्याग की तो किसी को धर्मरक्षा की।

एक-एक श्रावक को साधु निरन्तर प्रेरित नहीं कर सकता, श्रावकों के

माध्यम से अथवा श्रावक संघ के माध्यम से वह संघ की आत्मा से जुड़ा रह सकता है तथा संघ में रहकर अपने जीवन का निर्माण कर सकता है। संतों की वाणी भी श्रावक संघ के माध्यम से प्रत्येक श्रावक तक पहुँच सकती है और वह अपने जीवन में ऊर्जा एवं दिशा प्राप्त कर सकता है। इसी दृष्टि से अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ का गठन हुआ तथा वह श्रावक-श्राविकाओं एवं समस्त संघ का हितैषी बनकर सन् 1975 से संगठित रूप में कार्य कर रहा है।

आज श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अन्तर्गत अनेक संस्थाएँ कार्यरत हैं तथा उनके माध्यम से संघ में सद्गुणों का संवर्द्धन एवं संरक्षण किया जाता है।

संघ को अनेक श्रद्धानिष्ठ, सजग एवं विवेकशील श्रावकों का नेतृत्व प्राप्त होता रहा है, जिससे संघ की गतिविधियाँ सही उद्देश्य की ओर निरन्तर आगे बढ़ती रही हैं। पूर्व में श्रावकरत्न श्री छगनमल जी मुणोत 'रिंया वाले', श्री चन्दनमल जी मुथा-जोधपुर, श्री मोतीलाल जी मुथा-सातारा, न्यायमूर्ति श्री इन्द्रनाथ जी मोदी-जोधपुर, श्री पांचूलाल जी गांधी-भीलवाड़ा, श्री रतनलाल जी नाहर-बरेली, श्री पृथ्वीराज जी कवाड़-पीपाड़, श्री श्रीचन्द जी गोलेच्छा-जयपुर, श्री जवरीलाल जी ओस्तवाल-मेड़ता, श्री उमरावमल जी ढढ्ढा-अजमेर, श्री सरदारमल जी मुणोत-मुम्बई, श्री पूनमचन्द जी बडेर-जयपुर, श्री इन्दरचन्द जी हीरावत-जयपुर, श्री जोगीदास जी बाफना-भोपालगढ़, श्री सायरचन्द जी कांकरिया-जोधपुर, श्री भीकमचन्द जी चौधरी-धुलिया आदि श्रावक जिस प्रकार संघ में समर्पित भाव से अपनी सेवाएं देते रहे एवं जिससे संघ में एकात्मता बनी रही, उसी प्रकार संघ के विधिवत् गठन के पश्चात् भी संघ को सुज्ञ श्रावकों का नेतृत्व मिला है। श्री सोहननाथ जी मोदी-जोधपुर, श्री लाभचन्द जी लोढ़ा-जयपुर, श्री नथमल जी हीरावत-जयपुर, डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत-जोधपुर, श्री मोफतराज जी मुणोत-मुम्बई, श्री रतनलाल जी बाफना-जलगाँव, श्री कैलाशचन्द जी हीरावत-जयपुर, श्री सुमेरसिंह जी बोथरा-जयपुर ने यथाशक्ति संघ को एकसूत्र में बांधकर संघ-विकास की गतिविधियों को आगे बढ़ाया है। माननीय श्री नथमल जी हीरावत प्रज्ञाशील, श्रद्धानिष्ठ एवं समर्पित श्रावकरत्न हैं, जिनका मार्गदर्शन संघ को सदैव प्राप्त होता रहता है। उनका परामर्श श्रावक संघ एवं श्रमण संघ दोनों के लिए हितावह होता है। वे एक साधक, चिन्तक एवं हितैषी श्रावक रत्न हैं।

रत्नसंघ में ज्ञानाराधन पर विशेष बल है। इसका कारण आचार्य हस्ती द्वारा स्वाध्याय का सिंहनाद है। आज आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं के

माध्यम से तथा स्वाध्याय संघ, युवक परिषद् एवं श्राविका मण्डल के द्वारा आयोजित शिविरों के माध्यम से धार्मिक-आध्यात्मिक एवं जीवन-निर्माणकारी ज्ञान पर विशेष बल प्रदान किया जा रहा है।

संघ की अनेक गतिविधियों में एक गतिविधि है- गुणी-अभिनन्दन। गुणियों का अभिनन्दन संघ को गुणी बनाने में सहायक है। गुण के प्रति जितना आदर भाव उत्पन्न होगा, उतना अपने में सद्गुणों का आधान होगा। संघ-सेवी श्रावक को यद्यपि अभिनन्दन की आकांक्षा नहीं होनी चाहिए तथा मान-सम्मान की प्राप्ति के उद्देश्य से रहित होकर ही संघहित की गतिविधियों में संलग्न होना चाहिए। फिर भी यदि संघ योग्य समझकर अभिनन्दन करता है तो उसे निरभिमानतापूर्वक संघ का आदेश मानकर स्वीकार करना चाहिए। धर्मसंघ कोई मान बढ़ाने का संघ नहीं, गुणियों के प्रति ईर्ष्या-द्वेष उत्पन्न करने का संघ नहीं, अपितु गुणियों के प्रति प्रमोदभाव की अभिवृद्धि का संघ है।

गतमाह 9 अक्टूबर को संघ के निर्णय के आधार पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व अध्यक्ष एवं संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्रावकरत्न श्री मोफतराज जी मुणोत का देश के विभिन्न ग्राम-नगरों से आए हुए श्रावक-श्राविकाओं की साक्षी में पाली (राज.) में **'संघ-सेवा शिरोमणि'** सम्मान से भावपूर्ण अभिनन्दन किया गया। इन्हीं के साथ गुरुभक्त एवं वर्तमान सांसद सुश्रावक श्री ईश्वरलाल जी ललवानी का **'संघ-रत्न'** के रूप में उसी समारोह में भावभीना अभिनन्दन किया गया।

अध्यात्म-चेतना वर्ष में माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत का अभिनन्दन निस्संदेह संघ-सदस्यों की भावनाओं की सामूहिक अभिव्यक्ति था। सन् 1991 से 1997 तक संघ अध्यक्ष के रूप में तथा उसके पश्चात् बिना पद के एवं संरक्षक मण्डल के संयोजक के रूप में जो सेवाएँ संघ को उन्होंने प्रदान की हैं, वे निस्संदेह आह्लादकारी हैं। माननीय मुणोत साहब की पात्रता को आचार्य हस्ती ने परख लिया था। मुणोत साहब की समर्पणशीलता, कर्त्तव्यपरायणता, भक्ति-भावना एवं प्रतिभा का आकलन आचार्य हस्ती को हो गया था। इसीलिए मुणोत साहब पहले सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष बने तथा बाद में संघ के अध्यक्ष भी बने। मुणोत साहब को जो गुरुदेव ने शिक्षाएँ दीं, वे अत्यन्त साधारण थीं, किन्तु स्वाति नक्षत्र में वर्षा की एक बूंद सीप में पड़कर जिस प्रकार मोती बन जाती है, उसी प्रकार आचार्य हस्ती की वाणी आदरणीय मुणोत साहब के जीवन का

शृंगार बन गयी। आचार्य हस्ती ने उन्हें एक श्लोक (पापान्निवारयति............ प्रवदन्ति सन्तः) के माध्यम से अच्छे मित्र के लक्षण बताए थे कि जो अपने मित्र को पापप्रवृत्ति से बचाता है, हितकार्य में संलग्न करता है , मित्र की गुप्त बात को छिपाता है, सद्गुणों को प्रकट करता है, आपत्ति आने पर साथ देता है वह सन्मित्र होता है। इसके साथ ही आचार्य हस्ती ने उनसे कहा आप संघ के अच्छे मित्र बनें। मुणोत साहब ने इस शिक्षा को अपने हृदय में सदा के लिए धारण कर लिया और संघ का सच्चा मित्र बनकर हर संकट में साथ दिया। वे संघ के लिए जो भी कार्य करते हैं, उसमें इस शिक्षा का उपयोग अवश्य कर लेते हैं। हम तो ऐसी शिक्षाएँ सुनते ही रहते हैं, किन्तु जीवन में इस ढंग से उसे उतारने वाला मुणोत साहब जैसा विरला ही व्यक्तित्व होता है। दूसरी शिक्षा उन्हें दी गई कि भूल के कारण किसी का गिरना संभव है, किन्तु दुर्जन व्यक्ति उसकी हंसी उड़ाते हैं और सज्जन उसको सहारा देकर समाधान करते हैं। इस शिक्षा को भी उन्होंने अपने जीवन का दिशा-बोधक मंत्र बनाया। यह एक सकारात्मक सोच है जो कमजोर की हंसी उड़ाने की अपेक्षा उसे सम्बल प्रदान करने की सीख देता है। तीसरी सीख गुरुदेव ने उन्हें धर्म की रक्षा हेतु देते हुए कहा कि धर्म की रक्षा के लिए तन, धन और लाज तीनों को देने में संकोच नहीं करना चाहिए। ये तीनों सीख मुणोत साहब के जीवन का मंत्र बन गई।

जब आपने जनवरी 1991 में संघ का अध्यक्ष पद सम्हाला, उसके तीन माह पश्चात् ही आचार्य हस्ती के द्वारा अप्रेल में संथारा स्वीकार कर लेने पर आपने जिस तत्परता एवं भावना से सेवाएँ दी, वे निश्चित ही अनुकरणीय एवं उल्लेखनीय रहीं। आपने संघ को एकसूत्र में बांधने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। श्री शीतलमुनि जी के कारण उत्पन्न विषम स्थिति को आपने आपदा समझ कर संघ के मित्र की भांति जो सहयोग किया एवं संघ को विघटित होने से बचाया, वह आपकी रत्नसंघ को महत्त्वपूर्ण देन है। इसी प्रकार आचार्य हस्ती के संथाराकाल में रहकर तथा उसके पश्चात् उत्पन्न रिक्तता के समय आपने संघ में जो धैर्यपूर्वक आगे बढ़ने का संदेश दिया, उससे संघ में सम्प बना रहा। जब यह बात उठी कि हमारा संघ छोटा है, संत कम हैं तो आपने उस समय फरमाया- "अगर सन्त थोड़े भी हों, किन्तु उनका आचरण अच्छा हो तो उसकी सुगन्ध से पुनः यह संघ चमन हो सकता है। हमें अपने संतों के आचरण पर गर्व है, उनका सदाचरण संघ के भावी विकास की नींव है।"

पीपाड़, पाली, गोटन, सवाईमाधोपुर, जोधपुर आदि अनेक स्थानों पर निर्मित सामायिक-स्वाध्याय भवन अथवा अतिथिगृह के निर्माण में मुणोत साहब का मुक्तहस्त से सहयोग रहा है। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सन्

2008 के कांदिवली, मुम्बई के वर्षावास में आपकी उदारता एवं संघनिष्ठा का सबने साक्षात्कार किया है।

संघ-रक्षण में श्रावकों की भूमिका कितनी महत्त्वपूर्ण हो सकती है, इसके एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं-श्री मोफतराज जी मुणोत। उनका संघ के प्रति समर्पण अनूठा है। बुद्धिशील व्यक्ति प्रायः गुरु के प्रति समर्पित नहीं होते, किन्तु मुणोत साहब ने गुरु-वचनों को अपनी निजी बुद्धि से अधिक महत्त्व दिया एवं आज भी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के वचनों का भी उसी प्रकार आदर कर रहे हैं। आपकी उदारता एवं सकारात्मक सोच ने संघ को एकसूत्र में बांधे रखा है।

संघ में जुड़ने के साथ मुणोत साहब ने स्वयं अपने जीवन में भी परिवर्तन अनुभव किया। उनके जीवन में निर्व्यसनता एवं प्रामाणिकता के साथ सदाचार के प्रति आस्था बढ़ी। बौद्धिकता के धरातल तक सीमित न रहकर धर्म को जीवन के साथ जोड़ा। प्रारम्भ में जब उन्होंने गुरुमुख से सुना था कि संघ-सेवा से कर्म-निर्जरा होती है तो इस पर उन्हें एकाएक विश्वास नहीं हुआ, किन्तु फिर जीवन में अनुभव के स्तर पर यह जान लिया कि वास्तव में संघ-सेवा कर्म-निर्जरा का कारण है। संघ-सेवा करते समय कई बार अप्रिय प्रसंग भी आते हैं, उनमें क्रोध एवं अहंकार अपना स्वरूप दिखाना चाहते हैं, किन्तु संघ का हित किसमें है, यह सूत्र जब सामने रहता है तो क्रोध एवं अहंकार पर विजय का मार्ग धीरे-धीरे प्रशस्त होता जाता है। इसी प्रकार जीवन के अनेक दोष संघ-सेवा के निमित्त से विलुप्त हो जाते हैं। संघ में जब कभी आपको बोलने का अवसर प्राप्त होता है तो आप बहुत ही सधी हुई भाषा में अपनी बात प्रस्तुत करते हैं। यह कला भी आपको संघ में कार्य करते हुए प्राप्त हुई। संघ के सद्गुणी जनों एवं उत्साही युवकों को जब वे देखते हैं तो उन्हें अत्यन्त प्रमोद होता है तथा इन गुणों के सतत संवर्द्धन के लिए उन्हें निरन्तर उत्साहित करते रहते हैं।

आज भले ही वे संघ के अध्यक्ष नहीं हैं, किन्तु उनकी बात को श्रावकों में सर्वोपरि माना जाता है। सबका उनके प्रति प्रेम भरा लगाव है। उसका कारण उनकी सबके प्रति आत्मीयता का भाव है। संघ का कोई भी महत्त्वपूर्ण कार्य हो, उसमें मुणोत साहब की राय कारगर भूमिका का निर्वाह करती है। संघ में अनेक नई गतिविधियां प्रारम्भ हुई, उनमें आपकी उल्लेखनीय भूमिका रही। इनमें शरदचन्द्रिका मुणोत वात्सल्य निधि एवं गजेन्द्र निधि को महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है। आपका मानना है कि संघ के लिए देने का भाव हर व्यक्ति के मन में होना चाहिए, तभी संघ के साथ हमारा लगाव निरन्तर बना रह सकता है।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

जहा वयं धम्ममजाणमाणा, पावं पुरा कम्ममकासि मोहा।
ओरुज्झमाणा परिरक्खियंता, तं नेव भुज्जो वि समायरामो ।।
अब्भाहयंमि लोगंमि, सव्वओ परिवारिए।
अमोहाहि पडंतीहिं, गिहंसि न रइं लभे ।।
मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो, जराए परिवारिओ।
अमोहा रयणी वुत्ता, एवं ताय! वियाणह ।।
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ।
अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राइओ ।।
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राइओ ।।

अर्थः-

हमने धर्मज्ञान के बिना मोहवश, पाप किये पहले भारी।
अवरोधित परिरक्षित होकर, फिर वह नहीं करेंगे दुःखकारी ।।
हो रहा लोक है अतिपीड़ित, दुःख से यह चारों ओर घिरा।
आती हैं काली रात यहाँ, घर में मिलता सुख नहीं जरा ।।
यह लोक मृत्यु से पीड़ित है, और जरा रोग से घिरा हुआ।
है रात्रि अमोघा कहलाती है, हे तात! जानले शास्त्र दुआ ।।
जो जो जाती है बीत निशा, वे नहीं लौटकर हैं आती।
करते अधर्म जो जन जग में, उनकी ये रातें विफल जाती ।।
जो जो जाती है निशा बीत, वे नहीं लौट कर हैं आती।
करते जो धर्माराधन हैं, उनकी वे रातें सफल हो जाती ।।

-उत्तराध्ययन सूत्र-2, चौदहवाँ अध्ययन, गाथा-20-21, 23-25

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

समाज-सेवा

- आज प्रायः समाज में परिग्रह-प्रदर्शन, आडम्बर और दिखावे में धन का अपव्यय किया जाता है। परिग्रह-प्रदर्शन की सर्वत्र होड़ सी लगी हुई है, जो वस्तुतः साधारण स्थिति के स्वधर्मी बन्धुओं को परेशानी में डालने वाली, दुःखदायी और उन पर अनावश्यक भार डालने वाली है। यही होड़ यदि सामाजिक सुधार, धार्मिक अभ्युत्थान और धार्मिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार में लगे, तो कितने सुखद परिणाम निकल सकते हैं। एक अति सुन्दर आदर्श समाज का निर्माण हो सकता है, जन-जन के मानस में धार्मिक चेतना की अमिट लहर उत्पन्न हो सकती है। समाज का धार्मिक और नैतिक स्तर उन्नत हो सकता है।
- साधक को स्तुति के अमृत की तरह विष के प्याले भी पीने पड़ते हैं। जरा-सा भी सामाजिक कार्य में चूका कि लोग उसकी अच्छाइयाँ भूलकर निन्दा करने लग जाते हैं, सामाजिक जीवन का यह दूषण है। साधारण कार्यकर्ता ऐसी स्थिति में आगे नहीं बढ़ता। अतः शास्त्र में कहा है- महिमा-पूजा और निन्दा-स्तुति की अपेक्षा छोड़कर साधना या कार्य करो।
- समाज-सेवा करना हर व्यक्ति का कर्तव्य है। धन वाले धन देकर सेवा करें, दिमाग वाले दिमाग से सेवा करें। जो बोलना और प्रचार करना जानते हों वे शुभ कार्य का प्रचार करें। ऐसी मिली-जुली ताकत से आप अपनी शक्ति का दान करेंगे तो समाज सुखी रहेगा। अहिंसक संस्कृति सही रूप में बढ़ेगी तो भगवान की सच्ची सेवा होगी, हमारे जैसे संत को भी प्रमोद होगा।
- समाज में पचासों भाई-बहन ऐसे हैं जिनके खाने-पीने की भी सुबह शाम व्यवस्था बराबर नहीं होती है। कई भाई ठेला घुमाकर अपना पेट भरते हैं। महाजन की बेटी दूसरों के यहाँ रसोई करके पेट भरती है। जैसे बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएँ वाले हैं वैसे ही कुछ कमजोर लोग भी हैं। लेकिन बूंद-बूंद से घड़ा भरता है, यह सोचकर उनका सहयोग करना चाहिए।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

सामायिक-साधना में शुद्धि का महत्त्व

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

पूज्य आचार्य प्रवर के द्वारा सिवाना (सिवांची क्षेत्र) में शेषकाल 4 अप्रेल से 11 अप्रेल, 2010 के मध्य जो समता एवं सहनशीलता पर ओजस्वी धाराप्रवाह प्रवचनामृत फरमाये गए, उनका सार श्री जगदीश जी जैन ने संक्षेप में संकलित किया है। जिसका प्रथम अंश अक्टूबर अंक में प्रकाशित हुआ था। शेष अंश यहाँ भिन्न शीर्षक से प्रकाशित है। **-सम्पादक**

समता को प्राप्त करने के लिये सामायिक की साधना आवश्यक है। सामायिक की सम्यक् आराधना के लिए चार शुद्धियाँ बताई गई हैं- जो द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के नाम से जानी जाती हैं। उनको क्रम से समझना, जानना, उपयोग पूर्वक आचरित करना, साधक के लिये आवश्यक है।

द्रव्यशुद्धि-

सामायिक की आराधना में द्रव्यतः साधन औदारिक शरीर है, जो आपको मिला हुआ है। शरीर की शुद्धि का अर्थ नहा-धोकर उसे साफ-सुथरा, सजावट कर रखना नहीं, अपितु सभ्यता एवं विवेक के साथ बैठना, स्थिर रखना, अनावश्यक हलन-चलन नहीं करना है। इससे काया के कुआसन आदि 12 दोष टाले जाते हैं। द्रव्य का दूसरा आशय है- बाहरी पदार्थ अर्थात् नीचे पहनने का चोल पट्टा, धोती, लूंगी, ओढ़ने का दुपट्टा, चद्दर, कम्बल आदि। जहाँ तक हो सके- पेन्ट, पाजामा, सिले हुए ऐसे वस्त्र जिनका प्रतिलेखन सहजता से नहीं हो सके, काम में नहीं लेना चाहिये। बैठका, मुँहपत्ती, पूंजनी, माला, पुस्तक आदि सामायिक के द्रव्य साधन हैं। आसन, वस्त्र आदि उपकरण अल्पारम्भी हों। वे कोमल, रोएँदार, गुदगुदे एवं रंग बिरंगे न होकर स्वच्छ सादे होने चाहिये। मुँहपत्ती गोटेवाली, कसीदे वाली न हो तथा गंदी, फटी, बेड़ौल और बिना नाप की भी नहीं होनी चाहिये। इसी तरह माला भी चाँदी की न हो, खुशबूदार चंदन की महक वाली न हो, जिससे मन बहक जाय। कारण कि द्रव्य मन पर बाहर के द्रव्यों का असर जल्दी होता है, अतः सामायिक में द्रव्य शुद्धि पर

भी बल दिया है।

भगवान महावीर के शासन में घी-तेल-धान्य आदि के व्यापारी, मालाकर, प्रजापति आदि कई जाति के श्रावक साधना करने वाले थे। संसार की वेशभूषा में सामायिक करने पर, चिकने कपड़ों की गंध आने पर साधक का मन व्यापार की ओर जा सकता है, धान्य वाले की जेब में धान रहने पर संघट्टा हो सकता है, मालाकार की जेब में फूल रह सकता है, अतः सांसारिक वेश-भूषा हटाकर एकसी सादा वेशभूषा की बात कही गई है। जिससे धार्मिकता की यूनिफार्म नजर आये। जैसे- आरक्षी दल में सेना की, पाठशाला में विद्यार्थी की, चिकित्सालय में चिकित्सक एवं नर्सिंग स्टाफ की, कोर्ट में वकील की वेशभूषा उनकी कार्य पद्धति का स्वरूप दिखाती है। इसी प्रकार साधना-आराधना करने वाले सामायिक के साधक की भी एकसी वेशभूषा गरीब-अमीर का, राजा-महाराजा का, सेठ-साहूकार का, ऊँच-नीच का भेद मिटाकर, भक्ति की भावना बढ़ाकर, समता में सहायक होती है। इस वेशभूषा में साधना करने से परिवार के सदस्य, बाहर से आये मेहमान और किसी प्रयोजन से मिलने वाले दूसरे भाई भी आपको वेशभूषा में देख विक्षेप नहीं करेंगे तथा यदि आप साधकों के बीच सामायिक की वेशभूषा में साधना करते हुए निद्राधीन होकर प्रमाद में जाने लगे, उत्तेजना में आकर तेज बोलने लगे अथवा व्यापार या आरम्भ-सम्भारम्भ की बात करने लगे तो साथी-सहयोगी आपको सावचेत कर देंगे। भाईसाहब! अभी आप सामायिक में हैं, क्या कर रहे हैं? क्या बोल रहे हैं, कैसे नींद ले रहे हैं, क्यों प्रमाद कर रहे हैं? इस जागरण में यह द्रव्य वेश भूषा निमित्त बनेगी।

द्रव्य शुद्धि भाव शुद्धि का कारण है। सुमुख-दुर्मुख की बात सुनकर भावों से भयंकर युद्ध करने वाले राजर्षि प्रसन्नचन्द्र को मुण्डित मस्तक ने, नरक में जाने वाले अध्यवसायों से हटाकर विशुद्धतम अध्यवसाय में पहुँचा कर केवलज्ञान प्राप्त करा दिया था। रजोहरण और मुखवस्त्रिका के उपकरण देखकर आर्द्रकुमार को अनार्य देश में भी जाति-स्मरण ज्ञान हो गया था। साधु की यही वेशभूषा और चर्या देखकर, राजमहलों में बैठा मृगापुत्र जाति-स्मरण ज्ञान प्राप्त कर साधु बनने को उद्यत हो गया था। द्रव्य-उपकरण विश्वास का कारण है। ऐसा तीर्थंकर भगवान महावीर ने अपनी अन्तिम वाणी उत्तराध्ययन के 23 वें अध्याय की 32

वीं गाथा में केशी गौतम के संवाद में समाधान करते हुए कही-'लोगे लिंगपयोयणं।' अर्थात् लोक व्यवहार में व्रत का रक्षण करने के लिये लिंग अर्थात् वेश-भूषा विश्वास का कारण है। सामायिक साधक की इस वेशभूषा को देखकर अन्य धर्मी मुस्लिम आततायी भी साधक को स्थान देते हैं, सम्मान देते हैं, यहाँ तक कि छापा मारने (रेड) निरीक्षण करने आये दल के एवं सी.बी.आई. पुलिस के अधिकारी भी बिना निरीक्षण किये लौट जाते हैं। तीसरी बात यह है कि वेशभूषा साधना-समता में सहयोगी बनती है। जैसे- घोड़ी पर बैठा दूल्हा भी 100 गालियाँ सहन कर लेता है, साधक का वेष पहने हुआ बहुरूपिया भी सोने की मोहरें ग्रहण नहीं करता, महावीर एवं बुद्ध का नाटक करने वाला भी अनेक विपरीतताएँ सहन करता है, इसी तरह मैं भी अभी भगवान महावीर की धर्म-प्रज्ञप्ति स्वीकार कर समता की साधना करने बैठा हूँ, अतः मुझे भी 18 पापों से दूर रहना है, ऐसी मन में दृढ़ता आती है।

जब आप यात्रा की, शयन की, शादी की, खेलने की, व्यायाम की, इन सबकी वेशभूषा अलग रखते हैं तो साधना की वेश-भूषा में लापरवाही क्यों? इन सब पर शायद आपका चिंतन चल सकता है- महाराज इतने बंधन लगायेंगे तो सामायिक करना ही छोड़ देंगे। पर भाई! घर के, दुकान के, मिलने-जुलने के आवश्यक कार्यों को छोड़कर जब आप साधना के लिये समय ही निकालते हैं तो आधा या पाव फल प्राप्त करने के बजाय, आप उसका पूर्ण लाभ उठा सकें, इस हेतु द्रव्य-स्वरूप की शुद्धि की बात की जा रही है।

यदि समता भाव प्रारम्भ में न भी आ पाये, तब भी द्रव्य सामायिक लाभदायक है। कारण कि उतने समय तक बाहर के हिंसा, झूठ आदि पाप से आप बच गये। दूसरे, देखने वालों में भी श्रद्धा-प्रतिष्ठा भी जमी। भावरूप लाख नहीं मिले तब भी द्रव्य रूप हजार अच्छे हैं। महल नहीं मिला तो फुटपाथ की बजाय झोंपड़ी भी अच्छी लगती है।

क्षेत्र शुद्धि-

किस स्थान पर बैठकर सामायिक की साधना करनी चाहिये? शास्त्र में श्रावक की साधना के लिये स्वतंत्र पौषधशाला का उल्लेख मिलता है। आनन्द, शंख पुष्कलि आदि श्रावक आत्मगुणों के पोषण के लिये पौषधशाला में सामायिक करते थे। सभी के लिये ऐसी अनुकूलता संभव नहीं है, उस स्थिति में

जहाँ कोलाहल न हो, आरम्भ-समारम्भ एवं विकार का वातावरण न हो, चित्त में चंचलता नहीं आवे, ऐसे समभाव में सहायक क्षेत्र को उपादेय माना गया है। इसे स्थानक, उपाश्रय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, साधना-आराधना स्थल किसी भी नाम से कहा जा सकता है। आज ये स्थल भी 10-20 चित्र लगाने से, दानदाताओं की नामावली से, सावद्य व्यवहार में काम लेने से, साधना में सहायक नहीं रहे हैं, तो घर-बंगलों की स्थिति भी अलग तरह की है। वहाँ डाइनिंग रूम, ड्राइंग रूम, किचन, बाथरूम, बेडरूम ये सब तो मिल सकते हैं, गार्डन व गैरेज, कर्मचारियों के रूम भी मिल जायेंगे, लेकिन साधना-आराधना का कक्ष (प्रेयर रूम) नहीं मिलता। जब आत्मशांति के लिये अमीरों के यहाँ ऐसे कक्ष नहीं मिलते, तो सामान्य स्थिति वालों के पास आवास की न तो बड़ी जगह होती है, न ही धन दौलत। अतः वे अपने घर में अलग से साधना कक्ष बनाने की स्थिति वाले नहीं होते। इसका कारण? साधना के प्रति श्रद्धा नहीं जगी है। कर्नाटक की ओर विहार करते हमने ऐसे सामान्य स्थिति वाले घर भी देखे हैं- जहाँ मात्र रसोई के अलावा दो कमरे हैं, फिर भी वे एक हाथ जितनी जगह में शिवलिंग स्थापित कर भक्ति करते देखे गये हैं। सामान्य साधकों के लिये सार्वजनिक एकान्त स्थान सामायिक/ पौषध की साधना के लिए मिलते हैं। आज कहीं-कहीं पर साधना-आराधना का लक्ष्य हटाकर साज-सज्जा से युक्त चित्रकारी वाले दानदाताओं के नाम से भरी हुई दीवारों वाले स्थानक बनाये जा रहे हैं, जो साधना के लिए उचित नहीं हैं। धर्मस्थान परिग्रह का स्थान नहीं बनना चाहिये। कारण कि क्षेत्र भी समता की साधना में सहयोगी होता है। एक-एक क्षेत्र का ऐसा प्रभाव है कि वहाँ गाय और बैल जैसे जानवर भी शेर का मुकाबला करते हैं। मात्र टीले पर बैठने से छोटे बालक भी ज्ञानियों, अनुभवियों जैसा न्याय कर देते हैं। साधक जहाँ साधना करते हैं वहाँ शेर, हिरण भी वैर भूलकर एक साथ बैठते हैं, इसके विपरीत लबान जैसे क्षेत्र में श्रवण जैसे भक्त को भी माता-पिता से श्रमदान मांगने की कुमति जग जाती है।

आचार्य भगवंत (पूज्य हस्तीमल जी महाराज) के श्री चरणों में जोधपुर से आगोलाई जाने का प्रसंग बना। एक स्थान पर जहाँ सैनिकों का बारूद रखा हुआ था, बम आदि विस्फोटक पदार्थ थे वहाँ उनकी सुरक्षा हेतु अग्नि का समारम्भ तो दूर, धूम्रपान भी निषिद्ध था। हमारे भीतर भी कषायों का बम और विषयों का

बारुद भरा हुआ है। अतः घर में आरम्भ-समारम्भ वाले स्थान से बचकर विशुद्ध क्षेत्र जहाँ चित्त में चंचलता नहीं आती हो, विषय विकार नहीं जगते हों, कोलाहल से मन चञ्चल नहीं बनता हो, ऐसे समभाव के क्षेत्र उपादेय हैं, ऐसे स्थान पर सामायिक करनी चाहिये, कारण कि-समभाव की साधना करने वाले साधक को समाधि में सहायक क्षेत्र की आवश्यकता रहती है, जैसे- जब तक निर्भय होकर उड़ना नहीं आता, चिड़िया एवं कबूतर के बच्चे को घोंसलें में रखा जाता है, लालटेन की लौ को काँच लगाकर रक्षण किया जाता है, ब्रह्मचर्य पालन हेतु नववाड़ से उसका रक्षण किया जाता है, अमूल्य रत्नों को तिजोरी में रखा जाता है, रोगी को निरोग करने के लिये पथ्य का पालन करवाया जाता है और विद्यार्थी भी चौराहे पर बैठने के बजाय एकान्त में बैठकर विद्यार्जन करता है, इसी तरह समभाव की साधना करने वाले साधक को निरवद्य, शान्त स्थान में रहना आवश्यक है।

सुना है, जिसे साँप डस गया हो, उसे मन्त्रोपचार एवं औषधियों से निर्विष बनाये जाने के बाद भी जब बादल आते हैं तो विष जोर पकड़ता है, व्यक्ति में पागलपन उत्पन्न होता है, कभी वह मूर्च्छित भी हो जाता है, वैसे ही गृहस्थी के घर में पारिवारिक जनों के संग में अर्थात् आरम्भ और विषय-कषाय के स्थान में सामायिक करने वाले साधक के मन में विषय विकार जगते हैं, मोह जगता है और वह भी समभाव से अस्थिर हो पागलपन करने लग जाता है, अतः क्षेत्र-शुद्धि आवश्यक कही गई है।

शान्त, एकान्त स्थान से शास्त्रकारों का अभिप्राय है कि धर्म का बीज, हृदय का खेत, बोने वाले सद्गुरु एवं स्वाध्याय की खाद, इतना होने पर भी यदि समभाव का अंकुर नहीं लगता है तो यही समझना चाहिये कि हृदय के खेत की भूमि अर्थात् साधना का क्षेत्र विपरीत है। आगमों के अन्तर्गत सामायिक की साधना को श्रेष्ठतम साधनाओं में माना है। महिमा बताते हुए कहा है-

दिवसे दिवसे लक्खं देइ, सुवण्णस्स खंडियं एगो।
एगो पुण सामाइयं, करेइ न पहुप्पए तस्स॥

लक्ष मुद्राओं का दान एक सामायिक की समानता नहीं कर सकता।

काल शुद्धि-

दशवैकालिक अध्ययन 5 उद्देशक 2 गाथा 4 में- 'काले कालं समायरे'

वाक्य है जिसका आशय है कि जिस समय जो कार्य करणीय हो, उसी समय में उस कार्य को सम्पन्न करें। अतः साधक को योग्य समय का विचार करके ही सामायिक की साधना करनी चाहिये। ऐसी ही सामायिक निर्विघ्न सम्पन्न होती है। कई महाशय उचित-अनुचित समय का विचार किये बिना सामायिक करने बैठ जाते हैं। फल यह होता है कि उनका मन अपेक्षित शांति की अनुभूति नहीं कर पाता। संकल्प-विकल्प की उधेड़बुन में उनकी सामायिक-साधना गुड़-गोबर हो जाती है। जहाँ तक हो सके सामायिक-साधना सूर्योदय से पूर्व या पश्चात् के समय में किये जाने की भावना रखें। वैसे सामायिक-साधना के लिये कोई काल बुरा नहीं है, सद् कार्यों के लिये हर समय शुभ है।

भगवान महावीर ने निशीथ सूत्र 10.37 के माध्यम से साधुओं के लिये कथन किया है-"जे भिक्खू गिलाणं सोच्चा णच्चा न गवेसइ न गवेसंतं वा साइज्जइ.....आवज्जइ चउम्मासियं परिहारठाणं अणुग्घाइयं।" यदि कोई साधु, बीमार साधु की सेवा, सार संभाल को छोड़, किसी अन्य कार्य में लग जाए तो उसको गुरु चौमासी का प्रायश्चित्त आता है। जब साधु के लिये ग्लान-वृद्ध रोगी की सेवा का विधान है तब सांसारिक मनुष्य का दायित्व तो परिवार के प्रति और भी अधिक है। वह वृद्ध, असहाय, रोगी आदि की सेवा कर उपकार से उऋण होने का लक्ष्य रखे। अतः गृहस्थ सेवा आदि का समय टाल कर ही सामायिक करे। बीमार को छोड़ सामायिक करना उचित नहीं। वृद्ध,रोगी अपनी आवश्यकता से पुकारता रहे, और आप कहो कि मैं सामायिक में हूँ, सेवा के समय ऐसी साधना में आपकी समता व सहनशीलता कितनी सुरक्षित रह सकेगी, विचारणीय है। सर्वप्रथम आपका उत्तरदायित्व है कि परिवार व वृद्ध को संभालें, यदि आपके नियम ही है तो अन्य व्यवस्था कर ही सामायिक करें। काल शुद्धि से तात्पर्य यह है कि जिस समय में अन्य कोई विशिष्ट कार्य नहीं हो एवं आप स्वभाव में, शान्तता से आत्मभावों में रमण कर सकें, साधना के लिये वही काल श्रेष्ठ है।

भाव शुद्धि-

मन-वचन-काया की शुद्धता बनी रहना ही भाव शुद्धि है। मन की चंचलता, वाणी की चपलता, कायिक असंयतता को उपयोग सहित तजकर भावशुद्धि के समीपस्थ स्थित होना है, ऐसे ही महापुरुषों का जीवन आकर्षण का

चुम्बकीय केन्द्र होता है- पूज्य गुरुदेव के बारे में कहे शब्द-"मनस्येकं, वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्" कितने सटीक हैं। "मन-वचन-कर्म तीनों में एकता रखने वाले महात्मा से सब प्रभावित होते हैं।"

हम शुद्धि को मन, वचन एवं काया की अपेक्षा भी समझें।

(1) मनःशुद्धि- मन की गति विचित्र है, मन ही मनुष्यों के कर्म-बंध और मोक्ष का कारण है। संत लोगों का काम उचित-अनुचित का ध्यान दिलाकर सर्चलाइट दिखाना है। बुद्धिवादी लोग कहते हैं कि मन में अशांति के समय सामायिक नहीं करनी चाहिए। ऐसा तर्क करने वालों को ध्यान देना चाहिये कि दवा, रोग की स्थिति में ही ली जाती है, वैसे ही राग और विकारों की दशा में शान्ति व मुक्ति (छुटकारा) पाने के लिये सामायिक की आराधना आवश्यक है। मन के बाहर जाने का सबसे बड़ा कारण राग है, इसलिये इसे कम करो, राग कम करने का उपाय भी है- "बाहरी पदार्थों को अपना मानना छोड़ दीजिये।" आप में से कौन-कौन ऐसा साहस वाला है, जिनका मन पर नियंत्रण है? जिनका मन नियन्त्रित है, उनकी इन्द्रियाँ विषयों में आकर्षित नहीं होती। मन यदि सधा हुआ है तो आपको जैसा जितना मिलेगा, उसी में संतोष कर लोगे। मात्र तन और वाणी से तो क्रिया होती रहे और मन कहीं अन्यत्र भटकता रहे तो उसे द्रव्य क्रिया समझिये। मानसिक दुर्बलता से ही मनुष्य सांसारिक पदार्थों की ओर खिंचता है, गाँठ बांधकर रखिए। अस्थिर मन से सामायिक व्रत की बराबर साधना नहीं होती। जिनके मन के विकार निकल गये, गुरुदेव ने उनको श्रमण व सुमन कहा है। मन के विकारों का वेग सबसे तीव्रतम होता है। वैज्ञानिकों के अनुसार एक सैकण्ड में प्रकाश की गति 1,80,000 मील, विद्युत की 2,88,000 व विचारों की गति 22,65, 120 मील तक है। इस मन को पाँचों इन्द्रियों का राजा कहकर सम्बोधित किया गया है। यह आकर्षण-विकर्षण, इष्ट-अनिष्ट, योग्य-अयोग्य, कार्य-अकार्य में भेद समझे बिना उनमें लिप्त या रचा-पचा रहता है।

लोभ और अज्ञान मानसिक चंचलता को बढ़ाने वाले हैं। इस चंचलता को घटाने के लिये मन की दिशा को बदलने के लिये एकाग्रता से सामायिक कीजिये। मन बदल जाता है तो जीवन बदलते देर नहीं लगती। मन-वचन-काय योग की शुभ प्रवृत्ति से शुभ कर्मों का बंध होता है। सामायिक और स्वाध्याय की

ललक व अभ्यास विषम भावों से हटाकर मन को समभाव की सरिता में अवगाहन का अवसर प्रदान करते हैं। देव, गुरु एवं धर्म की अविनय आशातना नहीं करते हुए भक्तिभाव पूर्वक यदि सामायिक की साधना की जायेगी तो अवश्य ही मन की शुद्धता बढ़ती जाएगी।

(2) वचन शुद्धि- मन एक गुप्त एवं परोक्ष शक्ति है, परन्तु वचन शक्ति तो प्रकट है। उस पर प्रत्यक्ष अंकुश लगाकर हिताहित परिणाम का विचार कर ही बोलना चाहिए। वाणी का संयम, तन का संयम, मन का संयम ही हमारी आत्मशुद्धि में सहायक होता है। गुरुदेव के शब्दों में- ''विचार की भूमिका पर ही आचार के सुन्दर महल का निर्माण होता है।'' अतः साधक का कर्तव्य है कि वह सामायिक काल में सामायिक व्रत की स्मृति रख वचन को गुप्त रखने का पूरा विवेक रखे- वचनों को गुप्त रखने का आशय- ''कुवयण, सहसाकारे, सच्छंदं, कलहं च। विगहा, विहासोऽसुद्धं निरवेक्खो मुणमुणा दोसा दस'' से है। क्रोध-मान-माया-लोभ के वशीभूत हो अतिशयोक्तिपूर्ण, चापलूसी भरे, दीन व विपरीत अप्रियकारी वचनों का वर्जन कर स्वाध्याय में रत रहेंगे, तो वचन शुद्धि बनी रह सकेगी। तन का संयम रोग से और वाणी का संयम कलह से बचाता है। संसार की समस्त वस्तुएँ बनने पर विनष्ट हो जाती हैं, किन्तु उत्तम जीवन एक बार बना लिया तो वह विनष्ट नहीं होता। इसके लिये शारीरिक और वाचिक संयम आवश्यक है। यदि इन दोनों पर संयम कर लिया तो मन आसानी से साधना की ओर उन्मुख हो जायेगा। मौन साधना, कम बोलना, आवश्यकता होने पर थोड़े शब्दों में नाप तोलकर शिष्टता के साथ भाव प्रकट करना ये सब वचन शुद्धि के सहायक कारण हैं। ज्यादा कार्य करने वाला हमेशा कम बोलने वाला ही होगा। आप भी परिमित एवं हितकारी सुभाषित वचनों का आश्रय लेकर दाक्षिण्य भावी बनें, ऐसी मंगल भावना है।

(3) कायशुद्धि- कायशुद्धि से तात्पर्य शारीरिक शुद्धि से नहीं, अपितु कायिक संयम से है। आसन विजय, दृष्टि विजय और मन विजय- ये तीनों प्रकार की साधनाएँ सामायिक में आवश्यक हैं। सामायिक में उचित व स्थिर आसन से बैठने से एकाग्रता का वर्धन होता है। उठने-बैठने, खड़े होने व हाथ पैर को अनावश्यक हिलाने-डुलाने जैसी प्रवृत्ति सामायिक के समय में नहीं हो। इसके लिए काया के 12 दोषों को टालने का खयाल रखना अपेक्षित है। बाह्य

आचरण ही आन्तरिक शुद्धि का दर्पण है। स्थानांगसूत्र के तृतीय ठाणा में प्रभु ने स्पष्ट कहा है-"मणसुप्पणिहाणे, वयसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे"- हर मनुष्य के पास मन-वचन और काया के सुप्रणिधान की तीन निधियाँ हैं- जो नवनिधियों की दाता हैं। फिर भी मानव अपनी क्षमता पर विश्वास नहीं कर रहा। तन योग से, मनोयोग से और वाणी योग से सामायिक की साधना की जाए तो अनन्त-अनन्त कर्म समाप्त हो सकते हैं। आप सब मात्र सुनकर ही नहीं रह जाएं, अपितु कुछ कर सकने का, आगे बढ़ने का भी संकल्प करें। सामायिक की साधना का चरम एवं परम लक्ष्य रखें। इससे मन भी अदण्ड बन जायेगा। वचन भी अदण्ड बन जायेगा और काया भी अदण्ड बन जायेगी।

सामायिक का मूल लक्ष्य विषय कषाय घटाकर समभाव की प्राप्ति है। ज्ञान पूर्वक समता भाव किसी वेश, क्षेत्र और समय में आ सकते हैं। यथा-भरत चक्रवर्ती को अनित्य भावना से आरिसा भवन में केवलज्ञान प्राप्त हो गया। इलायची कुमार को डोरी पर नाचते विकार भाव नष्ट होकर समता स्वभाव की प्राप्ति हो गई। घाणी पीले जाते हुए भी द्वेष-क्रोध का दावानल लगाने की बजाय पूर्ण समभाव की प्राप्ति हो गई। तात्पर्य यह है कि विशिष्ट भाव वाले साधकों के लिये द्रव्य, क्षेत्र और काल की बाहरी शुद्धि आवश्यक नहीं है। लेकिन सामान्य साधकों के लिये समता भाव की प्राप्ति हेतु भाव शुद्धि के लिये ही द्रव्य-क्षेत्र-काल की शुद्धि आवश्यक मानी गई है। कारण कि हर व्यक्ति स्थूलिभद्र की तरह वेश्या के आकर्षक आंगन रूप क्षेत्र, षट्रस भोजन रूप द्रव्य के मिलने पर शील रूप स्वभाव में स्थिर नहीं रह सकता है। उन्होंने समभाव की पूर्णता को, उसके शिखर को पा लिया था। यदि समभाव की प्राप्ति नहीं हुई हो तो व्यक्ति कितना ही तीव्र तप करे, जप करे, कितनी ही क्रिया पाले, मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। सामायिक के बिना न कभी मोक्ष हुआ है, न वर्तमान में हो रहा है और न ही भविष्य में होगा।

आप तो मन बदलने के लिये, कषायों को जीतने के लिये सामायिक साधना में रत रहने का अभीष्ट लक्ष्य रखिये। एक दिन मंजिल तक पहुँचने में अवश्य समर्थ होंगे....इन्हीं मंगल भावों के साथ।

■

भजन

हस्ती गुरुवर का क्या कहना

तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

(तर्ज : दुनियाँ में देव अनेकों हैं....... ।)

है जन्मशती जिनकी आई, हस्ती गुरुवर का क्या कहना।
निर्मल संयम का क्या कहना, पंडित मृत्यु का क्या कहना ।।
है जन्मशती........ ।

केवल रूपा के सितारे थे, बोहरा कुल के उजियारे थे।
ईस्वी उन्नीस सौ ग्यारह की, तेरह तारीख जनवरी महना ।।1 ।।
है जन्मशती........ ।

वैराग्य गर्भ में ही पाया, वय अष्टम निशि जल छिटकाया।
मुनिराज हरख के चरणों में, शिक्षण प्रारंभिक चित्त लहना ।। 2 ।।
है जन्मशती........ ।

दस फरवरी इक्कीस की आई, अजमेर शहर दीक्षा पाई।
शिल्पी उत्तम गुरु शोभा की, जयकार करे भाई बहना ।। 3 ।।
है जन्मशती........ ।

कंठस्थ बहुतेरे आगम, इतिहास ज्योतिष और भजन।
निर्युक्ति चूर्णि भाष्य सहित, अध्ययन कीन्हा अति ही गहना ।। 4 ।।
है जन्मशती........ ।

आठों सम्पद् गणि की पाई, आयु पन्द्रा अति पुण्याई।
पद लिख दिया दीरघ द्रष्टा ने, इक मई तीस चादर पहना ।। 5 ।।
है जन्मशती........ ।

सिद्धान्त धर्म की शालाएँ, स्वाध्याय सामायिक मालाएँ।
झगड़ा टंटा अरु द्वेष मिटा, निर्मल प्रीति गंगा बहना ।।7।।
है जन्मशती........ ।

समकित संयम तप भी उज्ज्वल, संथारा अद्भुत आतम बल।
अप्रेल गर्भ अप्रेल गमन, मुदिता अनंत की अब लहना ।। 8 ।।
है जन्मशती........ ।

आचार्य हस्ती जन्मशती

अमरत्व का वह उपासक (11)

आलेखन - श्री सम्पतराज चौधरी

श्रद्धेय मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के विशिष्ट गुणों का प्रशस्ति गान एवं उनके प्रति अपने अहोभाव चर्चा-वार्ता में समय-समय पर व्यक्त किये। गुरुदेव के जन्म-शताब्दी वर्ष में मुनि श्री के भावों का प्रस्तुतीकरण श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली नेअपने शब्दों में धारावाहिक रूप में किया है।

हे धरा के अमर सुत तुझे अशेष प्रणाम!

मुनिवर ,

गुरु हस्ती से आपका प्रेम तो अपूर्व है ही,
मेरे नयनों का नीर भी
गुरुदेव के चरणों में ढलक जाने के लिये
अधीर होकर बह रहा है,
मेरे अहं की बूंद उस सिंधु में मिलने को आतुर है,
उनके शाश्वत श्लोक मेरे अन्तर में भी ध्वनित हो रहे हैं।

पथिक,

मुझे गुरुदेव से अंतरंग प्रेम है और
वे मेरे परम श्रद्धेय भी हैं।
प्रेम स्वत्व का प्रिय में मिलन है तो
श्रद्धा एक आनन्दपूर्ण कृतज्ञता है।
मेरे देखे तो प्रेम और श्रद्धा का योग ही भक्ति है।
जो भक्त अपना जीवन
प्रेमी और श्रद्धेय के आश्रय से
परमार्थ में लगा देते हैं,

वे धन्य हो जाते हैं।
गुरुदेव का प्रेमभाव उत्कृष्ट था।
मैं उनके जैसे निष्कलंक विधु की छवि को
निहार-निहार कर अपने अन्तरमन में भरता रहूँ
ताकि उनकी रागिनी
मेरे जीवन निकुंज में सदैव बजती रहे।
क्या मैं कभी भी उनके उपकारों का ऋण चुका सकता हूँ?

हे गुरुदेव!
मेरी आँखें तो थी, पर दृष्टि तुमने दी।
मेरे कान तो थे, पर जिनवाणी श्रवण की प्रीति तुमने दी।
मेरा कंठ तो था, पर स्तुति का गान तुमने दिया।
मुझमें बुद्धि भी थी, पर ज्ञान तो तुमने ही दिया।
मेरे हृदय भी था, पर उसमें प्रेम तूने ही भरा।
मेरे मन भी था, पर उसको बोध का अमृत तूने ही दिया।

रूप, रस, वर्ण, गंध और स्पर्श
सबको मैं मेरा मानता था,
पर मैं क्या हूँ? यह नहीं जानता था।
तुमने मुझे मेरे अस्तित्व का बोध दिया,
उस बोध में मेरे प्रपंच मिटने लगे,
प्रकाश दिखने लगा,
तुम मेरे अस्तित्व दाता हो गये।
मेरे मन का बीज तेरे प्राणद रसायन से
अंकुर बनकर उग गया।
तुम्हें पाकर स्वयं को पाने की राह प्रशस्त हो गई।

मेरे प्राणों के अधिनायक!
तुमने पहले स्वयं को अनुशासित किया
फिर दूसरों को।

तुम्हारे अनुशासन से मैं भविष्य के खतरों से बच गया।
अतीत में किसी के उपालम्भ का निमित्त पाकर
कोई धन्ना सेठ धन्य हो गया था।
तेरे उपालम्भ से मैं भी धन्य हो गया,
इसलिये मुझे तेरी फटकार, तर्जना, रूठाई और उदासीनता भी अच्छी लगती है।
तुमने रास्ता ही नहीं दिया, उस पर चलने का बल भी दिया।
दीये के सान्निध्य की आवश्यकता इसलिये है ताकि
अंधेरा हम पर हावी न हो जाये।
तेरे सान्निध्य की भी आवश्यकता इसलिये है ताकि
मेरे बोध की चेतना कहीं गुम न हो जाये।
मेरा बोध जगा रहे,
मैं तेरी अमृतमयी वाणी सुनता रहूँ।

तुमने कहा जीवन सुख की साधना नहीं है,
वरन् स्वयं को पाने की साधना है,
इसलिये देह का दास मत होना।
देह का होकर के जीना तो देह का उपभोग होगा,
देह का उपयोग करना सीखना ताकि
जीवन उपयोगी हो सके।
यह भी कहा कि शरीर के लिये नहीं
शरीर के परे जीना सीखना।
जीवन को मथने से अमृत मिलेगा।

तुमने ही कहा था कि
समता सधी तो जीवन में सामायिक आ गई।
इसीलिये जीवनोत्थान के लिये
सामायिक तुम्हारा उद्घोष बन गया।
सामायिक प्राप्त करने के लिये
स्वाध्याय का तुमने साधन दिया, क्योंकि

स्वाध्याय ही सब भावों का प्रकाश करने वाला होता है।
स्वाध्याय ही ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयकर
मुक्ति का पथ प्रशस्त करता है।
तुमने कहा था
स्वाध्याय के समान दूसरा
न तप हुआ है, न कोई है और न कोई होगा।
पर साथ में तुमने यह भी कहा था कि
व्रत नियम धारण करने और
तप-शील का आचरण करने पर भी
जो आत्म-बोध से शून्य है,
उसे निर्वाण नहीं मिल सकता।

हे आत्मजयी!
तेरी वाणी से मुझमें प्राणों का संचार होता है।
तेरे दर्शन से दरिद्रता दूर होती है।
तेरे स्पर्श से विकार विलीन होते हैं।
तेरे सामीप्य से शांति और सद्भावों की सौरभ मिलती है।
तेरे नाम स्मरण में प्रेम, दया, अनुकम्पा, क्षमादि
गुणों का अक्षय कोश मिलता है।
हे पुरिसवरगंधहत्थी!
तुम साधना के एक ऐसे महावृक्ष थे
जिसका मूल वैराग्य था,
जिसका स्तम्भ श्रद्धा थी,
तुम ज्ञान के जल से उसका सिंचन करते थे,
जिसमें चारित्र की शाखाएँ फैलती थी,
प्रेम के पात लगते थे और
शुभ भावों के फूल खिलते थे।
भक्तजन ऐसे वृक्ष की घनी छाया में
शीतलता प्राप्त कर

शुभभावों की गन्ध लेते थे और
बोधि के फल खाते थे।

हे समत्वयोगी!
संसार में रहते हुए भी
तुम संसार से निर्लिप्त थे।
जैसे पनिहारिन चलती हुई।
सहेलियों से बातें करती है,
पथ की बाधाओं से टलती है,
फिर भी उसका ध्यान तो सिर पर रखे
जल से भरे घड़े पर ही रहता है
वैसे ही तुम दूसरों का हित संपादन करते,
तन की रक्षा भी करते,
परन्तु तुम्हारा ध्यान तो सदैव आत्मा में ही केन्द्रित रहता,
यहाँ तक कि तुम
आचार्य पद का दायित्व भी निर्जरा के लिये ही निभाते थे।
तुम आत्म समाधिस्थ थे,
सुख से विरक्त, दुःख में समान।

तुझे देख-देख कर मैंने भी
ऊँचे आदर्श संजोये हैं पर
अभी तक ध्येय से बहुत दूर हूँ, पर
जब बैठ कल्पना करता हूँ,
पद-चाप तुम्हारी मग से आती।
रग-रग में चेतनता घुलकर,
आँसू के कण-सी झरझाती।।
तुम्हारी साधना का पराग विकीर्ण हो रहा है
लगता है तुम सदैव मेरे साथ हो
अतः मंजिल नहीं मिलने का भय भी नहीं है।

हे गुरुदेव!

विद्वान का बल बुद्धि है,
नारी का बल शील है,
पुरुष का बल पुरुषार्थ है,
वीरों का बल साहस है
लेकिन मेरा बल तो तेरी कृपा ही है
जब तुमने मुझ पर वरद हस्त रखा
तो मानो मुझे जीवन का उत्कर्ष मिल गया
जब तुमने शिक्षा दी तो
मुझे उसमें जीवन का निष्कर्ष मिल गया
तुमने मुझे जो संस्कार दिये
वे मेरे लिये अमित उपहार हो गये।
मैं उन संस्कारों में ऐसे जी सकूं कि
मेरा जीवन आपके लिये उपहार हो जाए।

हे मुनि पुंगव!

श्रेष्ठ पुरुष अपने गुणों को वाणी से प्रकट नहीं करते
किन्तु सच्चरित्र से ही प्रकट करते हैं
तुम्हारे गुण तुम्हारे चरित्र से ही अभिव्यंजित हो रहे हैं।
मेरे शून्य चितवन में तेरी मौन गाथा बस गई है।

मुनिवर,

काश, मैं भी गुरुदेव की साधकता को
छू लेता, उनका अमृतमय स्पर्श पा लेता।

पथिक,

गुरुदेव को स्मृति में रखना ही
उनकी साधकता को छूना है, उन्हें पाना है।
जो अपने भीतर दिव्य ज्योति जगाने को
तड़प रहा हो उसे प्रार्थना का आसरा लेना चाहिए।
प्रार्थना में शब्दहीन हृदय भले ही हो

हृदयहीन शब्द नहीं होने चाहिए।
उसमें आत्मा की व्याकुलता की अभिव्यक्ति हो।

मुनिवर,
उनके नाम स्मरण का मुझे भी आसरा है
पर गुरुदेव की दृष्टि को पाने के लिये
मुनिवर, तनिक आप ही बता दीजिये
मैं उन्हें क्या निवेदन करूँ?

पथिक,
सूर्य गगन में रहता है परन्तु प्रेम के कारण
नीचे पृथ्वी पर केवल उसके प्रकाश से ही
कमलिनी विकसित होती है।
समस्त संकल्प-विकल्पों से रहित हो
प्रेमपूर्वक समर्पण करलो और
मेरे मन के सुमनों की माला
तुम भी पिरोना शुरू कर दो-

हे, प्रियतम!
मैं अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य,
निःसंगता, तप, ज्ञान और गुरु भक्ति के
आठ पुष्प लेकर तेरी पूजा में आकर
अपना मानस तुम्हें भेंट करता हूँ।
तुम्हारे अगणित ऋण हैं मुझ पर
एक ऋण और बढ़ा लेता हूँ तुझसे निवेदन करके।
हे ज्योति पुरुष!
तेरा प्रकाश पाने मेरी अन्तर्दृष्टि
सदैव खुली रहे।
तेरे चरणों की पदचाप मुझे सदा जगाती रहे।

तेरे हाथ मेरे संयम की रक्षा करते रहें।
तेरे वात्सल्य से छलछलाती आँखें
मेरे मानस को सदा आर्द्र करती रहे।
मुझमें समृद्धि के साथ सहिष्णुता रहे।
विपत्ति में कृतज्ञता रहे।
वाणी में संयम रहे।
आचार में विवेक रहे।

तेरी आस्था में मैं अधिक आस्तिक बनूँ,
आस्तिकता में अधिक धार्मिक बनूँ,
धार्मिकता में अधिक उदार बनूँ और
उदारता में अधिक समतावान बनूँ।

जो अंधेरे में हैं, उनके लिये चिराग बनूँ,
नेत्रहीनों के लिये दृष्टि बनूँ,
भूले-भटकों के लिये पथ प्रदर्शक बनूँ,
सौरभ बनकर प्रेम और मैत्री का संचार करूँ एवं
मानवता के तरू का फल बनूँ।

परन्तु यदि
साधना -पथ से विचलित हो जाऊँ तो
तेरी तर्जना मुझे सुनाई दे,
मेरा विवेक साथ न दे तो
तेरा उपालम्भ मुझे मिलता रहे,
मैं अनुशासन की अवहेलना करूँ तो
तू मुझसे रूठा रहे,
मैं अपेक्षाओं के घेरे में आ जाऊँ तो
मेरी बाँह पकड़ कर मुझे उस घेरे से बाहर कर देना,
मेरी करुणा का जल सूखने लगे तो

प्रेम पयोधि बरसाकर उसे भर देना,
मेरी दृष्टि मलिन हो जाये तो
प्रकाश पुंज बनकर मेरे पथ में चले आना।

मुनिवर,
तुमने इस अर्चना में
गुरु शिष्य की परम्परा को गौरव दे दिया है।
कहते हैं कि
जब शिष्य गुरु चरणों में शीश झुकाता है,
तब गुरु स्वयं आकर उसके लिये ज्ञान का दीप जलाता है।
जब शिष्य भाव भरे शब्दों से गुरु को रिझाता है,
तब गुरु स्वयं आकर उसे गले लगाता है।
जब शिष्य गुरु चरणों में समर्पित होता है,
तब गुरु स्वयं आकर उसे गोदी में बिठाता है।
जब शिष्य श्रद्धा के पुष्प अर्पित करता है,
तब तो स्वयं देव आकर उसका अभिषेक करते हैं।

अतः हे मुनिवर, मैं भी अपने बिखरे भावों का
अटपटा हार गूँथ कर उन्हें पहनाना चाहता हूँ पर
कैसे करूँ कीर्तन, मेरे स्वर में है माधुर्य नहीं।
मन को भाव प्रकट करने को, वाणी का चातुर्य नहीं।।

हे मुनिवर,
जहाँ हृदय के तार बोले,
शृंखला के द्वार खोले,
अर्चना के रत्नकण में
एक कण मेरा मिलालो,
वंदना के इन स्वरों में
एक स्वर मेरा मिलालो।

हे वीतराग-कल्प!
हमारे भावों की बहुलता है

पर शब्दों की सीमा है।

'हरि अनन्त, हरि कथा अनन्ता' की तरह

तेरी कथा भी अनन्त है,

तेरे गुण भी अनन्त हैं।

स्वस्ति जीवन के पुजारी!

स्वस्ति सत्-चित्-पंथचारी!

स्वस्ति यह सुधि पा जिसे।

हमने विरह का भार झेला,

यह तुम्हारे कूच से विदा बेला!

यह हमारे अश्रु से सिंचित बिदा बेला!

हे धरा के अमर सुत!

तुझे अशेष प्रणाम! (समाप्त)

आवश्यक सूचना

जिनवाणी का दिसम्बर-2010 एवं जनवरी 2011 का संयुक्त अङ्क 'गुरु गरिमा और श्रमण-जीवन' विशेषाङ्क के रूप में प्रकाशनाधीन है। जो श्रद्धालु श्रावक-श्राविका अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन देना चाहते हैं, वे 30 नवम्बर 2010 तक सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल कार्यालय, जयपुर को अपने विज्ञापन प्रेषित करें। विज्ञापन की दरें निम्न प्रकार हैं- फोर कलर फुल पेज अन्दर रुपये 11,000/-, हॉफ पेज फोर कलर रुपये 6,000/-, ब्लैक एण्ड व्हाइट फुल पेज रुपये 8,000/-, हॉफ पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट रुपये 4,000/- है। सभी सुज्ञ सुश्रावकों से निवेदन है कि अपने-अपने प्रतिष्ठानों के विज्ञापनों में प्रकाशित होने वाली सामग्री मय विज्ञापन शुल्क के (डी.डी./नकद/चैक आदि) 'जिनवाणी' के नाम से दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाज़ार, जयपुर-302003 (राजस्थान) फोन नं. 0141-2575997, 2571163, फैक्स 0141-2570753 Email : jinvani@yahoo.co.in, sgpmandal@yahoo.in के पते पर भिजवाने की कृपा करावें।

-विरदराज सुराणा-मन्त्री,

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)

चिन्तन

जैन धर्म की हिन्दू धर्म से पृथक्ता

डॉ. अनेकान्त कुमार जैन

इस दुनिया में अनेक धर्म हुए हैं, आज भी हैं। सभी धर्मों की अपनी एक अलग पहचान और मौलिकता होती है। समाज में आज भी अनेक धर्मानुयायी एक साथ रहते हैं। प्राचीनकाल से ही वे एक दूसरे की अच्छाइयों तथा बुराइयों से प्रभावित होते रहे हैं। हजारों-लाखों सालों में अनेक परिस्थितियाँ ऐसी भी बनी हैं जब बलात् कई रीति-रिवाज, अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए हर धर्म ने अपनाये और सतत उन्हें पालते-पालते वे उसके मूल अंग में शामिल हो गये। इस आदान-प्रदान के कारण कालान्तर में यह पता लगाना कठिन हो गया कि मूल क्या है ? वर्तमान में भी इतिहास का प्रचार तथ्यों की अपेक्षा बहुमत और बाहुबल पर ज्यादा केन्द्रित है। भारत में ही बहुत लोग ऐसे हैं जो आज भी जैनधर्म को महावीर द्वारा वैदिक कर्मकाण्ड के विरोध में चलाया गया आन्दोलन मात्र मानते हैं। इस तरह वे महावीर को मात्र दयानन्द और विवेकानन्द जैसा समाज सुधारक ही मानते हैं। जिनकी उत्पत्ति वैदिक परम्परा से हुई है। अजैन ही नहीं कई जैन भी जानकारी के अभाव में यही मानते हैं। इसके लिए हमें कुछ बातें अवश्य जाननी चाहिए और अपने अजैन मित्रों को भी समझानी चाहिए।

कौन हैं जैन ?

समस्त इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के बाद प्रथम जिन तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) ने मनुष्यों को सुखी करने के लिए जिस धर्म को इस कर्मभूमि पर आज से लाखों वर्ष पहले पुनः स्थापित किया वह धर्म ही - 'जैन धर्म' कहलाता है। जो जिनेन्द्र की उपासना करते हैं; उनके बनाये हुये रास्ते पर चलने का प्रयास करते हैं वे जिनेन्द्र के अनुयायी 'जैन' कहलाते हैं। यह जैनधर्म सदा काल से भारत का मूल धर्म रहा है। इसीलिए इन पर न ही बाहर से भारत में आने का आरोप है और न ही बौद्धों की तरह भारत से बाहर जाकर फैल जाने का। अहिंसा, त्याग, तपस्या, संयम का पालन करने वाला आध्यात्मिक जैनधर्म सदाकाल से भारत में ही उत्पन्न होकर रहा और यहीं का होकर रह गया। आचार,

विचार और आध्यात्मिक धर्म की कीमत पर देश-विदेश में प्रचार-प्रसार जैनों को कभी प्रिय नहीं रहा। यही कारण है कि जैन जितने प्राचीन हैं आज संख्या में उतने ही कम हैं।

जैन जाति नहीं धर्म है

सामान्यतः लोग 'जैन' को जातिवाचक संज्ञा समझ लेते हैं और वर्तमान में मात्र जैन लोगों को ही जैनधर्म का अनुयायी मान लेते हैं। किन्तु वस्तुतः 'जैन' एक धर्म है, जाति नहीं। इसका जाति से कोई सम्बन्ध नहीं है। किसी भी जाति का मानव जैन धर्म का पालन कर सकता है। किन्तु अब तक के इतिहास में किसी को जबरन जैन धर्मानुयायी नहीं बनाया गया और न इस तरह के विश्वास को पनपने दिया गया। यहाँ जाति से तात्पर्य मात्र ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र से नहीं है, बल्कि मनुष्यों के अलावा पशुओं से भी है। तीर्थंकरों के समवशरण (उपदेश सभा) में सभी जाति के मनुष्य तो आते ही थे, साथ ही पशु-पक्षियों के बैठने की भी व्यवस्था थी। सभी संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव जैन धर्म को मान सकते हैं तथा पालन कर सकते हैं। इसी प्रकार मनुष्यों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र सभी जैन धर्म की आचार संहिताओं का पालन करके जैन बन सकते हैं।

जैन धर्म के सभी तीर्थंकर क्षत्रिय जाति के थे। भगवान महावीर के प्रमुख शिष्य गौतम तथा अन्य दस गणधर ब्राह्मण जाति के थे। गौतम गणधर ने भी दीक्षा लेकर केवलज्ञान प्राप्त किया था।

जैन धर्म के अनुसार सभी आत्माएँ समान हैं तथा प्रत्येक आत्मा स्वपुरुषार्थ द्वारा भक्त से भगवान परमात्मा बन सकता है। इस प्रकार इस संसार में सभी लोग चाहे वे किसी भी जाति के हों जैन धर्म का पालन कर सकते हैं। जो लोग जैन धर्म को वैश्यों का धर्म मानते हैं या बतलाते हैं, वे वास्तव में अपनी अल्पज्ञता का ही परिचय देते हैं। यहाँ इस तथ्य के लिए कुछ शास्त्रीय उदाहरण देना भी जरूरी है; क्योंकि रूढ़ि तथा अंधविश्वास को प्रश्रय देने वाले कुछ भाइयों को हो सकता है यह बात समझ में न आये। पूजासार नामक ग्रन्थ में श्लोक 17 में लिखा है -

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वाऽऽद्यः सुशीलवान्।
दृढव्रतो दृढाचारः सत्यशौचसमन्वितः।।

इस श्लोक के अनुसार यदि व्रतों में दृढ़ हो, आचार में शुद्ध हो, सत्य-

शौच धर्म आदि से युक्त हो और सुशील हो तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र कोई भी जिनेन्द्र देव का उपासक हो सकता है।

श्री सोमदेव आचार्य ने अपने नीतिवाक्यामृत में कहा है कि आसन-बर्तन इत्यादि जिसके शुद्ध हों, मांस-मदिरा आदि के त्याग से जिसका आचरण पवित्र हो और जिसका शरीर शुद्ध हो, ऐसा शूद्र भी ब्राह्मणादि के समान श्रावक धर्म का पालन करने के योग्य है -

आचाराऽनवद्यत्वं शुचिरुपस्कारः शरीरशुद्धिश्च करोति शूद्रानपि देवद्विजातितपस्विपरिकर्मसु योग्यान्।

सोमसेन के त्रैवर्णिकाचार में इसी संदर्भ में कहा गया है कि जैन धर्म का पालन करने में ये चारों वर्ण भाई भाई के समान हैं।

विप्रक्षत्रियविट्शूद्राः प्रोक्ताः क्रियाविशेषतः।
जैनधर्मे पराःशक्तास्ते सर्वे बान्धवोपमाः।। (7.142)

इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया कि जैन धर्म में मूलतः जातिवाद का कोई स्थान नहीं है। यह एक आध्यात्मिक धर्म है तथा वे सभी जो स्वयं को शुद्धता तथा सच्चे सुख के मार्ग पर लगाना चाहते हैं जैन धर्म का पालन कर जैन बन सकते हैं। उन्हें अपनी जाति को लेकर चिन्तित होने की जरूरत नहीं है।

जैन धर्म और हिन्दू

बहुत से लोग आज भी जैन धर्म को हिन्दू धर्म की एक शाखा बतलाकर उसको हिन्दूधर्म के अन्तर्गत ही गिन लेते हैं। जबकि स्थिति ऐसी नहीं है। हिन्दूत्व, हिन्दू धर्म, हिन्दूजाति और हिन्दू संस्कृति इन सभी संज्ञाओं तथा इनकी परिभाषाओं में काफी मतभेद हैं।

सिन्धु शब्द से हिन्दू शब्द बना है। 'स' को 'ह' का उच्चारण करने वालों ने ऐसा किया। अतः हिन्दू शब्द एक सभ्यता और एक संस्कृति का सूचक है, ज़िसके आधार पर हिन्दुस्तान नाम भी पड़ा और भाषा का नाम भी 'हिन्दी' आया। इस आधार पर हिन्द देश की सभी सभ्यताएँ हिन्दू ही हैं। जैन धर्म हिन्द देश का मूल धर्म रहा है; इसके अनुयायियों ने इसी संस्कृति को हमेशा संरक्षण दिया, पाला और बढ़ाया। इसी संस्कृति का नाम हिन्दू संस्कृति पड़ गया। अतः निश्चित रूप से जैन संस्कृति हिन्दू संस्कृति ही है।

अब प्रश्न है हिन्दू धर्म, जाति और हिन्दुत्व का। भारत में प्राचीन काल से दो धाराएँ एक साथ बह रही हैं- एक श्रमण और दूसरी वैदिक। पहले श्रमण में सिर्फ जैन ही आते थे। बाद में बौद्ध धर्म को भी श्रमणों में सम्मिलित मान लिया गया। बहुत पहले तक हिन्दू धर्म कोई पृथक् धर्म नहीं था। धर्म थे - वैदिक, वैष्णव, शैव, शाक्त, बौद्ध, जैन इत्यादि। कालान्तर में कुछ कट्टरपंथियों ने हिन्दूधर्म का अर्थ किया वैदिक। अब हिन्दू एक संस्कृति होने के साथ-साथ एक धर्म, एक दर्शन, एक जाति भी कही जाने लगी। इस प्रकार वैदिक परम्परा को न मानने के कारण जैन और बौद्ध दोनों ही अवैदिक अर्थात् अ-हिन्दू धर्म माने गये।

कालान्तर में कुछ राजनैतिक संगठनों ने धर्म की स्वार्थपूर्ण व्याख्याएँ कीं और मुसलमानों के विरोध में हिन्दुओं की संख्या बढ़ाने के लिए जैन और बौद्ध को भी इसी में गर्भित करने की रणनीति बनायी। इस समुदाय में सिक्ख धर्म भी शामिल किया गया। व्याख्या यह की गयी कि भारत में ईसाई और मुसलमानों के अलावा सभी हिन्दू हैं।

कुछ जैनों को यह परिभाषा अच्छी लगी, क्योंकि प्राचीन परम्परा जो हिन्दू को एक संस्कृति के रूप में मानती थी- ऐसी ही थी। किन्तु बाद में जब इस छद्म समन्वय में अन्य धर्मों के मूलस्वरूप के विलय की गंध आने लगी और समन्वय इस तर्क पर किया गया कि जैन एवं बौद्ध धर्म भी वैदिक धर्म से ही निकली हुई शाखाएँ हैं, इसलिए हिन्दू हैं तब अन्य भारतीय धर्मों को होश आया और उन्होंने विवश होकर यह कहा कि वे हिन्दू नहीं हैं।

इस प्रकार जिस हिन्दू धर्म, जाति एवं हिन्दुत्व की राजनैतिक छद्म परिभाषा आज के युग में चल रही है उस दृष्टि से जैन निश्चित रूप से हिन्दू नहीं है।

वर्तमान में जैनधर्म और समाज

जैन धर्म एक विशुद्ध महान आध्यात्मिक धर्म है। इस शाश्वत आत्मधर्म का सम्बन्ध किसी एक जाति से कभी नहीं रहा। सभी जाति व वर्ग के जीवों ने इस धर्म का पालन कर आत्महित किया है। वैसे भी कोई धर्म यदि किसी जाति विशेष से सम्बद्ध होकर रहे तो वह ज्यादा दिन टिक नहीं सकता। जैन धर्म इस पृथ्वी पर अनादि काल से रहा है और अनन्त काल तक रहेगा। यह जरूर है कि समय के उतार-चढ़ाव में जैनधर्म की हानि भी बहुत हुई, किन्तु ऐसा भी

काल रहा जब जैनधर्म की पताका फहराया करती थी। कैसा भी समय रहा हो, कैसी भी परिस्थितियाँ रहीं हों, जैनधर्म की तथा जैनाचार्यों की यह विशेषता रही है कि उन्होंने कभी भी अपने मूल-सिद्धान्तों तथा शुद्धाचरण के साथ समझौता नहीं किया।

विश्वशान्ति के लिए कैसा जीवन जीना चाहिए, इसका साक्षात् उदाहरण जैन समुदाय है। जैन धर्म के अनुयायियों ने अपनी मांगों को लेकर, अपने अधिकारों के लिए कभी भी कोई हिंसक आन्दोलन नहीं किये जिससे समाज या राष्ट्र की शान्ति भंग हुई हो या हानि पहुँची हो। उन्होंने सदा अपनी बात को विनम्र तथा गरिमापूर्ण तरीके से रखा है। अधिकार न मिलने पर भी धैर्य रखा है न कि इसकी खातिर हथियार उठाकर बेगुनाहों के कत्ले आम किये हैं। जबकि ऐसी घटनाओं से अधिकांश अन्य धार्मिक सम्प्रदायों के इतिहास भरे पड़े हैं।

जैनधर्म की नीति पूरे विश्व के लिए प्रेरणास्रोत रही है। मुगल काल में अनेक जैन मन्दिरों तथा मूर्तियों को भी तोड़ा गया। देश में आज भी कई हिन्दू तीर्थ ऐसे हैं जो मूलतः जैनों के थे। आज भी कितने ही स्थानों पर अधिकारों का हनन हो जाता है, किन्तु जैन उसके लिए अहिंसक आन्दोलन ही करते हैं। कहीं कोई मौन जुलूस निकालता है; कहीं कोई उपवास करता है; कहीं कोई विरोध पत्र भेजता है; कहीं शिष्ट मण्डल अपनी बात लेकर प्रधानमन्त्री या अन्य सम्बन्धित मंत्रियों से मिलता है। अपने निहित स्वार्थों के लिए जैनों ने आवेश या आवेग में आकर राष्ट्र की शान्ति भंग करने का कभी प्रयास नहीं किया।

आज के इस युग में जहाँ बात-बात पर पूरे खानदान को गोलियों से भून दिया जाता हो; दूसरे सम्प्रदाय से विद्वेष के कारण उनकी बस्तियों में दंगे करवाये जाते हों; धार्मिक कट्टरता से प्रेरित होकर लाखों बेगुनाहों की जान ले ली जाती हो; जीभ के स्वाद के लिए हजारों-लाखों पशु-पक्षी प्रतिदिन मौत की घाट उतारे जाते हों ऐसे माहौल में जैनधर्म तथा समुदाय एक आदर्श है जो तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद आज भी इन सभी बातों से कोसों दूर है। उसे अपने अस्तित्व की कीमत पर भी राष्ट्र और जनता का अहित मंजूर नहीं है।

इसके विपरीत राष्ट्र, समाज, जनता तथा पशुपक्षियों तक की सेवा के लिए जैनधर्म तथा समाज सदैव समर्पित रहा है। आजादी के आन्दोलन में राष्ट्र के

लिए न जाने कितने जैनों ने कारावास भोगा, अपने प्राण न्यौछावर कर दिये, क्रान्तिकारियों को आर्थिक सहयोग के लिए तिजोरियाँ खोल दीं और प्रतिदान में यह भी अपेक्षा नहीं की कि मेरा नाम अखबारों में आये; शायद यही कारण है कि उनका नाम भी बहुत कम लोग जानते हैं। जैन समाज ने हजारों अस्पताल पूरे देश में बनवाये जहाँ गरीबों का निःशुल्क इलाज चलता है। हजारों विद्यालय-महाविद्यालय पूरे देश में सिर्फ इसीलिए बनाये ताकि राष्ट्र का भविष्य अनपढ़ न रहे। जैनों ने पशुपक्षियों के लिए अस्पताल तथा गोशालाएँ भी सिर्फ जीव रक्षा के प्रधान उद्देश्य से बनवायीं। आज भी दिगम्बर तथा श्वेताम्बर जैन मुनि पूरे भारत में नंगे पैर पैदल भ्रमण करते हैं तथा अहिंसा, दया, मैत्री, करुणा,शाकाहार, शांति का सन्देश गांव-गांव में, नगर-नगर में फैलाते हैं। जनता को शुद्ध अहिंसक जीवन शैली, राष्ट्रभक्ति तथा नैतिकता का प्रशिक्षण भी देते हैं।

इन सभी सद्-संस्कारों के पीछे जैन धर्म के सभी तीर्थंकरों की वे महान् शिक्षाएँ हैं जो आज भी किसी न किसी रूप में पालन की जा रही हैं। तीर्थंकरों ने कोरा उपदेश ही नहीं दिया, बल्कि आचरण में लाकर प्रेरणा दी जो एक सही गुरु का कर्त्तव्य होता है। आज भी लाखों की संख्या में तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ खड्गासन या पद्मासन मुद्रा में परम वीतराग योगी स्वरूप ही मिलती हैं। कभी कोई हथियार लिये; किसी पशु पर सवार, या फिर पत्नी को साथ में लिये हुए तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ कहीं नहीं मिलेंगी। जैन जिनकी पूजा अर्चना करते हैं उन्हें हमेशा शान्त, अहिंसक तथा आध्यात्मिक ध्यान शुद्धोपयोग अवस्था में पाते हैं और यही संस्कार वे स्वयं में लाने और वैसा जीवन जीने का प्रयास करते हैं।

जैन धर्म के इतिहास में ऐसा एक भी उदाहरण नहीं है कि किसी को बलात् जैन बनाया गया हो अथवा दीक्षित किया गया हो। यह सदा से स्वेच्छा और स्वतंत्रता के सिद्धान्त वाला धर्म रहा है आज तक ऐसे सभी लोग जो जन्म से जैन नहीं थे, किन्तु इसके सिद्धान्तों तथा आचरण से प्रभावित होकर जैन बने हैं और स्वयं के जीवन में उसका पालन कर रहे हैं, वे सभी स्वयं ही प्रभावित हुए हैं। कई ब्राह्मण विद्वान् आरम्भ में वैदिक रहे, किन्तु बाद में स्वयं ही जैनधर्म में दीक्षित होकर कठोर साधना की और जैनधर्म-दर्शन विषयक अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया। आज भी कई जैन मुनि जाति से ब्राह्मण हैं। जैनधर्म सभी ने

अपनाया और उसका पालन किया। जैन धर्म के नियम बहुत वैज्ञानिक हैं, किन्तु बहुत ज्यादा आसान नहीं हैं तथापि जन्म से जैन कहे जाने वाले लोगों को भी वे नियम मानने के लिए मजबूर नहीं किया जाता; हाँ! अभ्यास हेतु प्रेरणा अवश्य दी जाती है और इसका परिणाम यह है कि अधिकांश लोग उसका पालन कर रहे हैं।

जैन बनने का अर्थ धर्म-परिवर्तन नहीं है। हम जहाँ हैं जैसे भी हैं उसी स्थान पर रहकर जैन जीवन शैली अपनाकर और सिद्धान्तों का अध्ययन कर जैन बन सकते हैं। इसके लिए जरूरी नहीं कि नाम के आगे भी 'जैन' लगाया ही जाय। शुद्ध जीवन शैली और अपनी शान्त चित्त आत्मा की अनुभूति किसे पसन्द नहीं? जैन धर्म बस इसका रास्ता बताता है। जो यह चाहे वह जैन हो जाये। कभी-कभी जन्म से जैन कहे जाने वाले लोग भी दुर्भाग्य से जैन धर्म का पालन नहीं कर पाते हैं तब उन्हें भी मात्र जन्मना जैन माना जाता है, कर्मणा नहीं।

हमेशा की तरह आज भी भारत वर्ष में जैन धर्म एक स्वतंत्र धर्म है। जैन समाज एक स्वतंत्र समाज है। उनके स्वतंत्र मन्दिर, स्वतंत्र आगम-शास्त्र, स्वतंत्र पूजापद्धति, तथा स्वतंत्र जीवन शैली एवं मान्यताएँ हैं। शुद्ध खान-पान विशुद्ध शाकाहार पर विश्वास करने वाली, संयम और तप में आस्था वाली, मारकाट-दंगों-साम्प्रदायिक हिंसा और भ्रष्टाचार आदि बुराइयों से दूर, शान्तिप्रिय, शिक्षित तथा सभ्य जैन समाज इस देश में मानवीय मूल्यों की खुलकर होती त्रासदी तथा अंधविश्वासों के बीच एक प्रकाशपुंज है जो भविष्य को सही रास्ता दिखा रही है।

सहायक आचार्य, जैन दर्शन विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्रि राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
मानित विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110016
anekant76@yahoo.co.in

अध्यात्म

मैं कौन हूँ

श्री रणजीत सिंह कूमट (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)

प्रसिद्ध संत बुल्लेशाह का गाना है:--

'बुल्ला कि जाणे मैं कौण'

बुल्लेशाह पूछता है 'मैं कौन हूँ' और जवाब देता है 'बुल्ला क्या जाणे'? अर्थात् नहीं जानता। हम सब भी नहीं जानते, परन्तु यह प्रश्न कितने लोगों के मन में उठता है? उठ भी जाये तो कौन खोज में लगता है। खोज भी आसान नहीं है, इसलिए खोजने की कोशिश ही नहीं करते।

मैं कौन हूँ? यह सनातन प्रश्न है। हर फकीर, पैगम्बर, तीर्थंकर ने यही सवाल पूछा 'मैं कौन हूँ?' सबने अपने-अपने जवाब दिए। किसी ने कहा मैं आत्मा हूँ, किसी ने कहा परमात्मा हूँ, किसी ने कहा चैतन्य हूँ। ये उत्तर हमारे लिए बौद्धिक स्तर तक सीमित हो जाते हैं, अनुभूतिपरक नहीं हैं, क्योंकि हमने अनुभूति नहीं की है। जब तक अनुभूति नहीं होती यह चर्चा, वार्ता बुद्धिविलास ही रहती है।

हम अपनी बोलचाल की भाषा पर ध्यान दें तो पायेंगे कि 'मैं' शब्द हमारे हर वाक्य या हर दूसरे या तीसरे वाक्य में प्रधान रूप से आता है। यह इस बात का द्योतक है कि हम अपने आपको सबसे अधिक महत्त्व देते हैं, अपना वर्चस्व बनाए रखना चाहते हैं। मैं ही प्रधान है और सब जगह इसे प्रधान रखना चाहते हैं। हमारे खिलाफ कोई भी कुछ कहे 'मैं' को गहरी चोट लगती है। तत्काल क्रोध, घृणा व संघर्ष उत्पन्न होते हैं। अपनी मूरत जो अपने मन में बनाई है उसे ही हम 'मैं' मानते हैं और उसे जरा भी ठेस नहीं लगनी चाहिए। ठेस से आहत हो जाते हैं, तिलमिलाकर प्रतिक्रिया करते हैं, दुःखी होते हैं और दूसरों को भी दुःखी करते हैं।

'मैं' से अहम् का निर्माण होता है जो चित्त (संस्कार), बुद्धि (ज्ञान व इच्छा), अहंकार (मूरत, स्वप्न और लक्ष्य) से निर्मित होता है जिसे अंग्रेजी में इगो (ego) कहते हैं। इसे कितना ही बड़ा बना सकते हैं और जितना बड़ा अहम् उतना ही संघर्ष उत्पन्न होता है। मानसिक संघर्ष ही बाद में आक्रमण, युद्ध और शोषण का रूप लेता है। व्यक्तिगत अहम् सामाजिक, राष्ट्रीय, एवं अंतरराष्ट्रीय संघर्ष का रूप ले लेता है।

मैं की जब बात करते हैं तो हम अपने आपको शारीरिक रूप से देखते हैं- मैं सुन्दर हूँ, मेरा शरीर सुगठित है, बलशाली है आदि। मानसिक स्तर पर देखते हैं, तो पहचान बनाते हैं कि मैं बुद्धिमान हूँ, शास्त्रों या अनेक विषयों का प्रकांड पंडित हूँ। सामाजिक स्तर पर देखते हैं तो पहचान बनाते हैं कि मैं धनी हूँ, राजा हूँ, मंत्री हूँ, पदाधिकारी हूँ आदि। पारिवारिक रूप से देखते हैं तो पहचान बनाते हैं कि पिता या माता हूँ, बड़ा भाई या बड़ी बहन, पति या पत्नी, सास या बहू और इन्हीं पदों के अनुरूप अपने हक़ या कर्त्तव्य का इज़हार करते हैं। ऐसे कई रूपों से अपनी पहचान बना कर अहम् का निर्माण व पुष्टिकरण करते हैं।

उपर्युक्त 'मैं' या अहम् की चर्चा में मैं का जो ऊपरी रूप है वह अस्थायी तथा अनित्य है। रूप, पद, यौवन एवं पद बदलते रहते हैं। यौवन बुढ़ापे में ढलता है, स्वस्थता अस्वस्थता में बदलती है। धन व पद भी बदलते हैं। अनित्य व अस्थायी रूप के आधार पर पहचान तय नहीं कर सकते। स्थायी आधार क्या है?

यह तो अनुभूत किया जा सकता है कि यह शरीर 'मैं' नहीं है। शरीर ही यदि 'मैं' है तो शरीर प्राण-विहीन होने पर 'मैं' कहाँ जाता है? शरीर स्वतः काम नहीं करता। उसमें चेतन तत्त्व शरीर का संचालक है। यह चेतन तत्त्व ही 'मैं' हो सकता है। पर यह तत्त्व है कहाँ? कैसे अनुभूत करें?

स्व- बोध होने पर ही अपने सही रूप या चेतन तत्त्व के बारे में जान पायेंगे। स्व को पहचान कर स्व में अवस्थित होने पर स्व का ज्ञान हो जाएगा। इसके लिए बाहरी आकर्षणों से विमुख हो अंतर्मुखी बनना होगा, वासना एवं इच्छाओं पर नियंत्रण कर अंतर्मुखी होने पर अंतर की आवाज सुनाई देती है, अन्दर की आज्ञा या हुक्म प्रकट होता है। यही हमारा अंतर का विवेक है जिसका अनुसरण सही ज्ञान का अनुसरण है।

इसके लिए खोज करने या तलाश करने की जरुरत नहीं है। केवल द्रष्टा भाव में आने की जरुरत है। जैसे नदी के बहाव को देखते हैं वैसे मन के भावों को देखना चाहिए। उसमें कर्त्ता भाव नहीं हो, केवल द्रष्टा भाव होना चाहिए।

जब तक यह पूछोगे 'मैं कौन हूँ?' 'मैं' को नहीं जान पाओगे। 'मैं' खुद ही एक रुकावट है. 'मैं' में अहम् है जो चेतन तत्त्व से मिलाने में बाधक है। जब तक 'मैं' बना है, 'मैं' की खोज बनी रहेगी और मंजिल नहीं मिलेगी। जैसे ही 'मैं' को गिरा देते हैं, 'कौन है' का भी अस्तित्व ख़त्म हो जाता है। 'मैं' ख़त्म होते ही प्रश्न गिर

जाता है। अतः 'मैं' की खोज का समाधान 'मैं' को गिराने में है। 'मैं' यानी अहम् गिरते ही स्व से साक्षात्कार हो जाता है। 'मैं' को मिटाना या गिराना ही 'मैं कौन हूँ?' का उत्तर है।

-सी, 1703, लेक कॉसल, हीरानन्दानी गार्डन, पवई, मुम्बई-400076 (महा.)

जिनवाणी को तुम, अन्तर से स्वीकार करो

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

मानवता की कद्र करो तुम, मजहब से अनुराग करो,
जिनवाणी को जीवन में तुम, अन्तर से स्वीकार करो ।। टेर ।।

जिनवाणी का सम्बल पाकर, काम सफल हो जाते हैं,
जिनवाणी को धारण करके, पाप कर्म कट जाते हैं।
जिनवाणी तो यह कहती है, सबसे प्रिय व्यवहार करो,
जिनवाणी को जीवन में तुम......... ।।1 ।।

जिनवाणी की महिमा तो, सचमुच अपरम्पार है,
जिनवाणी पर श्रद्धा हो तो, होता बेड़ा पार है।
अपने तन के रग-रग में तुम, जिनवाणी संचार करो,
जिनवाणी को जीवन में तुम.......... ।।2 ।।

आत्म-साधना के पथ पर तो, आगे कदम बढ़ाना है,
जीवन के इस उपवन में अब, त्याग सुमन खिलाना है।
तप त्याग से जीवन का, सुन्दर सा शृंगार करो,
जिनवाणी को जीवन में तुम.......... ।।3 ।।

सम्यक् शौर्य के जगने से ही, सपने सच्चे होते हैं,
सम, विषम परिस्थितियों में भी, धैर्य नहीं वो खोते हैं।
सद् राहों पर चल करके तुम, जीवन का उद्धार करो,
जिनवाणी को जीवन में तुम.......... ।।4 ।।

-जनता साड़ी सेन्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

Tattva bodha

RISHIBHASHITA : A VALUABLE WORK

Prof. Sagarmal Jain

Rishibhashita is one of the oldest works in Ardhamagadhi Jain canonical literature. In the ancient Jain tradition it was recognised as an important work. In Aavashyak Niryukti Bhadrabahu has expressed his intent to write a Niryukti on Rishibhashit.

Style and period of Rishibhashita :

According to its language, style, and subject matter this is an extremely old work among the Jain canonical works of Ardhamagadhi language. I consider this work being of a period slightly later than that of first Shrutaskandha of Acharanga but earlier than that of other ancient works like Sutrakritang, Uttaradhyayana and Dashvaikalika. Even its present form can under no circumstances be dated later than 3rd or 4th century B.C. As per the information available in Sthanang this work was originally a part of Prashnavyakarandasha; the ten Dashas described in Sthananga include Rishibhashit also. Samvayanga informs that this contains 44 Chapters. As such Rishibhashit certainly pre-dates these works. In Sutrakritang there is a mention of ascetics like Nami, Bahuk, Ramaputta, Asit Deval, Dvaipayan and Parashar as also little indications about their ritual beliefs. They have been addressed as ascetics and great men. These ancient Rishis have been recognised by Sutrakritang, an exposition by Arhat. All these Rishis attained liberation inspite of their consumption of seeds and water.

This is a firmly established fact that this work was created prior to the institutionalisation of Jain religion and social organisation. Study of this work explicitly indicates that at the time of its writing Jain organisation was completely free of sectarian bias. Mankhali Goshalak and his philosophy has been mentioned in Jain canons like Sutrakritang,

Bhagvati and Upasakdashang and in Buddhist works like Suttanipata, Deeghanikaya (Sammanjnafalasutta). Although there is no specific mention of Mankhali Goshalak in Sutrakritang, Niyativad has been commented upon in its chapter titled Aardrak. Analysing from the view point of development of sectarian feelings, the portion of Bhagvati dealing with Mankhali Goshalak clearly appears to be of later period than even Sutrakritang and Upasakdashang. These two works as well as many works of pali Tripitaka mention the Niyativad of Mankhali Goshalak and then refute it. Still, unlike Jain Canonical works, the Suttanipata has recognized the influential personality and value of the works of Mankhali Goshalak by including his name in the list of six Teerthankaras contemporary to Buddha. Rishibhashit has gone a step further and eulogised him as Arhat Rishi.

Considering from the view point of language we find that Rishibhashit has, to a larger extent, maintained the most ancient form of Ardhamagadhi Prakrit. For example in Rishibhashit Atma has been mentioned as Ata but in Jain Anga literature Atta. Appa , Aada, Aaya and other words have been used which are variations belonging to later period. The free use of the consonant 'ta' conclusively puts this work in an earlier period than Uttaradhyayan as in Uttaradhyayan there is a tendency of avoiding this consonant. Rishibhashit also abundently uses word-forms like, Janati, Paritappati, Gachchhati, Vijjati, Vattati. Pavattati. This also confirms the antiquity of this work in context to both, subject and language.

The historic Background of Rishis of Rishibhashita:

It is clearly established that most of the Rishis of Rishibhashit were not connected with Jain tradition. The adjectives like Brahmin Parivrajak indicate that they were from non-Jain traditions. Also, some names like Dev Narad, Asit deval, Angiras Bhardwaj, Yajnavalkya, Bahuk, Vidur, Tharishen Krishna, Dvaipayan, Aruni, Uddalak, Narayan have been popular in Vedic tradition and their teachings are intact in Upanishads, Mahabharat and Puranas even todav.

The names of Dev Narad, Angiras Bharadvaj, Dvaipayan also find their mention in Sutrakritanga, Aupapatik, Antakritdasha besides Rishibhashit in Jain tradition as also in Buddhist Tripitak literature.

Similarly, Vajjiyaputra, Mahakashyap and Sariputra are famous personalities of Buddhist tradition and are mentioned in Tripitak literature. Mankhaliputra, Ramputta, Ambad (Ambashta), Sanjaya (Velatthiputra) are names which belong to independent Sraman traditions and their mention can be found both in Jain and Buddhist traditions. Prof. C.S. Upasak, in his article "Isibhasiyam and Pali Buddhist Text : A Study" has discussed in details those Rishis of Rishibhashit who have been mentioned in Buddhist literature. This article has been published in Pt. Dalsukh malvania Abhinandan Granth. Parshva and Vardhaman are the famous, twenty third and twenty fourth Teerthankars in jain tradition. Ardrak is found in Sutrakritanga besides Rishibhashit. Besides these, Valkalchiri, Kumarputra, Ketaliputra, Tetaliputra, Bhayali, Indranaag are names most of whom are mentioned in Isimandal and other jain works. Valkalchiri and Kumarputra etc. are also mentioned in Buddhist tradition. However, even those who are neither mentioned in Jain nor in Buddhist tradition, cannot be termed as fictitious.

I would only like to conclude that Rishibhashit is a valuable work not only of Jain tradition but also of the Indian tradition as a whole. The religious tolerance of Indian thought is truly reflected in this work. It also has a historical importance because it provides valuable and authentic information about many known and some unknown Rishis and their preachings. The Jain Acharyas have done a valuable service to Indian literature and culture by preserving this work. In fact this work is an undeniable proof of historical existence of many Indian Rishis of the period between 10th and 5th century B.C.

-Director, Prachya Vidya Peeth, Shajapur (M.P.)

जीवन-व्यवहार

गृहस्थ-जीवन में आत्म-साधना के प्रश्न

श्री उदयमुनि जी म.सा.

आम तौर पर कई भाई-बहन कहते हैं कि हम घर-गृहस्थी के जंजाल में फंसे हैं, निकल नहीं सकते, वृद्धावस्था के कारण शारीरिक स्थिति ऐसी नहीं रही है कि संयम ले लें, तब यहाँ रहते हुए साधना कैसे करें? कई ऐसे कहते हुए भी पाए जाते हैं कि हमने साधु-साध्वियों को निकट से देखा है, वहाँ भी क्लेश एवं बाहर के जंजाल इतने पाले हुए हैं कि लगता है इनसे तो हम गृहस्थ ही अच्छे। यदि संयम लेने का भाव बनाएँ तो योग्य गुरु या गुरुणी नहीं मिलते। ऐसे में साधना कैसे करें? कोई कहते हैं- आनन्द आदि श्रावकों ने ऐसी साधना कर ली कि एक भव करके मोक्षगामी होंगे। संयम लेने से ही मोक्ष गामी होंगे ऐसा क्यों कहते हो? गृहस्थ लिंग से भी सिद्ध हुआ जाता है। इन्हीं प्रश्नों के उत्तर खोजने हैं।

(1) एक प्रश्न पहले ले लें। वृद्धावस्था या अधिक उम्र के कारण शरीर की स्थिति ऐसी नहीं है कि संयम ले सकें। संयम लेना भी चाहते हैं, पर नहीं ले सकते, तब क्या करें?

अधिक उम्र संयम-साधना में बाधक नहीं है। यह मात्र बहाना है। दीर्घायुष्क को बेटे-बेटी के स्थान पर पोते-पोती, दोहिते-दोहिती आदि में ममता अधिक हो जाती है। 30-40 वर्षों तक कड़े परिश्रम से धनवैभव जोड़ लिया, परिवार बड़ा हो गया, सुख-सुविधाएँ बहुत बढ़ गई। किसी को सेवानिवृत्ति राशि बहुत मिलती है। बड़े आराम से जीवन गुजर रहा है। इन सबमें इतने अटके-उलझे हुए, मजे ले रहे हैं , सोचते हैं संयम लेकर कष्ट क्यों मोल लूँ? इसलिए मैंने कहा कि आयु का आप बहाना बना रहे हो। यौवनावस्था खूब कमाने में, परिजनों की व्यवस्थाएँ करने में भोगों में बिताई, भयंकर कर्मबंध किया। धर्म की रुचि तब रही हो या न भी रही हो और फिर बुढ़ापा आ गया तो जिन कार्यों में रुचि रही उसी में लगे रहना अच्छा लगता है, बस यही राग है, रति

है, कषाय है, आसक्ति है। युवावय का पूरा जीवन तो पापारम्भ में बीता, शेष उसी से अर्जित धन-वैभव को भोगने में, परिवार की ममता-मूर्च्छा में लगाया तो पूरा जीवन ही नष्ट किया, ऐसा समझो। अतः आयु को बाधा मत मानो और अभी भी मोहनिद्रा तोड़कर आत्मा में जगना हो तो संयम ग्रहण कर इस स्वर्णिम अवसर को मत चूको। बहाने बनाकर स्वयं ही स्वयं से धोखा खाकर अपनी आत्मा का ही अहित कर रहे हो।

(2) दूसरा प्रश्न- घर-गृहस्थी के जंजाल में ऐसे फंसे हैं कि निकल नहीं पाते, क्या करें? जंजाल तो लंबे चौड़े हैं, भयंकर हैं, पर जिन्दगी तो छोटी है, जिन्दगी को तो बड़ी नहीं कर सकते, जंजाल ही कम करने पड़ेंगे।

यह अल्पकाल की आयु और जीवन बहुविघ्नों का है घर।
कर दूर पुराकृत कर्म धूलि गौतम प्रमाद क्षण का मत कर।।

(उत्तराध्ययन सूत्र का 10 वां अध्ययन)

अवस्थाएँ बीती जा रही हैं, यौवन चला जा रहा है। इस जीवन को एक स्वर्णिम अवसर जानकर एक क्षण भी व्यर्थ न जाने दें। (आचारांग सूत्र 1.2.1) जो क्षण को जानता है वह पंडित-ज्ञानी है। जो क्षण चला गया वह मेरे हाथ में नहीं रहा, तब ऐसा होना था ऐसा नहीं होना था। वह तो जो न होना था वह हो गया। अब ऊहापोह या निरर्थक संकल्प-विकल्प क्यों करना। अगला क्षण भी मेरे हाथ में नहीं है। काल के हाथ में है। एक क्षण का भी भरोसा नहीं है। न जाने मृत्यु किस क्षण आ जाए ऐसा यह सर्वस्व क्षणभंगुर है, परन्तु अबोध प्राणी भावी योजनाओं की उधेड़बुन में ही, जंजाल में ही फंसता रहता है। वर्तमान के क्षण को आत्मार्थ में लगाकर सार्थक कर लेने में ही जीवन का सार है।

सोचें कि जिन-जिन के लिए मर-खप रहे हैं वे सभी पराये हैं। यह तन भी पराया, इसके साथ पांच इन्द्रियों की आसक्ति के कारण ही जो जन जोड़े हैं, वे भी पराए हैं, उनके लिए धन कमाया जोड़ा, वह भी पराया है। तीनों छूटने वाले हैं। धोखा देने वाले हैं। सारा जंजाल इन तीन के कारण है। इन्हीं के पीछे इतने तनाव, चिन्ता, परेशानी, दुःख, पीड़ा परिताप है कि मानव दिन-रात परितप्त, त्रस्त, अस्तव्यस्त रहते हैं। भविष्य में बुढ़ापे में काम आएगा, इसलिए इस शरीर को बढ़िया खिला-पिलाकर बलिष्ठ-पुष्ट करते हैं, धन-वैभव जोड़ते हैं।

यौवनावस्था कमाई करने की है। यह शरीर और यह धन तो कभी भी विलीन हो सकता है। यौवन काल में यदि ज्ञान का संचय कर लेंगे, दर्शन पुष्ट कर लेंगे तो वह रोग में, बुढ़ापे में, भवान्तर में भी काम आएगा, ऐसा सोचकर ज्ञानार्जन करने में भी जुट जाओ। असली धन तो वही है जो मेरा है मेरे साथ सदा रहने वाला है।

'जंजाल में फंसे हैं', यह आप झूठ बोलते हो। जंजाल में, यदि किसी को कोई रस्सियों से बांध दे, कहीं बंदकर दे तो व्यक्ति पुरजोर प्रयत्न करता है कि उसे छुड़ाकर भाग जाए। आपको तो उस जंजाल में मजा आ रहा है। चाहे वह एक बूंद शहद का ही समझो वह पंचेन्द्रिय विषय रूप मिठास आपको जंजाल लगता ही नहीं है। तोते की तरह मात्र शब्द से बोलते हो कि यह जंजाल है।

क्या ये जंजाल कभी मिटे हैं, मिटते हैं? तृष्णा का कोई पार नहीं है। इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त हैं। इसलिए जंजाल को तो काटना पड़ेगा। उनमें से अंश-अंश छिटकते-छिटकते निकल भागना पड़ेगा। जितने जंजाल में उलझे रहेंगे, कर्मास्रव-बंध करके, चतुर्गति रूप संसार में अभिवृद्धि होती रहेगी। यह अमूल्य मनुष्य भव, कुशाग्र बुद्धि और वीतरागवाणी श्रवण करने का स्वर्णिम अवसर तभी सार्थक होगा जब इसे सुनकर श्रद्धान कर आत्मा में एवं संयम में पराक्रम करेंगे।

क्या ये जंजाल पहली बार ही आए हैं? हमने अनन्तभव किए हैं, ऐसे ही अनन्त परिवार बसाए, पाले और छोड़े हैं। ऐसे ही घर, घरौंदे, बिल, घोंसले बनाए और छोड़े हैं। अभी जो बसाए, बनाए वे भी छोड़ने पड़ेंगे, तब स्वेच्छया छोड़कर आत्मार्थ, मोक्षार्थ साधने में क्यों नहीं जुट जाते हैं? स्वयं बंधना चाहते हो तो भगवान् महावीर भी नहीं छुड़ा सकते और जो जंजाल काटकर मुक्त, विचरण कर आत्मा में रमण करना चाहते हैं उन्हें कोई बांधकर, फंसाकर नहीं रख सकता है। परम सुख की चाह जगी हो, जन्म-मरण के भयंकर दुःख से बचना हो तो घर-गृहस्थी के जंजाल से हटना पड़ेगा, उसके बिना आत्मिक सुख का रसास्वादन नहीं आ सकता।

पूरी तरह से जंजाल से नहीं हट सकते तो अपने लिए अपनी आत्मा के लिए घंटा, डेढ़ घंटा स्वाध्याय, सामायिक, तत्त्वचिंतन, आत्मरमण, परमात्मस्मरण में लगाओ। चौबीसों घंटे, सारा जीवन इन्हीं जंजालों में फंसे रहे तो साथ क्या

जाएगा? जो बसाया, कमाया, जोड़ा वह तो यहीं छूट जाएगा और उस हेतु जो पापाचरण किया वह कर्म साथ जाएगा। अतः साथ जाने वाला, रक्षक तो एक मात्र धर्म है, उसकी कमाई करो। कई निरर्थक कार्यों, टी.वी., गप्पों, निद्रा, आडंबरों-उत्सवों में घंटों-दिनों नष्ट करते रहते हैं, समय बचाकर, संकल्प पक्का करो कि मुझे सामायिक-स्वाध्याय भी करनी है, प्राथमिक कार्य जो अपना है, वह करो। फिर शनैः शनैः जंजाल काटकर सर्वतः विरत होने का लक्ष्य बनाओ।

(3) हमने साधु-साध्वियों के आपसी क्लेश एवं बाहरी जंजाल इतने देखें हैं कि इनसे तो हम गृहस्थ ही अच्छे। योग्य गुरु-गुरुणी नहीं मिलते।

इसके उत्तर में कहना होगा कि कहीं थोड़ा बहुत ऐसा हो सकता है। तत्त्व स्वरूप सम्यक् रूप से समझा नहीं, वैराग्य वस्तुतः आया नहीं अथवा किन्हीं सांसारिक कारणों से संयम लेने पर ऐसी विकृतियाँ आती हैं। येन-केन प्रकारेण शिष्य मूंडना, शिष्य सम्पदा बढ़ाने के लक्ष्य से शिक्षण, प्रशिक्षण, परीक्षण उचित नहीं होता और फिर गुरु का नियंत्रण न रहने से या शिष्यों के स्वेच्छाचार से कहीं कुछ आपके ऐसे क्लेश देखने में आए हैं तो आप उनसे बोध न लें उनको समर्पित न हों, उनका शिष्यत्व ग्रहण न करें। सर्वत्र ऐसा नहीं है। मुमुक्षु के नेत्र महात्मा को पहचान लेते हैं। एक सद्गुरु की खोजकर उसके प्रति सर्वार्पण कर दें।

संयम लेने से क्या लाभ, हम गृहस्थ ही अच्छे, ऐसी मिथ्या मान्यता न करें, भ्रमणा न पालें। संयमी भी जंजालों में फंसे हैं, कहाँ सुखी हैं, ऐसा न मानें। ये आपके संयम न ले पाने की पुरुषार्थहीनता के लिए खोजे गए बहाने हैं, आप ऐसे क्लेशवालों से मत जुड़ो जो बाहरी जंजालों में फंसे हैं, उनका शिष्यत्व मत ग्रहण करो। ऐसे कोई-कोई हो सकते हैं। कई उत्कृष्ट आत्म-साधक मात्र आत्मार्थ-मोक्षार्थ में लगे हुए, सभी बाह्याडम्बरों से बचे हुए हैं, उनसे संयम लें। यह कैसे कहते हैं कि हम गृहस्थ ही अच्छे। घर-गृहस्थी में आपने पचासों जंजाल पाल रखे हैं, मोह-ममता में पड़े हैं, आरम्भ-समारम्भ में पाप प्रवृत्तियों में पड़े हैं, पंचेन्द्रिय विषयों का पान कर रहे हैं। आप आत्मार्थी, मोक्षार्थी, स्वाध्याय-ध्यान में रत रहने वाले क्रियावान के साथ जुड़ें और उत्कृष्ट से उत्कृष्ट

आत्मसाधना करें, कड़ा साध्वाचार पालें। जंजाल-आडम्बरों, क्लेशों से दूर रहकर नए आदर्श बनाएँ। अधिकाधिक एकान्त मौन-साधना, स्वाध्याय, ध्यान एवं उत्कट तप करें। साधना तो अपनी-अपनी होती है। क्षयोपशम अपना ही बढ़ाना पड़ता है।

(4) आनन्द आदि श्रावकों ने भी तो ऐसी साधना कर ली कि एक भव करके मोक्षगामी होंगे। संयम लेने से ही मोक्षगामी होंगे ऐसा क्यों कहते हो? गृहस्थ लिंग से भी मोक्ष होता है।

यह प्रश्न सत्य है, परन्तु वह चौथा आरा था, साक्षात् तीर्थंकर विराजमान थे, इसलिए श्रावक आगार धर्म पालकर भी, भविष्य में मोक्ष जा सकते हैं, यदि आप आनन्द आदि श्रावकों का नाम लेकर संयम क्यों लें, ऐसी अपनी पुरुषार्थ की कमी को छिपाने का बहाना कर रहे हैं तो अपना ही अहित कर रहे हैं। उन साधकों की कैसी दृढ़ श्रद्धा थी कि वे निर्ग्रंथ धर्म से घोर उपसर्ग आने पर भी विचलित नहीं हुए। वे वाणव्यन्तर आदि देव-देवियों से लेशमात्र में डिगने वाले नहीं थे। इतनी दृढ़धर्मिता थी। साक्षात् तीर्थंकर का सान्निध्य या सत्समागम था। इसलिए वे श्रावकपने में रहकर भी साधु जैसी उत्कृष्ट आत्मसाधना कर पाए, आप उनसे कैसे बराबरी कर रहे हैं?

देखें उपासकदशांग सूत्र, वे जीव, अजीव आदि नौ तत्त्वों के ज्ञाता थे। उनका सम्यक्त्व दृढ़ था। धर्म श्रद्धा प्रगाढ़ थी। संवेग, निर्वेद तत्त्व पक्का था कि आत्मावबोध पाते ही वे स्वेच्छया व्रत अंगीकार कर लेते। पांचों पापों की सीमा करते। नौ प्रकार के परिग्रह को परिसीमित करते। साधु-साध्वी को दान देते उपवास-पौषध, आयंबिल आदि तप करते। वर्षों तक उनकी आत्मसाधना उत्कर्ष पर पहुँची कि बाह्य से आरम्भ-परिग्रह का त्याग करते गए, ब्रह्मचर्य ले लिया, उत्कृष्टतम श्रमण-प्रतिमा तक पहुँचे। चौदह वर्षों के श्रावकत्व के बाद सेठ-साहूकार-मित्र जाति समुदाय को एकत्र कर स्नेह भोज देकर बड़े पुत्र को भार सौंपा। पौषधशाला में रहते हुए निरन्तर छः वर्ष में स्वाध्याय-ध्यान अप्रमत्त साधना में लीन रहे। साधुचर्या की भांति गोचरी की, श्रमण प्रतिमा धारण की। इस प्रकार बीस वर्ष तो श्रावकत्व कर संलेखना संथारा कर समाधिमरण किया। ऐसा ही राजा परदेशी एवं अंबड श्रावक ने किया था।

वे बाह्य से पांचवें गुणस्थान पर, परन्तु आभ्यन्तर में सातवें अप्रमत्त गुणस्थान पर, आत्मरमणता करने वाले साधक थे। प्रत्याख्यानावरणीय कषाय चतुष्क भी इतना कृश कर दिया कि एक भव करके मोक्षगामी होंगे। यदि उस चौक को तोड़ देते, सर्वविरति संयम ले लेते तो उसी भव में मोक्ष हो जाता ऐसी उनकी उत्कृष्ट आत्मसाधना थी। आप उनका नाम लेकर घर-गृहस्थी के जंजाल में फंसे-फंसे, महलों में बैठे-बैठे या हाथी के होदे पर बैठे मोक्ष जाना चाहते हैं। ऐसे विरले जीव होते हैं। दस क्रोड़ा-क्रोड़ी सागरोपम काल में ये दो उदाहरण हैं। वह राजमार्ग नहीं है। जो गृहस्थ लिंग सिद्धा आया है, वहाँ भी भाव संयतता आ जाती है। भावों ही भावों में वे अप्रत्याख्यानावरणीय आदि सर्व कषायों को कृश, क्षीण कर देते हैं, चारों घाती कर्मों का क्षयकर केवलज्ञान प्रकट होता है और गृहस्थ लिंग छोड़कर मुनिलिंग लें उससे पहले ही आयुष्य पूर्ण हो जाने से उसी लिंग से सिद्ध हुए, इसलिए गृहस्थ लिंग सिद्धा आया है। यह भ्रम, भ्रमणा मत पाल लेना कि आप अपने उद्योग-धंधे घर के कारोबार, गृहस्थी के कार्य-करते-करते, पति-बच्चे परिवार पालते-पालते मोह ममता में पड़े-पड़े ही सिद्ध हो जायेंगे। आगार धर्म में अंशतः साधना हो सकती है। वह भी जीवाजीव के ज्ञाता हों, 12 व्रत निरतिचार पालें, निरन्तर परिग्रह आरम्भ घटे, मोह-ममता टूटे तब। मोक्ष के लिए तो सर्वविरति संयम लेना अनिवार्य है। पांचवें आरे की अपेक्षा भी शीघ्र मोक्षगामी होना हो, उत्कृष्टतर साधना करनी हो, अप्रमत्त सातवें गुणस्थान का चरम छूना हो तो भी एक मात्र उपाय है। घर-गृहस्थी के जंजाल को काटकर संयम का स्वीकार। उसमें भी मात्र आत्मार्थ-मोक्षार्थ साधने के लक्ष्य से साधना करते रहना होगा।

-एस.एस.जैन सभा, आदर्शनगर, जयपुर (राज.)

देशभर में सामूहिक नवकार मंत्र का जाप

आचार्य श्री हस्ती जन्म-दिवस पौष शुक्ला चतुर्दशी दिनांक 18 जनवरी, 2011 को आप-हम सभी विश्वमैत्री एवं प्राणिमात्र की कल्याण कामना से प्रातः 7.00 से 8.00 बजे के दौरान आधा घंटे का समय निश्चित कर अपने-अपने ग्राम नगर में सामूहिक नवकार मंत्र जाप का आयोजन करें।

-निवेदक, आचार्य श्री हस्ती शताब्दी समिति

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 63)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(पुलाक)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा- पुलाक निर्ग्रन्थ शुभ योगी होते हैं अथवा अशुभ योगी?

समाधान- पुलाक निर्ग्रन्थ शुभ योगी तथा अशुभ योगी दोनों ही प्रकार के होते हैं। जब वे पुलाक लब्धि का प्रयोग करते हैं, उस समय उन्हें अशुभ योगी मानना चाहिए। जब पुलाक निर्ग्रन्थ वर्धमान परिणाम वाले होते हैं तब उन्हें शुभ योगी मानना चाहिए। पुलाक में वर्धमान, हीयमान एवं अवस्थित तीनों परिणाम माने गए हैं। अतः हीयमान परिणाम में अशुभयोगी तथा वर्धमान परिणामों में शुभयोगी मानना चाहिए।

यद्यपि पुलाक में तीन प्रशस्त लेश्याएँ ही होती हैं, तथापि प्रशस्त लेश्याओं में अशुभ योग व शुभयोग दोनों ही योग हो सकते हैं।

जिज्ञासा- पुलाक निर्ग्रन्थ आगामी भव की आयु का बन्ध करते हैं अथवा नहीं?

समाधान- पुलाक निर्ग्रन्थ जब तक पुलाकपने में होते हैं तब तक वे आगामी भव की आयु का बन्ध नहीं करते हैं। जब वे पुलाकपन से निवृत्त हो जाते हैं अर्थात् कषायकुशील अथवा असंयम में चले जाते हैं तब आगामी भव की आयु बांध सकते हैं।

दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि जब तक पुलाकपने में साधु रहते हैं तब तक वे आयु कर्म को छोड़कर शेष सात कर्मों का ही बन्ध करते हैं। यदि वह पुलाक साधु चरम शरीरी जीव है तो वह उस भव में किसी भी आयु का बन्ध नहीं करता, अपितु कषाय कुशील से निर्ग्रन्थ -स्नातक बनता हुआ मोक्ष में चला जाता है।

जिज्ञासा- पुलाक निर्ग्रन्थ एक साथ कितने हो सकते हैं?

समाधान- पुलाक निर्ग्रन्थ शाश्वत नहीं हैं। अर्थात् हर समय मिलना अनिवार्य नहीं है। यदि कभी मिले तो एक समय में अधिक से अधिक पृथक्त्व हजार अर्थात् दो हजार से नौ हजार तक मिल सकते हैं।

प्रतिपद्यमान अर्थात् वर्तमान समय में पुलाकपन को प्राप्त होते हुए जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट पृथक्त्व सौ (दो सौ से नौ सौ तक) हो सकते हैं तथा पूर्व प्रतिपन्न अर्थात् पूर्व समयों में पुलाकपन को प्राप्त निर्ग्रन्थ उत्कृष्ट पृथक्त्व हजार हो सकते हैं।

जिज्ञासा- एक जीव की अपेक्षा पुलाकपने का अन्तर कितना होता है?

समाधान- पुलाकपने का अन्तर एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त का तथा उत्कृष्ट अनन्त काल का होता है। क्योंकि पुलाकपना एक भव में तीन बार प्राप्त हो सकता है अर्थात् अन्तर्मुहूर्त बाद ही दुबारा पुलाकपने को प्राप्त किया जा सकता है।

उत्कृष्ट अन्तर देशोन अर्ध पुद्गल परावर्तन (वैक्रिय सम्बन्धी) समझना चाहिए। क्योंकि अधिकतम देशोन अर्ध पुद्गल परावर्तन काल में तो वह जीव मोक्ष में चला ही जाता है।

जिज्ञासा- अनेक जीवों की अपेक्षा पुलाकपने का अन्तर कितना होता है?

समाधान- अनेक जीवों की अपेक्षा पुलाकपने का अन्तर जघन्य एक समय का तथा उत्कृष्ट संख्यात वर्षों का होता है। अर्थात् एक निर्ग्रन्थ के पुलाक होने के अगले ही समय में कोई साधु पुलाक बन सकता है तथा अधिक से अधिक संख्यात वर्षों के बाद तो कोई न कोई पुलाक निर्ग्रन्थ बन ही जाता है। इसी अपेक्षा से जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर समझना चाहिए।

जिज्ञासा- पुलाक के संयम स्थान तथा चारित्र पर्यायें कितनी होती हैं?

समाधान- पुलाक के संयम स्थान असंख्यात होते हैं तथा चारित्र की पर्यायें अनन्त होती हैं। पुलाक और कषायकुशील के सर्व जघन्य संयम स्थान सबसे नीचे होते हैं। वहाँ से वे दोनों साथ-साथ असंख्य संयम स्थानों तक जाते हैं, क्योंकि वहाँ तक उन दोनों के समान अध्यवसाय होते हैं। बाद में पुलाक हीन परिणाम वाला होने से आगे के संयम स्थानों में नहीं जाता, किन्तु वहाँ रुक जाता है।

अर्थात् बकुश, प्रतिसेवना, कषाय-कुशील आदि से कम असंख्य स्थान पुलाक के होते हैं।

जिज्ञासा- संयम-स्थान व चारित्र पर्याय में क्या अन्तर है?

समाधान- संयम अर्थात् चारित्र, उसके स्थान अर्थात् शुद्धि की अधिकता और हीनता के भेद संयम-स्थान कहलाते हैं। वे असंख्य होते हैं। यह उल्लेखनीय है कि असंख्यात लोकों में जितने आकाश प्रदेश होते हैं उतने असंख्य संयम-स्थान समझने चाहिए।

प्रत्येक संयम स्थान के सर्व आकाश प्रदेशों को सर्व आकाश प्रदेशों से गुणा करने पर जितनी अनन्तानन्त पर्यायें होती हैं उतने एक संयम स्थान की पर्यायें होती हैं।

चारित्र मोहनीय कर्म के क्षयोपशम की विचित्रता से संयम-स्थान बनते हैं तथा आत्मा की ज्ञान-दर्शनात्मक उपयोग-परिणति से पर्यायें बनती हैं।

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

सूचना

(1) जिनवाणी के पाठकों को सूचित किया जाता है कि जिनवाणी का दिसम्बर 2010 का नियमित अंक प्रकाशित नहीं होगा तथा उन्हें दिसम्बर 2010 तथा जनवरी 2011 के संयुक्त अंक के रूप में 'गुरु गरिमा और श्रमण-जीवन' विशेषाङ्क प्राप्त होगा। नूतनवर्ष 2011 हेतु अग्रिम हार्दिक मंगल कामनाएँ।

(2) राष्ट्रीय स्तर पर अध्यात्म चेतना वर्ष के अन्तर्गत मंडल कार्यालय द्वारा आयोजित भजन, भाषण प्रतियोगिता जिन स्थानों पर आयोजित नहीं की गयी है उन स्थानों के सभी पदाधिकारियों से निवेदन है कि भजन, भाषण प्रतियोगिता 21 नवम्बर 2010 तक आयोजित करने की कृपा करावें। इसकी सूचना मंडल कार्यालय में भिजवाने का ध्यान रखावें।

(3) जिनवाणी के सुज्ञ पाठकों से निवेदन है कि जिनवाणी के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की शिकायत हो, जैसे- पते में परिवर्तन, जिनवाणी नहीं मिलना आदि, तो कृपया पत्र द्वारा सूचित करावें।

विरदराज सुराणा
मन्त्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

डॉ. धर्मचन्द जैन
सम्पादक, जिनवाणी

श्रद्धा-संस्मरण

अन्तिम शरण

डॉ. दिलीप धींग

पिछली सदी के अन्तिम दशक के शुरु में आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज का संथारा काफी चर्चित रहा। अट्ठम तप के बाद दस दिन चले इस संथारे की खबर सुनकर नर-नारी निमाज (पाली-राजस्थान) की ओर उमड़ रहे थे। संथारे का यह समाचार तमिलनाडु के पनरुटी (जिला-कडलूर) में भी पहुँचा। वहाँ के सिंघवी परिवार को आचार्य हस्ती के संथारे की खबर लग गई थी, लेकिन परिवार के मुखिया सुश्रावक अजितराज जी सिंघवी को यह समाचार नहीं दिया गया। कुछ समय पूर्व ही अजितराज जी को दिल का दौरा पड़ा था और उन्हें पूर्ण विश्राम की सलाह दी गई थी। परिवार में सबको यह समझा दिया गया कि गुरुदेव के संथारे के बारे में पिताजी को कोई कुछ नहीं कहेगा। लेकिन किसी तरह दूसरे दिन अजितराज जी को आचार्य हस्ती की अन्तिम आराधना का पता चल गया। इतना लम्बा-चौड़ा भरापूरा परिवार और किसी ने कानोंकान खबर तक नहीं दी कि गुरुदेव ने संसार से महाप्रयाण की तैयारी कर ली है। पहली मंजिल के विश्राम-कक्ष से वे इतनी तत्परता से नीचे उतर आए, जैसे उनका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक है। उन्होंने परिवार पर नाराजगी जताई कि क्यों उन्हें गुरुदेव के संथारे का समाचार नहीं दिया गया। और उन्होंने अपने पुत्रों को तुरन्त निमाज जाने की तैयारी करने का आदेश दिया।

परिवारजनों ने समझाया कि चिकित्सकों ने उन्हें यात्रा नहीं करने की सलाह दी है। लेकिन अजितराज जी किसी की सुनने और मानने को तैयार नहीं थे। उन्होंने बन्द कमरे में चिकित्सक को हाथ जोड़कर आग्रह किया और वचन लिया कि वह उनकी इस यात्रा के लिए परिवारजनों को सहमति दे। चिकित्सक दुविधा में था। उसने कहा कि वायुमार्ग से सावधानीपूर्वक जा सकते हो। अजितराज जी ने अनेक व्रत-नियम ग्रहण कर रखे थे, उनमें दिशा-परिमाण के अन्तर्गत उन्होंने हवाई जहाज से यात्रा नहीं करने का नियम भी ले रखा था। अन्ततः रेल और सड़क मार्ग से सफर करने का निर्णय ले लिया। साथ में पत्नी

कमला, पुत्र अशोकराज और एक पौत्री को ले लिया।

सिंघवी परिवार के चारों सदस्य पनरुटी से चेन्नई आए। अप्रेल का महीना विद्यालयों में छुट्टियों का महीना होता है और रेलों में लोगों की आवा-जावाही बढ़ जाती है, इसलिए तुरन्त पुष्ट (कन्फर्म्ड) टिकट मिलना अत्यन्त कठिन होता है। अशोकराज जी टिकट लेने गये और चारों के लिए हाथोंहाथ पुष्ट टिकट मिल गया। इस तरह वे चेन्नई से अहमदाबाद पहुँचे। वहाँ से मारवाड़ जंक्शन की रेल से वे आगे के लिए रवाना हो गए। रेल में टिकट-परीक्षक (टीटीई) ने कुछ यात्रियों को इधर-उधर बिठाया और डिब्बे का एक प्रभाग (कम्पार्टमेण्ट) सिंघवी परिवार को बैठने के लिए दे दिया। उसी प्रभाग में रायका किसान वर्ग की भजन-मण्डली भी थी। वे लोग भजन गाने लगे तो अजितराज जी कहाँ पीछे रहने वाले थे। उन्होंने भी देव-गुरु-धर्म को समर्पित कुछ भजन गाये। पूरा प्रभाग एक परिवार की तरह हो गया था और यात्रा का अधिकांश समय भक्ति और विरक्ति में व्यतीत हुआ।

16 अप्रेल 1991 को अपराह्न में वे मारवाड़ के जिस स्टेशन पर पहुँचे, वहाँ उन्हें एक परिचित सज्जन मिल गया। उसके पास टैक्सी थी। टैक्सी में बैठकर वे सब शाम को लगभग पौने पाँच बजे निमाज पहुँच गये। अजितराज जी के रोम-रोम में गुरुदेव बसे थे। गुरु-दर्शन और गुरु के अन्तिम दर्शन की घड़ियाँ सन्निकट पाकर वे अधिकाधिक भावविह्वल होते जा रहे थे। संथारा-स्थल की ओर बढ़ते हुए उन्हें कई साध्वियों के दर्शन का सौभाग्य मिला, जो आत्मा की आराधना में लीन आचार्य हस्ती के दर्शन करके लौट रही थीं। अजितराज जी थोड़ा रुकने लगे तो एक महासती बोली-"जाओ, दर्शन करो।" वे आगे बढ़ गये। वहाँ व्यवस्था की दृष्टि से दर्शनार्थी स्त्री-पुरुषों की अलग-अलग कतारें लगी हुई थीं। श्राविका कमलाबाई और उनकी पौत्री महिलाओं की कतार में लग गई। अजितराज जी और अशोकराज जी पुरुषों की कतार में लगने ही वाले थे कि दिगम्बर समाज के परिचित श्रावक नेमीचन्द जी ने उनको देखा। वे उन्हें कतार से अलग विशेष रास्ते से तुरन्त गुरुदेव के दर्शनार्थ संथारा-कक्ष तक ले गये।

उस समय शाम के लगभग 5.10 बजे थे। श्रावकगण वहाँ स्तवन गा रहे थे। अजितराज जी ने असीम भावों के साथ महान गुरु आचार्य हस्ती को वन्दना

की। आचार्यप्रवर पूर्ण सजग थे। उनके जिस हाथ में माला थी, उसी हाथ को ऊपर उठाकर उन्होंने आशीर्वाद दिया। उस परम आध्यात्मिक वातावरण में अजितराज जी भी आत्मा-परमात्मा के गीत गाने लग गये। गाते-गाते उनकी आँखों से अश्रुधाराएँ भी बह चलीं। फिर गीत आया- "अरिहन्तों को नमस्कार...." नमस्कार के साथ ही वे झुके.....और वहीं देव-गुरु-धर्म की पावन शरण में करीब 5.20 बजे उन्होंने अपनी नश्वर देह को त्याग दिया।

मूलतः आनन्दपुर कालू (जिला-पाली) के अजितराज जी का ननिहाल निमाज में ही था। उनके मामा श्रावक कनकमल कोठारी (सम्प्रति श्री जितेन्द्र मुनि जी के दादा) के घर उनकी पार्थिव देह को ले जाया गया। दूसरे दिन सुबह अन्तिम यात्रा में बड़ी संख्या में सगे-सम्बन्धियों और परिचितों के अलावा पूरा संघ सम्मिलित हुआ।

अन्तिम समय में उनके साथ रहे पुत्र अशोकराज जी ने इस घटना का वृत्तान्त सुनाते हुए इन पंक्तियों के लेखक को कहा- "पिताजी के जाने का दुःख तो है, लेकिन इस जिस रूप में उन्होंने हमसे चिरविदाई ली, वह अद्भुत, विस्मयकारी तथा मन को सन्तोष देती है। पनरुटी से निमाज तक के ढाई हजार किलोमीटर के सफर में दस मिनट का विलम्ब भी गुरुदर्शन से वंचित कर सकता था, लेकिन वैसा नहीं हुआ।" बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा- "हमारे अधिकांश सगे-सम्बन्धी उस समय गुरुदेव के अन्तिम दर्शनों के लिए निमाज में ही थे। पिताजी, श्री जयन्त मुनि (बाबाजी महाराज) के संसारपक्षीय दामाद थे। निमाज में उस समय पूरा संघ मौजूद था। पिताजी यदि पनरुटी में गुजर जाते तो उनकी अन्तिम-यात्रा का स्वरूप वैसा नहीं बन पाता, जैसा निमाज में बना।"

अजितराज जी की पुत्री सुभद्रा देशरला ने बताया कि किसी समय एक बार आचार्य हस्ती ने उनके पिताजी को कहा था- "थारे न म्हारे पाँच दन रो फरक रेवैला।" उनका वचन शत-प्रतिशत सही सिद्ध हुआ। इसके अलावा अजितराज जी की यह भावना थी कि अन्तिम समय में उन्हें देव-गुरु-धर्म की शरण मिले। कवि सूर्यचन्द्र डांगी रचित भजन "गुरुदेव तुम्हें नमस्कार बार-बार है" के माध्यम से वे अपनी इस भावना को हमेशा पुष्ट करते रहते थे। उनकी भावना चामत्कारिक ढंग से सफल हुई।

53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

युवा-स्तम्भ

तारीफ करना भी एक गुण है

श्री राजकुमार जैन

हम प्रायः अपने आसपास के और अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति की प्रशंसा करने में कंजूसी कर जाते हैं। दरअसल प्रशंसा हर व्यक्ति चाहता है, यह एक मानवीय कमजोरी है। हमारा मंतव्य यह हर्गिज नहीं है कि व्यक्ति की इस मानवीय कमजोरी का आप स्वार्थों की पूर्ति के लिए इस्तेमाल करें।

दरअसल हर व्यक्ति के पास अच्छे विचार, अच्छे 'आइडियाज' होते हैं। किन्तु प्रायः यह होता है कि बहुत ही कम लोगों को यह अहसास करवाया जाता है कि उनके पास अच्छे और उपयोगी विचार हैं या उर्वर मानसिक क्षमता है। प्रायः हर व्यक्ति में बुद्धिमान अनुभव करने की अदम्य इच्छा होती है। यदि आप उसकी इस इच्छा को पूरा करते हैं, तो इसमें बुरा क्या है? दरअसल किसी की तारीफ करना एक ऐसा गुण है, जिसमें आपका अपना कुछ व्यय नहीं होता और संबंधित व्यक्ति को नवीन ऊर्जा मिलती है।

वैसे यदि आप अपने अधीनस्थ व्यक्ति की तारीफ करते हैं, तो निश्चित मानिये कि इससे उसकी कार्य-क्षमता में वृद्धि होगी और अंततः वह आपके और दफ्तर के हित में ही होगा।

किसी की मानसिक क्षमता को विकसित करने का शायद यह सबसे सरलतम, किन्तु सबसे कारगर तरीका है कि आप सम्बद्ध व्यक्ति की रचनात्मकता को सराहें या उसकी कार्य-शैली पर अनुकूल टिप्पणी करें। कभी समस्या आने पर निम्न तरीकों से अधीनस्थ के साथ विचार कर सकते हैं- 'आपके पास 'आइडियाज' बहुत अच्छे होते हैं। बताइये, इस स्थिति में हम क्या कर सकते हैं?' या 'मुझे पता है कि आपके पास सुदीर्घ अनुभव है। अपने अनुभवों का लाभ हमें दीजिए।' 'आपके खयाल में क्या किया जा सकता है?' इस तरह से किसी व्यक्ति से राय आमंत्रित करने पर वह गौरवान्वित तो महसूस करेगा ही, साथ ही अपनी क्षमता के अनुसार बेहतर विकल्प आपको सुझायेगा, जो संभवतः आपके लिए अत्यन्त उपयोगी व कीमती हो।

हर व्यक्ति स्वाभिमान सहित अपनी अहमियत चाहता है और निश्चित रूप से उसके अनुभवों एवं क्षमताओं के अनुसार उसे वह मिलना भी चाहिए,

क्योंकि वह उसका हकदार होता है।

दरअसल 'तारीफ' ऐसा 'आइल' है, जिसके अभाव में मस्तिष्क रूपी मशीन धीरे-धीरे जाम हो जाती है और वह मुस्तैदी से कार्य नहीं कर पाती। इसलिए जरूरी है कि दफ्तर, कारखाने आदि में कर्मचारियों की कार्य-क्षमता में वृद्धि करने के लिए समय-समय पर इस 'आइल' का इस्तेमाल किया जाए।

तारीफ का फार्मूला दफ्तर, कारखाने के अलावा, दोस्तों और परिवार में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। आप इस जादुई फार्मूले को आजमाकर तो देखें। आपको इसके सकारात्मक परिणाम बेहद शीघ्र देखने को मिलेंगे। आपकी लोकप्रियता में तो वृद्धि होगी ही, आपके कार्य भी तेज गति से होने लगेंगे।

हाँ, तारीफ एवं चाटुकारिता के बारीक फर्क को हमेशा ध्यान रखें। तारीफ होनी चाहिए, चाटुकारिता नहीं, क्योंकि चाटुकारिता अंततः नुकसानदेह होती है, मगर रचनात्मक तारीफ हर्गिज हानि करने वाली नहीं हो सकती।

- राज स्टेशनर्स, पचपहाड़ रोड, भवानीमण्डी-326502 (राज.)

प्रभावशाली मांगलिक

सुमन सिंघवी

लगभग 30 वर्ष पूर्व की बात है। किसी मांगलिक प्रसंग में जाते समय मेरी माँ का हाथ का 'गजरा' असावधानी वश खुल कर गिर गया। माताजी बहुत व्याकुल एवं परेशान हो गई और उनका मन अशांत रहने लगा। मरता क्या नहीं करता, हम देवी-देवताओं भोपाजी, पीरजी, किस-किस के यहाँ नहीं गये, सभी जगह जाकर पूछते और सभी जगह अलग-अलग समाधान मिलते। माँ की व्याकुलता बढ़ती गई और उन्होंने खाना-पीना छोड़ दिया, तबीयत बिगड़ने लगी। मानसिक स्थिति के साथ-साथ शरीर की स्थिति दिनों-दिन बिगड़ती जा रही थी।

माँ आचार्य श्री के दर्शनार्थ प्रायः जाया करती थी। पूर्ण श्रद्धा के साथ आचार्य श्री के पास गये। जाकर खड़े हुए और माँ के आँख में आंसू आ गए। आचार्य श्री ने सिर्फ इतना ही फरमाया-"गैली पृथ्वीकाय रे कलेवर वास्ते इत्तो जीव उठावे" और मांगलिक फरमा दी। उस दिन की घड़ी और आज का दिन मेरी माँ उस गजरे को याद तक नहीं करती और मन उनका स्वतः ही शान्त हो गया। परम कृपालु भगवन्त की मांगलिक में यह चमत्कार और प्रभाव था। यह उनकी कठोर और निर्मल साधना का सुपरिणाम था। ऐसे साधनाशील भगवन्त को कोटि-कोटि वन्दन एवं श्रद्धा समर्पण।

-18 बी, मानव मन्दिर, तक्षशीला फ्लेटस्, जूनी आराधना चार रास्ता, मणिनगर, अहमदाबाद

नारी-स्तम्भ

एक श्राविका का प्रेरक पंडितमरण

श्री पी. शिखरमल सुराणा

1. सुश्राविका प्रमिलादेवी बाघमार (49) का 20 अक्टूबर 2010 को चेन्नई में उनके निवास पर समाधिमरण हुआ। वह कोसाना निवासी स्व. घीसूलाल जी बाघमार की पुत्रवधू और गणपतराज बाघमार की धर्मपत्नी थी।
2. पीपाड़ के श्रावक रतनराज चोरड़िया चौधरी की सुपुत्री प्रमिला को बचपन से ही धर्म संस्कार प्राप्त हुए थे। उनका पूरा कुटुम्ब आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज और वर्तमान आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज का अनन्य भक्त रहा है। बालिका प्रमिला बचपन से ही अपने दादा-दादी और माता-पिता के साथ आचार्यप्रवर और गुरुजनों की सेवा में जाया करती थी। छोटी उम्र में वह वैराग्यवस्था में भी रहीं। महासती सरलेशप्रभा जी की वैराग्यावस्था की वह उनकी संगिनी थी। थोकड़ों की जानकार थी तथा स्वाध्यायी के रूप में पर्युषण में सेवाएँ देने भी जाया करती थी।
3. संयोग की बात कि माता-पिता के जोर देने पर प्रमिला का विवाह उनके अनुरूप ही एक धर्मनिष्ठ परिवार में हो गया। उनका ससुराल भी आचार्य हस्ती-हीरा के प्रति पूर्ण समर्पित भक्त परिवार रहा। ससुराल में उन्हें धर्म साधना के लिए अनुकूल वातावरण मिला। प्रमिला एक आदर्श श्राविका और सक्रिय स्वाध्यायी बनी रही। उन्होंने कई तपस्याएँ भी कीं।
4. पिछले दस वर्षों से प्रमिलाजी का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं था। उन्हें गुरदे (किडनी) की तकलीफ थी। वर्ष 2004 में उनका गुरदा प्रत्यारोपित भी करवाया गया था। लेकिन वह वर्ष 2006- 2007 तक ही ठीक रहा। अस्वस्थता के बावजूद वे नियमित धर्म-ध्यान, जप-तप, प्रत्याख्यान, स्वाध्याय आदि किया करती थीं। वे दृढ़धर्मी व प्रियधर्मी थीं।
5. पिछले एक दशक से उनके पतिदेव व दोनों पुत्रों-हेमन्त व उपेन्द्र ने तथा पिछले एक वर्ष से पुत्रवधू शिल्पा ने पूर्ण मनोयोग से रुग्ण प्रमिला जी की सेवा करके परिवार में सेवा का एक आदर्श उपस्थित किया। इतने लम्बे समय तक तन-मन-धन से निष्ठापूर्वक सेवा करना एक प्रेरक उदाहरण है।

इस बीच प्रमिला जी की यही भावना रहती कि वे कम से कम सेवा करवाएँ।

6. दिवंगत होने से 15 दिन पूर्व प्रमिला जी के गुरदे ने काम करना बन्द कर दिया था। फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य लड़खड़ा गया था। उन्होंने अस्पताल जाने और दवाई लेने से इन्कार कर दिया। उन्होंने संथारा करने का आग्रह किया। यह स्वाभाविक था कि स्नेहवश परिवारजनों ने आरंभ में संथारा नहीं दिलाया, परन्तु वे आग्रह करती रहीं।
7. उनके अधिक आग्रह करने पर पहले सागारी संथारा चेन्नई के स्वाध्याय भवन में सेवारत धार्मिक शिक्षक विनोद जैन ने करवाया। उस समय विनोद जी ने जो विधिवत् पाठ सुनाया तो प्रमिला जी ने पूरा पाठ वापस दोहराया।
8. सागारी संथारे के बाद भी आजीवन चौविहार संथारे के लिए प्रमिला जी का आग्रह बना रहा। उनके निवास के पास ही विराजित जयगच्छीय श्री जयधुरन्धर मुनि जी मंगलपाठ सुनाने के लिए पधारे। मांगलिक सुनाने के बाद उनसे पूछा गया कि क्या उनका चौविहार संथारा लेने का अटल निश्चय है? उन्होंने सहर्ष गर्दन हिलाकर अपनी स्पष्ट स्वीकृति दी। उस समय वह पूर्ण सजगता व होश में थीं। उनकी तीव्र भावना और अटल आग्रह को देखते हुए परिजनों की स्वीकृति के साथ मुनिराज ने उनको विधिवत् संलेखना संथारा के प्रत्याख्यान करवाए। पूरा वातावरण आध्यात्मिक बना रहा।
9. आजीवन चौविहार प्रत्याख्यान के साढ़े छब्बीस घण्टे बाद दिन में सवा दो बजे उनका संथारा सम्पूर्ण हुआ। समाधिमरण के सवा दो घण्टे बाद ही उनकी अन्तिम-यात्रा शुरू हो गई। बड़ी संख्या में नर-नारी सम्मिलित हुए। पूरी यात्रा के दौरान वातावरण धार्मिक नारों से गुंजायमान रहा।
10. श्मशान घाट पहुँचते ही भाई-बहिनों ने नवकार महामंत्र का सामूहिक जाप शुरू कर दिया। मुखाग्नि के बाद बहिंने लौट गईं। उसके बाद स्वाध्याय भवन, चेन्नई की रविवारीय धार्मिक पाठशालाओं के संयोजक सुमेर बाघमार की पहल पर सब भाइयों ने मिलकर भजन, कीर्तन, स्तुति, प्रभुभक्ति और तत्वबोध के गीत गाये। श्मशान घाट मानो धर्म-स्थल बन गया। लगभग दो घण्टे तक वैसा ही धर्ममय वातावरण बना रहा। यह प्रेरणीय है कि व्यर्थ की बातें करने की बजाय अन्तिम यात्रा में सम्मिलित होने वाले सभी जन प्रभु भक्ति के गीत गाते रहें।

11. अगले दिन श्रद्धांजलि/गुणानुवाद सभा में सभी धर्मसंघों के प्रतिनिधियों ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई के पूर्व अध्यक्ष ललित बाघमार ने बताया कि बाघमार परिवार में पिछले सौ वर्षों में इस तरह का यह प्रथम पण्डित मरण था। बाघमार परिवार ने संघ और संघ की संस्थाओं तथा जीवदया आदि में इक्यावन लाख रुपये दान देने की घोषणा की। सभा के अन्तिम चरण में बाघमार परिवार के सदस्यों ने स्वप्रेरित होकर मुनिराज के मुखारविन्द से यह प्रत्याख्यान ग्रहण किया कि उनके परिवार में कभी किसी के निधन पर कोई आर्तध्यान नहीं किया जाएगा तथा शोक-कार्यक्रम नहीं रखे जाएँगे। यह अनुकरणीय उदाहरण है। धन्य है प्रमिला जी का पण्डित मरण।

जैन इतिहास में आचार्य हस्ती के सूक्तियाँ

संकलन श्री पी. शिखरमल सुराणा

1. तीर्थंकरों में तन-बल के साथ-साथ अतुल मनोबल और अदम्य आत्मबल होता है।
2. स्वयं द्वारा बांधे हुए कर्म स्वयं को ही काटने होते हैं।
3. अशुभ फल को भोगने में भी धीरता के साथ डटे रहना और शुभ ध्यान से कर्म काटना ही वीरत्व है।
4. शास्त्र रक्षा ही धर्म रक्षा का सर्वोपरि साधन है।
5. तीर्थंकरों के जीवन की यह विशेषता होती है कि वे जिस प्रकार के उच्च विचार रखते हैं, पूर्णतः वैसा ही प्रचार, समुच्चार और आचार भी रखते हैं।
6. वीतराग व कल्पातीत होते हुए भी तीर्थंकरों ने व्यवहार-विरुद्ध प्रवृत्ति नहीं की।
7. तीर्थंकरों के मार्ग में प्रचार का मूल सम्यक् विचार और आचारनिष्ठा ही माना गया है।
8. तीर्थंकरों के उपदेश का मूल लक्ष्य हृदय-परिवर्तन रहता था।
9. हमारी प्रचार-नीति आचार-प्रधान और ज्ञानपूर्वक हृदय-परिवर्तन की भूमिका पर ही आधारित होनी चाहिये।
10. जिनशासन में प्रचार की अपेक्षा आचार की प्रधानता रही।

अध्यक्ष : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

61-63, डॉ. राधाकृष्णन मार्ग, मैलापुर, चेन्नई-600004

श्रद्धा-संस्मरण

गुरुदेव के उपकार को नमन

श्री अशोक एवं राजेश गुगलिया

हम अशोक और राजेश गुगलिया लोणावला निवासी श्री मनसुखलाल जी गुगलिया के पुत्र हैं और उन श्रावक रत्न के दोहिते हैं, जो गुरु हस्ती के परम कृपापात्र, विश्वासपात्र, श्रद्धावान, निष्ठावान गुरु भक्त थे। उनके रोम-रोम में गुरु हस्ती के प्रति श्रद्धा व समर्पणता भरी हुई थी। वे प्रतिवर्ष दो से चार महीने विहार-विचरण के समय एवं चातुर्मास काल में गुरु चरणों की पावन सेवा सन्निधि में रहकर जीवन की धन्यता का अनुभव करते। विरासत में संस्कार प्रदान करने वाले इन उपकारी का नाम श्री रतनलाल जी सा. नाहर हैं, वे बरेली में रहते, लेकिन मन गुरु भक्ति में रमा रहता।

उन्हीं नाना श्री द्वारा प्रदत्त सुसंस्कार हमारी माताश्री (कमलाबाई गुगलिया) को मिले। सुसंस्कारित माताश्री ने पुनीत-पावन कर्त्तव्य का निर्वहन कर जन्म घुट्टी के साथ धर्म की धारा से हमारा अभिसिंचन कर उपकृत किया। फलस्वरूप बालवय से ही हम देव-गुरु-धर्म की ओर उन्मुख हो गये थे। उपकारी माताश्री की प्रेरणा से हमारे अन्तर मानस में गुरु भक्ति के पावन सरोवर में डुबकी लगाने की भावना वाले बीजों का वपन हुआ और गुरु चरणों में दर्शनार्थ जाने, अनुकूलतानुसार विहार चर्या में साथ रहने जैसी प्रवृत्ति भी बन चुकी थी।

जब पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. जीवन के संध्याकाल में पाली से विहार फरमाकर सोजत रोड पधारे थे। तब माताश्री के संकेत से हम भी दर्शनार्थ सोजत रोड़ पहुँचे। वहाँ गुरु हस्ती की संयमशील आभा के पावन दर्शन कर उन तपोपुञ्ज गुरुवर की निर्मल साधना का प्रत्यक्ष सान्निध्य प्राप्त किया। मन हर्षित था, आह्लादित था, रोमांचित था, गद्गद् था। और ऐसी अनुभूति हो रही थी, जैसे इंसान के रूप में साक्षात् भगवन्त की शीतल-अमल छत्रछाया मिल रही हो। अगले दिन आचार्य भगवन् का विहार सोजत रोड़ से निमाज की ओर होने वाला था। हमने जब बम्बई लौटने के पहले मांगलिक फरमाने के लिये खड़े होकर निवेदन किया तो पूज्य गुरुदेव ने मांगलिक प्रदान नहीं की, और दया पालने का संकेत किया। हमारी भावना बिना मांगलिक लिये घर जाने की नहीं थी, हमने बम्बई जाना स्थगित कर दिया, और अगले दिन हम भी विहार चर्या में सम्मिलित हो गये। पूज्य गुरुदेव की

अशक्तता से संतवृन्द पूज्य श्री को डोली में बिठाकर विहार कर रहे थे। उस समय हमारा मन भी आतुर हुआ कि डोली में सहयोग कर किंचित् सेवा का लाभ लिया जाय और सुखद क्षणों की अनुभूति करें। हमने सहवर्ती सन्त श्रद्धेय श्री गौतम मुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. से इस हेतु निवेदन किया। प्रत्युत्तर में उन्होंने फरमाया कि यदि डोली में सहकार करने की भावना है तो पहले संयम स्वीकार करना होगा। यह सुनकर हम मन मसोस कर रह गये, क्योंकि दीक्षा अंगीकार करने जैसा सामर्थ्य हममें जो नहीं था। पूरी विहार यात्रा में हम दोनों भाई साथ-साथ चलते रहे। हमारे मन में एक ही भावना हिलोरें मार रही थी कि ऐसे भगवद् स्वरूप गुरुदेव की सेवा करने का यह पावन अवसर मिलता तो कर्मों की निर्जरा होती। इतने में बगड़ी गाँव आ गया। हम मांगलिक के लिये दोनों भाई खड़े हो गये। गुरुदेव ने कृपा कर मंगल पाठ सुनाया। मंगल पाठ सुन हम बम्बई के लिये प्रस्थान कर गये और हम नियत तिथि से एक दिन बाद बम्बई पहुँचे।

बम्बई में हम जिस स्थान पर पेइंग गेस्ट के रूप में रह रहे थे, उसके मालिक की शराब पीने की आदत तो थी ही, किन्हीं कारणों से उनकी एक दिन पहले यानी हमारे विहार में सोजतरोड़ से बगड़ी तक साथ रहने के दिन असमय मृत्यु हो गई थी। पेइंग गेस्ट के रूप में इन्द्राज से हमें पुलिस तलाश कर रही थी। हम ज्योंहि बम्बई पहुँचे, त्योंहि पुलिस ने हमें घेर लिया और गहराई से सारी पूछताछ की। प्रमाण के तौर पर हमने उनको पूज्य गुरुदेव के दर्शन हेतु जाने एवं उस दिन बम्बई में नहीं होने वाली बात के साथ यात्रा के टिकट बताये। टिकट देखकर हम दोनों पर विश्वास किया और छोड़ दिया।

उन दूरदर्शी पूज्य आचार्य भगवंत श्री हस्तीमल जी म.सा. की अनन्त कृपा से अनिष्ट घटना से हमारा बचाव हो गया और रह-रहकर आज भी वह दिन स्मृति में है कि पूज्य गुरुदेव श्री को जैसे भविष्य में होने वाली घटना का पूर्वाभास हो गया हो। इसी कारण मांगलिक उस दिन प्रदान न कर, अगले दिन फरमाई थी। यदि पहले दिन पूज्य गुरुदेव मांगलिक सुना देते तो उस मकान मालिक की मृत्यु के समय पेइंग गेस्ट के रूप में वहीं होते और मर्डर के केस में निश्चित ही आरोप हम पर आता, और न जाने क्या स्थिति बनती, जिसकी कल्पना मात्र से मन में आज भी सिहरन सी दौड़ जाती है। मगर भविष्य द्रष्टा पूज्य गुरुदेव ने पहले दिन मांगलिक नहीं सुनाकर हम पर अनन्त उपकार किया। उनके उपकारों से आज भी हमारा मस्तक श्रद्धा से नत है।

-जूना खण्डाला रोड़, लोणावला (महा.)

हस्ती जन्मशती

तुम्हारे दीन दासों को तुम्हारा ही सहारा है

श्री दिलरूपचन्द भण्डारी

विकल प्राणों के वे जीवन थे, दुःखियों के सहारे थे।
हस्ती थे स्वाध्याय का रूप-अवलम्बन हमारे थे।।
हस्ती क्या थे? कौन थे? कैसे थे? कह सकता, नहीं कोई।
जब आती याद तो फिर, मौन रह सकता नहीं कोई।।
बड़े ही थे विलक्षण गुण, न कोई थाह पाता था।
ठगा देखता रहता था, जो सान्निध्य पाता था।
था हस्ती से आत्मा की दृष्टि से, इक प्रेम का नाता।
बड़ा सौभाग्यशाली था, जो उनके पास था जाता।।
था कोमल और मधुर स्वर, प्रेम से भीगी हुई बोली।
धनी-निर्धन की भर देते थे, गुरु आनन्द से झोली।।
अहर्निश आत्मा में लीन, रहते थे महाज्ञानी।
बड़े थे प्रेम के दानी, नहीं थे लेश भर मानी।।
निरन्तर ज्ञान का झरना, बहा करता था बातों में।
छलकता प्रेम का प्याला था, निर्मल दिव्य बातों में।।
हटा देते थे मन बाहर से, अन्तर में लगाते थे।
वचन और कर्म मन की एकता, रखना सिखाते थे।।
वे साधनों के रहस्यों को, सदा खुलकर बताते थे।
चरित उज्ज्वल बने दिन-दिन यही संयम सिखाते थे।।
संयमरक्षा में थे सदा राजी, बड़े सन्तुष्ट रहते थे।
सदा समभावना से दुःख-सुख के द्वन्द्व सहते थे।।
सहा जाता न था दुःख, उनसे किसी जीव का कोई।
तड़पती थी शमा जो, देखती जलता शलभ कोई।।
लहर ऊपर से उठती थी, हृदय गम्भीर सागर था।
हर एक छोटा-बड़ा अच्छा-बुरा उनको बराबर था।।

सदा ध्यान का ही रहा, आधार एक उनको।
वो प्यारे थे सभी को और सबसे प्यार था उनको।।
पिघलता था हृदय नवनीत सम, सुन आर्त क्रन्दन को।
बड़े ही प्रेम से वे सान्त्वना, देते दुःखी जन को।।
अनोखी ज्ञान भक्ति की, मधुरिमा उनमें थी न्यारी।
था गौरव आत्मबल का, थी तितिक्षा उनमें बलिहारी।।
विपुल संकट में किसी को देखते, तो नयन भर लाते।
मिटाते वेदनाएँ और नया आनन्द दे जाते ।।
नहीं अब वह सुनहरे दिन, कभी जीवन में आयेंगे।
कहाँ सत् चित् परम आनन्द, की यह मूर्ति पायेंगे।।
बस अब तो दो यही वरदान, अब तक की शरीअत (कर्म) को।
सदा पालन करें और सार्थक कर दें नसीहत को।।
हस्ती निश दिन है तुमसे प्रार्थना, कातर करुणा मन की।
जहाँ भी हो वहीं से लेते रहना, सुध दुःखी जन की।।
दयामय आप जैसा कौन, हित-चिन्तक हमारा है।
तुम्हारे दीन दासों को, तुम्हारा ही सहारा है।।

-3 च3, नन्दनवन नगर, जोधपुर-342008 (राज.)

मुक्तक

श्रीमती कंचन सुराणा

गूंगा इंसान कभी गीत गा नहीं सकता,
ठहरा हुआ पांव कभी मंजिल पा नहीं सकता,
हस्ती गुरु से रोशनी मिल गई जिसको,
वो अंधेरे में ठोकर खा नहीं सकता।।

मझधार में भी किनारा मिल गया,
तूफान में भी सहारा मिल गया।
गजब है हस्ती गुरु के नाम का करिश्मा,
अंधेरे में भी उजाला मिल गया।।

-सुराणा की बड़ी पोल, नागौर (राज.)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (11)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी (अध्यात्म-चेतना वर्ष) के उपलक्ष्य में अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग एक-तीर्थंकर खण्ड)** के आधार पर मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह ग्यारवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 दिसम्बर 2010 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त शताब्दी वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-1

(पृष्ठ 671 से 784 तक से प्रश्न)

इन प्रश्नों के उत्तर 'आ' अक्षर से दीजिए।

1. गुणशील चैत्य के पास अन्य तीर्थियों के बहुत से.......थे।
2. भगवान् ने अनेक भव्यों को श्रावक धर्म के पथ पर.....किया।
3. संख्या का अंतर होने पर भी दोनों परम्पराओं में मौलिक भेद नहीं हैं।
4. प्रियदर्शना को मिथ्यात्व के उदय से.....जानकर कहा।
5. चर्म से मंढा हुआ शरीर सभी.......का घर है।
6. यही मानवता का मूल सिद्धान्त और धर्म की.......है।
7. आकाश को.......करती हुई दोनों सेनाएँ आपस में भिड़ गईं।
8. उनके मन में उत्तम वस्त्रों के प्रति........नहीं होती थी।
9. ग्रह तो केवल.....में शासन की जो गति होने वाली है उसके दिग्दर्शक मात्र हैं।

10. उदायन ने समभाव से संथारा.....अनशन धारण कर निर्वाण प्राप्त किया।

11. दधिवाहन ने मन्त्रिपरिषद् की....बैठक बुलाकर गुप्त मंत्रणा की।

12. .....में परस्पर सदा ग्रह कलह घर किये रहेगा।

13. श्रावस्ती में छः माह तक.....लेकर तेजोलेश्या प्राप्त की।

14. त्रिपिटक में......नेता को मंखलि गोशालक कहा है।

15. ....एक समय में दो उपयोग होने में हैं।

इन प्रश्नों के उत्तर अंकों में दीजिए:-

16. अभयकुमार ने एक-एक कोटि स्वर्ण मुद्राओं की....राशियाँ लगवाई।

17. रथमूसल संग्राम में.....सैनिकों का संहार हुआ।

18. ......सुन्दर नगर और इतनी ही बड़ी-बड़ी खदाने थीं।

19. प्रभो! गत रात्रि के अवसानकाल में मैंने ये....अशुभ स्वप्न देखे हैं।

20. कूणिक ने संवाददाता को....रजत मुद्राओं का प्रीतिदान दिया।

21. बुद्ध का निर्वाण ईस्वी पूर्व ....में हुआ।

22. वैशाली गणतन्त्र के.....सदस्य थे जो राजा कहलाते थे।

23. मेरे निर्वाण के..... वर्ष बीत जाने पर विक्रमादित्य नामक राजा होगा।

24. जैन श्रमणों के लिए.....प्रकार के कल्प बताये गये हैं।

25. चंडप्रद्योत ने....राजाओं के साथ राजगृह पर आक्रमण किया।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (9) का परिणाम

जिनवाणी सितम्बर, 2010 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 314 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्त विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- श्रीमती कुमकुम जी जैन-सवाईमाधोपुर(राज.)

द्वितीय पुरस्कार- श्रीमती सुशीला जी भण्डारी-बैंगलोर (कर्नाटक)

तृतीय पुरस्कार-श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन-मन्दसौर(मध्यप्रदेश)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. श्री धर्मेश पुनमिया जैन-पाली-मारवाड़ (राज.)
2. श्री नरेन्द्र जी बम्ब-मुम्बई (महा.)
3. श्रीमती मधुबाला प्रमोद जी बोहरा-इचलकंरजी (महा.)
4. श्रीमती प्रमिला जी बोहरा-जैतारण (राज.)

5. श्रीमती किरण जी जैन-होशियारपुर (पंजाब)

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता-Aarti Jain-Hoshiarpur, Punjab, Aarti Rajendrakumarji Mutha-Amravati, (M.H), Abha Jain-Alwar, Abhilasha Hirawat-Mumbai, Adithi Jain-Indore, Anila Bhandari-Beawar, Anita Atul Munot-Ichalkaranji, Anita Satishchandji Duggar-Dhulia, Anjali Mehta-Delhi, Anjana Katkani-Dewaj (M.P), Anju Bhandari-Jodhpur, Anju Jargad-Jaipur, Anu Jain-Hoshiarpur, Punjab, Aruna Jain-Hoshiarpur, Punjab, Aruna Tikam Chand Jain-Aligarh, Tonk, Aruna.P.Baid-Amravati, (M.H), Babita Sancheti-Alwar, Babulal Jain-Jaipur, Basanti Surana-Nagaur, Beena Mehta-Jodhpur, Bharti Gandhi-Jodhpur, Bhavika Shah-Belgaum, Chameli Jain-Durg, chattisgarh, Chanchal Bai Devada-Bangalore, Chanchal Betala-Rajasthan, Chandan Mal Palrecha-Jodhpur, Chandani Jain-Indore, Chandra Devada-Bangalore, Chandra Pokhran-Ajmer, Chandrakala Mehta-Bangalore, Chandrakanta Lunawat-Shimoga, Chetna Bothra-Mumbai, Chinmaya Jain-Durg, chattisgarh, Chitra Jain-Sawaimadhopur, Darshika Kanwarlalji Tatia-Jalgaon, Dasarathmal chordia-Bangalore, Deepmala Singhvi-Pali, Dinesh Buddhiprakash Jain -Bhesodamandi, mandsor (M.P), Divya Daga-Jaipur, G.S.Jain-Aligarh, Tonk, Ghewarchand Chajjed-Bellary, Gunmala Jain-Chittorgarh, Heera Kanwar Hundiwal-Chennai, Heerabai Rameshchand Karnawat-Ahemadnagar, Hem Raj Surana-Jaipur, Hemant Manoharlal Nahar-Chittorgarh, Hemlata Kherada-Bhilwara, Hemlata Prakashchand Kothari-Beawar, Icheraj Banthiya Nagapattnam T.N, Indu Kamleshji Jain-Mumbai, Janesh Surana-Pali, Javer Narendra Shah-Belgaum, Jaya Bhandari-Beawar, Jaymala Kankariya-Pali, Johari Mal Chajjed-Jodhpur, Jyoti Bhansali-Bangalore, kamal chordia-Jaipur, Kamala Modi-Jodhpur, Kamla Singhvi-Jaipur, Kamla Lodha-Jaipur, Kamla Surana -Jodhpur, Kamla Surana -Pali, Kamladevi Lunkad-Jodhpur, Kamlesh Kumar Jain-Bundi, Kanak Jain-Delhi, Kanchan Bhavarlal sanghvi-Jalgaon, Kanchanbai Lodha-Nasik, Kanhaiyalal Jain-Bhilwara, Kanta Betala-Jaipur, Kanwal Raj Mehta-Jodhpur, Kashish Jain-Dhulia, Kavita Mehta-Shimoga, Kiran Kothari-Jaipur, Kiran Kumbhat-Jodhpur, Kiran Prakashchand Kothari-Bodwad (M.H), Kiran Tated-Dewaj (M.P), Komal Ankur Kothari-Baroda Gujarat, Kuntal Devi Jain-Jaipur, Kusum Singhvi-Jodhpur, Lalita Nemichandji Runwal-Bijapur, Lata.S.Aanchaliya-Dhulia, Laveena Loonker-Jodhpur, Leelabai Prakashchand Munot-Ichalkaranji, Leelabai.A. Kothari-Ahemadnagar, Madanlal.S.Sancheti-Hydrabad, Madhubala Jivankumarji Ostwal -Nasik, Mahendra Kumar jain-Alwar, Malliga Nirmal-Vellore, Mamta Bhandari-Nagaur, Mamta Chajjer-Samdari (Barmer), Manila Parakh-Jaipur, Manisha Bhandari-Ichalkaranji, Manisha Lalchandji Gogad-Bailhongal, Manju Bhandari-Beawar, Manju Dilip Jain-Mumbai, Manju Jain-Hindaun City, Manju Kanstiya-Kolkata, Manju Kothari-Dudu, Jaipur, Manju N Bafna-Jalgaon, Manjula vasanth kumar Jain-Mumbai, Manoj Kothari-Udaipur, Maya Alijar-Secundrabad, Mayuri.S.Jain-Dhulia, Meena Jain-Sawaimadhopur, Meena Rajkumarji Nahar-Ichalkaranji, Meena Vijay

Bora-Mumbai, Milap Parasmal lunawat-Ahmedabad, Monika Deshlehra-Secundrabad, Monika Surana-Beawar, Monika Surana-Chennai, Monu Mehta-Pipar City, Mridula Kumbhat-Jodhpur, Naresh Surana-Nagaur, Nathmal Kothari-Durg, chattisgarh, Neelam Chiper-Jaipur, Neelu Jain-Ludhiana, Neeta Singhvi-Jodhpur, Nenchand Bafna-Jodhpur, Nikita Kothari-Dudu, Jaipur, Nilam Kankaria-Nagaur, Nilima Yograjji Chopda-Ichalkaranji, Nirmala Heerawat-Jaipur, Nirmala Kothari-Dudu, Jaipur, Nirmala Rajendraji Bora-Ichalkaranji, Nirmala Surana-Bikaner, Nisha Jain -Aligarh, Tonk, Nisha Lunkad-Kota , Nutan Ajitji Bhandari-Ichalkaranji, Padam chand munot-Jaipur, Padma.R.Bohra-Raichur, Pankaj Bhandari-Jodhpur, Parasmal Ratan Bohra-Balod, Chattisgarh, Parasmal.D.Baghmar-Balotra, Barmer, Pinki Jain-Jaipur, Pista Golecha-Jaipur, Pooja Nitin Bora-Ichalkaranji, Prabha Gulecha-Bangalore, Prabha Mukesh Jain-Alwar, Prakash Chand Nahar-Kawardha(C.G), Prakashbai Bhurawat-Bhandara, Pramila Babulalji Pokhra-Dhulia, Pramila Kankariya-Jodhpur, Pramila Kothari-Jodhpur, Pramila mehta-Dudu, Jaipur, Pramila Sajjanrajsa Mehta-Bangalore, Prasan Kothari-Jodhpur, Praveen Chand Jain-Karauli, Preeti Khincha-Jaipur, Preeti Loonker-Jodhpur, Prem Jain-Alwar, Premlata.v.Gadiya-Pune, Priti Jain-Bharatpur, Rajasthan, Priyanka Bagmar-Merta City, Priyanka Gogad-Belgaum, Priyanka Kothari-Dudu, Jaipur, Priyanka Mukesh Chopda-Ichalkaranji, Pushpa Hastimal Golecha-Beawar, Pushpa Jain -Jaipur, Pushpa Jain -Pali, Pushpa Navlakha-Jaipur, Pushpa Prakashchand Kankariya-Raichur, R.chandra Bothra-Chennai, Rajendra Nirmala Chopra-Jabalpur, Rajkumari Jain-Delhi, Rajkumari Lodha-Jaipur, Rajmal Jain Pichholiya-Gangapur, Bhilwara, Rajul Jain-Sawaimadhopur, Rajul Rameshchandji Kothari-Dhulia, Ranulal kochar-Nasik, Reema Jain-Ludhiana, Rekha Bhimsingh Jain-Kota, Rekha Daga-Indore, Rekha Jain-Aligarh, Tonk, Rekha Surana-Nagaur, Rishabh Jain-Bundi, Rishika Mehta-Delhi, Ritu giriya-Secundrabad, Ruchika Lunawat-Jodhpur, Sadhana Gugale-Ichalkaranji, SajjanDevi Tated-Secundrabad, Sangeeta Khabiya-Mysore, sangeetha Jain-Gaziabad U.P, Sangita Sanjaykumar Mugdiya-Bhusawal, Jalgaon,Sangita.A.Singavi-Nasik, Sanju Daga-Jaipur, Santosh kothari-Jaipur, Sarla Golecha-Beawar, Sarla santoshji Bumb-Jalgaon, Saroj Khabiya-Mysore, Saroj Nahar-Delhi, Saroj Parasmal Runwal-Dhulia, Seema Ajinder Jain-Ludhiana , Seema Dhing-Udaipur, Seema Dinesh Jain-Sawaimadhopur, Seema Dineshkumarji Ostwal-Jalgaon, Seema Jain-Aligarh, Tonk, Shakuntala Bohra-Secundrabad, Shakuntala Jain-Indore, Shakuntala Kushalchand Khinvarsa-Jalgaon, Shanti BuddhiprakashJain-Bhesodamandi, mandsor (M.P), Sharda Bagmar-Merta City, Shashikanta Jain-Bharatpur, Rajasthan, Sheela Surana-Jaipur, Shelly Kumbhat-Jodhpur, Shilpa Gandhi-Jodhpur, Shiraya Mehta-Shimoga,Shital Nileshji Chajjed-Khargaon (M.P), Shobabai Sagarmalji Kothari-Dhule, Shobha Nandlalji Gugale-chalkaranji, Siddhi Bafna-Jodhpur, Smita Nilesh Muthiyan-Ichalkaranji, Smita Rajeshji Runwal-Bijapur, Snehlata Pravinji Shah-Belgaum, Subhash chand Mohanji Dhadiwal-Mumbai, Sudha Pankajji

Jain-Indore, Sudha Sancheti-Ajmer, Sugan Chand Chhajer -Jodhpur, Suman Daga-Bhopal, Sumat Jain-Karauli, Sunanda Lodha-Dhule, Sunil Jain-Mysore, Sunita Doshi-Beawar, Sunita Dulaj-Jaipur, Sunita Kankariya-Ahmedabad, Sunita Navlakha-Kota , Sunitha Y Singhvi-Chennai, Suraj Bohra-Jodhpur, Surekha.A.Bhandari-Nasik, Suryakala Bagmar-Chennai, Sushila Begani-Bikaner, Sushila Gulecha-Jodhpur, Sushila Hirawat-Jaipur, Tara Jain (Sipani)-Mangalore, Ugama Doshi-Secundrabad, Uma Jain-Delhi, Upma Choudhary-Ajmer, Urmila Kankariya-Jodhpur, Urmila Mehta-Jaipur, Usha Buddhiprakash Jain-Bhesodamandi, mandsor (M.P), Usha Lunawat-Ajmer, Usha Praveenji Bardiya-Dhulia, Vandana Khincha-Surat, Vandana Punamiya-Pali, Varsha Dosi-Merta City, Vibha Bafna-Jodhpur, Vidya Singhvi-Badnawar, M.P, Vijaimal Mehta-Jodhpur, Vikas Bamb-Mumbai, Vimala jain-Jaipur, Vimala Surana-Bewar, Vimla G Jain-Bodwad (M.H), Vimla Gang-Ahmedabad, Vimla N Mehta-Jodhpur, Vimla Raunlal Kochar-Nasik, Yashu jain-Sawaimadhopur.

24.5 अंक प्राप्तकर्ता-Anita Jain-Jaipur, Bharati sunilji surpuriya-Ichalkaranji, Bimla Kumari Heerawat-Jaipur, Chirag Jain-Gangapur City, Hansa Devi Surana-Bikaner, Kanchan Nahata-Beawar, Mamta Kripalchand Jain-Sawaimadhopur, Monali Mishrilal Pipada-Ichalkaranji, Nirmala Vijayji Gundecha-Ichalkaranji, Pramila Prakash Mehta-Ajmer, Pratibha Pradeepji Gandhi-Pune, Shakuntala Hinger-Pali, Shakuntala Katariya-Jalgaon, Shashi Prabha Burad-Beawar, Shella Sethiya-Dhulia, Sonia Kothari-Chhinwara (M.P), Sudha Daga-Bikaner, Sureshchand Jain-Alwar, Sushila Inderchand Ranka-Jalgaon, Sushila Kantilalji Runwal-Pune, Sweety Golecha-Beawar, Ugama Devi Duga-Bangalore, Vimala Bohra-Jaipur.

24 अंक प्राप्तकर्ता- Basanta Madanlal Sanklecha-Dhulia, Basantibai Parakh-Durg, chattisgarh, Chandrakala Dilipraj Ranka-Bhadgaon, Jalgaon, Hema Bagmar-Secundrabad, Kamla Devi Satia-Ajmer, Lilabai Sancheti-Raichur, Manjulata Jamer-Jaipur, Meena Chordia-Chennai, Naintara Ratanlal Bafna-Jalgaon, Pooja Jain -Alwar, Pravina Kothari-Jaipur, Premlata Lodha-Jaipur, Priyanka Jain-Jaipur, Pushpa Golecha - Beawar, Rajani Jain-Sawaimadhopur, Sarika Srikant Bhandari-Ichalkaranji, Sarla Shantilalji kakariya-Jalgaon, Shashi Chowdhary-Jodhpur, Suganbai Manakchandji Sand-Jalgaon, Surekha Rajeevji Choradia-Jalgaon.

23.5 एवं उससे कम अंक प्राप्तकर्ता-Pushpa Gautamji Bafna-Chennai, Premkanta Kothari-Jaipur, Manju Sandeep Mutha-Ichalkaranji, Prakash Devi Ranka-Madders, Trupti Pritam Bora-Ichalkaranji, Usha surana-Jaipur, Santra Jain-Sawaimadhopur,Susheela Bhandari-Chennai, Sushila Gang-Jodhpur, Renumal Jain-Jodhpur, Shobha Karnawat, Aruna katariya-Pali, Chuki Devi Darda-Jodhpur, Pushpa Lunawat-Nagaur, Sangeeta Darda-Jodhpur, Shobha Kawad-Pali.

बाल-स्तम्भ

जयघोष और विजयघोष मुनि

मुथा श्री चांदमल जी राठौड़

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 दिसम्बर 2010 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

ऐतिहासिक नगरी वाराणसी की अपने समय के सुन्दरतम नगरों में गणना होती थी। यहाँ पर काश्यप गोत्रीय जयघोष और विजयघोष नामक दो ब्राह्मण रहते थे। जिनकी विद्वत्ता की प्रशंसा सिर्फ वाराणसी में ही नहीं, अपितु आसपास के सुदूर देशों में भी प्रसृत थी। दोनों भाई यज्ञ और वैदिक कर्मकाण्डों में निष्णात थे। जयघोष को यज्ञ वगैरह में बहुत श्रद्धा भक्ति थी। उसकी दिनचर्या का अधिक समय याज्ञिक कर्मकाण्डों में ही व्यतीत होता था। इतनी श्रद्धा के साथ स्वयं यज्ञ करने पर भी इनके मन को तृप्ति नहीं होती थी। मन में कहीं न कहीं कुछ कमी ही महसूस होती थी। वे दोनों आत्मिक शांति की खोज में रत थे।

काल अपनी अविरल गति से बहता है उसे न तो किसी ने रोका है और न ही वह किसी के रोके हुए रुका है। एक दिन जयघोष नदी पर स्नान करने गये तो वहाँ उन्होंने देखा कि एक सर्प मेंढ़क को निगल रहा है। इतने में एक कुरर पक्षी आया और उसने साँप को पकड़ा। साँप मेंढ़क को निगल रहा है और कुरर पक्षी साँप को निगल रहा है। ऐसी दुःखदायी स्थिति देखकर जयघोष विचार करने लगा- 'क्या यही संसार है? क्या सभी एक दूसरे के खून के प्यासे हैं? जिसमें ताकत हो वह कमजोर को समाप्त कर देता है।' संसार की ऐसी दुःखदायी स्थिति देखकर वह विरक्त हो गया, परन्तु उसे सही मार्ग नहीं

मिल रहा था। इतने में उसकी दृष्टि गंगा के दूसरे तट पर उपदेश दे रहे उत्तम मुनियों पर पड़ी। उन्होंने मुनियों का उपदेश सुना तो कुछ शांति का अनुभव हुआ और निर्ग्रन्थ प्रव्रज्या अंगीकार कर ली। वे पंच महाव्रत रूप यज्ञ का पालन करने लगे। श्रमण जयघोष मास-मासखमण की तपस्या करते हुए अपनी आत्मा पर लगे हुए कर्म मैल को हटाकर शुद्ध स्वरूप प्रकट करने के कार्य में तनमन से लग गये। पंच महाव्रत रूप भाव यज्ञ में अज्ञान एवं कषायों की आहुति देने लगे।

प्राचीन काल में कर्मकाण्डी मीमांसक 'यज्ञ' को ब्राह्मण के लिए श्रेष्ठतम कर्म मानते थे और इन यज्ञ समारोहों में पशुबलि उत्साहपूर्वक दी जाती थी। जयघोष मुनि के गृहस्थ पक्षीय सहोदर भाई विजयघोष ऐसे ही अनुष्ठानों में लगे हुए थे।

एक बार श्रमण जयघोष विहार करते हुए फिर वाराणसी नगरी आये। मासखमण के पारणे का दिन था। भिक्षा की गवेषणा करते हुए अनायास ही एक जगह यज्ञ मंडप में पहुँच गये। वहाँ देखते हैं कि उनका भाई विजयघोष बहुत बड़ा यज्ञ कर रहा है। तपस्या से बने कृश शरीर के कारण जयघोष को विजयघोष पहचान नहीं सका। उसने तिरस्कारपूर्वक भिक्षा देने से इन्कार कर दिया। निर्ग्रन्थ मुनि तो मान-अपमान के चक्र से मुक्त होते हैं। अतः समभावी जयघोष मुनि को कोई दुःख नहीं हुआ। विजयघोष के कल्याणार्थ और उसका अज्ञान दूर करने के लिए मुनि ने कहा- "हे विप्र! तुम मुझे भिक्षा दो, यह मैं कुछ नहीं कहता। मुझे तुम्हारी भिक्षा से कोई प्रयोजन नहीं है, परन्तु तुम्हें यह जानना चाहिये कि-"तुम जो यज्ञ कर रहे हो वह वास्तविक यज्ञ नहीं है। सच्चा यज्ञ वही है जिसमें विषय, कषाय, अज्ञान एवं वासनाओं को ज्ञानाग्नि में जलाया जाता है।तुम वेद, यज्ञ, ज्योतिष और धर्म के मुख को तथा स्व-पर आत्मा का उद्धार करने वालों को नहीं जानते।"

ब्राह्मण किसे कहते हैं, इसके सन्दर्भ में मुनि ने कहा-जो ब्राह्मण बाहर से तो शान्त दिखाई दे, परन्तु भीतर से जिसके कषाय की अग्नि जल रही हो वह स्व-पर का उद्धार करने में समर्थ नहीं हो सकता। समभाव से ही कोई श्रमण, ब्रह्मचर्य से ब्राह्मण, ज्ञान से मुनि और तप से तपस्वी कहलाता है। मनुष्य कर्म से ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होता है, जन्म से नहीं। इस प्रकार विविध उदाहरण देकर विशद व्याख्या करके समझाते हुए उपदेश दिया गया

कि- 'सच्चा ब्राह्मण वही है जो अग्नि से तप कर शुद्ध हुए स्वर्ण की तरह विशुद्ध है, जो राग-द्वेष और भय से सर्वथा मुक्त है तथा त्रस स्थावर जीवों को सम्यक् प्रकार से जानकर उनकी मन, वचन और काया से हिंसा नहीं करता।' ये शब्द विजयघोष के संतप्त मानस पर शीतल वर्षा का काम कर रहे थे। वे मुनि के कथन से पूर्णतः सहमत हो गये और हाथ जोड़कर कहने लगे- "आपने मुझे ब्राह्मणत्व का यथार्थ दर्शन कराया है। आप ही सच्चे याज्ञिक हैं। आप ही वेदों के सच्चे ज्ञाता हैं, आप ही ज्योतिषांगों के वेत्ता हैं और आप ही धर्मों के सच्चे पारगामी हैं। आप ही स्व-पर का उद्धार करने में समर्थ हैं। अतः 'हे मुने! आप भिक्षा ग्रहण कर हमें अनुगृहीत कीजिये।"

"हे द्विज! मुझे तुम्हारी भिक्षा से कोई प्रयोजन नहीं है। मैं तो यह चाहता हूँ कि तुम शीघ्र ही गृहस्थाश्रम का त्याग कर श्रमणत्व को अंगीकार करो, जिससे तुम्हें संसार सागर में भ्रमण न करना पड़े तथा शीघ्र ही आत्मा के वास्तविक सच्चे सुखों को प्राप्त कर सको।' युक्तिपूर्वक दिये गये प्रतिबोध से विजयघोष प्रतिबुद्ध हुए और जयघोष मुनि के पास दीक्षा अंगीकार की। फिर श्रमण धर्म की सम्यक् साधना करके जयघोष और विजयघोष दोनों भाई शाश्वत सुखों को प्राप्त कर सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हुए।

-'बड़ी साधु वन्दना कथा संग्रह' से संकलित

प्रश्नः-

1. जयघोष और विजयघोष को किस प्रकार का असंतोष था?
2. संसार का कैसा परिदृश्य कहानी में दर्शाया गया है?
3. निर्ग्रन्थ मुनि मान-अपमान के चक्र से मुक्त होते हैं- समझाइये।
4. मूल शब्द बताइये-याज्ञिक, वैदिक, मीमांसक, वास्तविक, अनुगृहीत।
5. एक शब्द में उत्तर दीजिये-
   (क) संसार में अनुरक्ति न रखने वाला।
   (ख) कल्याण हेतु कृत कार्य।
   (ग) दुःख-सुख में सम रहने वाला।
   (घ) प्रतिबोध को प्राप्त करने वाला
6. कथानुसार श्रमण, ब्राह्मण, मुनि और तपस्वी किसे कहते हैं?
7. कौन स्व और पर को उद्धार करने में समर्थ नहीं होता?

(बाल स्तम्भ, सितम्बर 2010 का परिणाम पृष्ठ सं. 76 पर देखें)

योगी महापुरुष

श्रीमती प्रेमलता सिंघवी

प्रातः स्मरणीय 1008 पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब की जन्म शताब्दी को अध्यात्म चेतना वर्ष के रूप में पूरे देश में मनाया जा रहा है।

आचार्य हस्ती इस शताब्दी के महान योगी महापुरुष थे। गुरुदेव के प्रति मेरा अनुभव है कि जिस किसी व्यक्ति ने उनके दर्शन जीवन में एक बार भी किए होंगे तो वह व्यक्ति उनके जीवन से प्रभावित होकर उनके प्रति श्रद्धावान हो गया होगा। उसके जीवन का वह क्षण स्मरणीय हो गया होगा।

गुरु के जीवन में आध्यात्मिक चेतना की ऐसी मशाल जलती रहती थी कि अज्ञानी से अज्ञानी व्यक्ति भी उनके सम्पर्क में आकर अपनी आत्मा के किसी एक कोने में ज्ञान का एक छोटा सा दीप अवश्य जला लेता था।

गुरु हस्ती की वाणी में ऐसा जादू था कि दुःखी से दुःखी व्यक्ति उनके दर्शन व जिनवाणी सुनकर अपने दुःख को सुख में बदल सकता था। वाणी सुनकर वह समझ जाता कि यह बाहरी सुख-दुःख जीवन में गौण हैं, हमारी आत्मा में अनन्त शक्ति है। उसमें अत्यन्त सुख व शान्ति का वास है। दुःख सुख हमारे जीवन को प्रभावित नहीं कर सकेंगे, हमें आत्म-शक्ति को जागृत करना है, क्योंकि गुरु ने हमें चैतन्य का ज्ञान करवाया, तथा पर-पदार्थ का स्वरूप समझाया। जो तेरा है नहीं उसे अपना मानकर दुःख करना मूर्खता है।

गुरुदेव के दो फरमान सामायिक एवं स्वाध्याय को हम अगर अपने जीवन का लक्ष्य बना लें तो हमें अपने चैतन्य का ज्ञान हो जाएगा। सच्ची सामायिक जीवन में समता, दया, अहिंसा जैसे सद्गुणों का समावेश करवा देगी। जिससे आत्मा में चिपके हुए कर्म पुद्गल दूर हो जायेंगे। गुरुदेव ने हमें जीवन जीने का सहारा सामायिक स्वाध्याय के रूप में दिया। इसे हम अपने जीवन में अपनायेंगे तो महान योगी महापुरुष का अध्यात्म चेतना शताब्दी वर्ष मनाना सार्थक होगा। गुरु के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित होगी।

-धर्मपत्नी श्री चन्द्रराज जी सिंघवी,
बासनी इण्डस्ट्रियल एरिया, जोधपुर (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

जैन धर्म में आचारशास्त्रीय सिद्धान्त (खण्ड-1)- डॉ. कमलचन्द सोगाणी ***अनुवादक***- श्रीमती शकुन्तला जैन, ***प्रकाशक***- जैन विद्या संस्थान, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी-322220 (राज.) फोन नं. 07469-224323 ***पृष्ठ***-165, ***मूल्य*** 400 रुपये, ***सन्***-2010

डॉ. कमलचन्द सोगाणी की सन् 1967 में जीवराज जैन ग्रन्थमाला से प्रकाशित पुस्तक "Ethical Doctrines in Jainism" जैन विद्या के अभ्यासियों के द्वारा विश्व में सर्वत्र आदृत हुई। उसी के हिन्दी अनुवाद का एक खण्ड हिन्दी पाठकों के लिए जैन विद्या संस्थान ने प्रकाशित किया है। हिन्दी अनुवाद श्रीमती शकुन्तला जैन ने किया है, किन्तु उसका सम्पादन स्वयं सोगाणी जी ने किया है। मूल अंग्रेजी पुस्तक के दस अध्यायों में से इस हिन्दी प्रथम खण्ड में चार अध्यायों का अनुवाद सम्मिलित हुआ है। प्रथम अध्याय में जैन आचार श्री ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पर प्रकाश डाला गया है। द्वितीय अध्याय में आचार के तात्त्विक आधार की चर्चा की गई है तथा तृतीय अध्याय में आचार के आध्यात्मिक पक्ष सम्यग्दर्शन एवं सात तत्त्वों का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय गृहस्थ के आचार से सम्बद्ध है जिसमें उसके 12 व्रत्तों, प्रतिमाओं एवं सल्लेखना की चर्चा की गई है। पुस्तक की यह विशेषता है कि इसमें तत्त्वमीमांसा एवं आध्यात्मिकता दोनों को साथ लेकर आचारशास्त्र का निरूपण किया गया है, क्योंकि आचारशास्त्र तात्त्विकचिन्तन और आध्यात्मिक अनुभव को जोड़ने वाली महत्त्वपूर्ण कड़ी है।

जिनशासन की दिव्य विभूतियाँ- प्रखर व्याख्याता श्री ज्ञानमुनि जी म.सा., ***प्रकाशक***- श्री मल्लेश्वरम् वर्द्धमान स्थानकवासी जैन संघ, 7th Cross, Sampige Road, मल्लेश्वरम् बैंगलोर-3, फोन : 080-23464616, ***पृष्ठ***-16+8+512, ***मूल्य***-संस्कार निर्माण एवं आत्मोत्थान

इस पुस्तक में भगवान महावीर, वीरलोंकाशाह, क्रियोद्धारक पूज्य जीवराज जी महाराज, श्री लवजी ऋषिजी, धर्मसिंह जी, धर्मदास जी, धन्ना जी एवं आचार्य भूधर जी महाराज के प्रेरक जीवन-प्रसंगों को प्रस्तुत करने के पश्चात् भूधर जी के वंश के आचार्यों रघुनाथ जी, जयमल जी एवं पूज्य श्री कुशलचन्द जी के

जीवन का वर्णन किया गया है। तदनन्तर पूज्य श्री कुशलो महाराज की परम्परा के आचार्यों एवं प्रमुख सन्तों के जीवन के प्रेरक प्रसंग दिए गए हैं। फिर क्रमशः आचार्य रघुनाथजी महाराज, आचार्य जयमल जी महाराज, आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी महाराज, अन्य गच्छ एवं श्रमण संघ, ज्ञानगच्छ आदि की परम्परा के प्रमुख आचार्यों एवं सन्तों के जीवन का प्रेरणाप्रद वर्णन किया गया है। अन्त में प्रमुख त्यौहारों एवं पर्वों पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक को रोचक एवं प्रेरक बनाने का भरसक प्रयास किया गया है। यह पुस्तक स्थानकवासी परम्परा के इतिहास लेखन में भी उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

साभार प्राप्त पुस्तकें

श्री जेठमल जी गुलेचा, 269, सरदारपुरा, चौथी बी. रोड़, जोधपुर (राज.) फोन : 0291-2434681 से निम्नाङ्कित पुस्तकें साभार प्राप्त हुई हैं-

1. आगमवचन, 2. सम्यक्त्व,
3. भावधारा, लेश्या आभा मण्डल, 4. प्रत्याख्यान सूत्र,
5. स्वप्नः एक चिन्तन, 6. चतुर्विंशतिस्तव सूत्र,
7. कायोत्सर्ग, 8. आवश्यक दर्शन,
9. स्वयंबुद्ध, प्रत्येक बुद्ध बुद्धबोधित केवली
10. पंच परमेष्ठी सूत्र, 11. जैन कर्म सिद्धान्त भाग 1 एवं 2,

इन सभी पुस्तकों का मूल्य नित्य स्वाध्याय है।

बाल-स्तम्भ [सितम्बर-2010] का परिणाम

जिनवाणी के सितम्बर-2010 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'दो सार्थवाह' कहानी के प्रश्नों के उत्तर बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	गजेन्द्रकुमार जैन-जयपुर	19.5
द्वितीय पुरस्कार-200/-	नीति संघवी-बदनावर	19
तृतीय पुरस्कार- 150/-	अंजली जैन-हिण्डौन सिटी	18.75
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	सुनयना जैन-बोरावड़	18.50
	श्रेया मेहता-शिमोगा(कर्नाटक)	18.50
	डिम्पल देवड़ा-बैंगलोर	18
	दिव्या देवड़ा-बैंगलोर	18
	साक्षी संचेती-अलवर	18

श्रद्धार्पण

आचार्य हस्ती आरती

डॉ. दिलीप धींग

जय हस्ती गुरुवर, स्वामी जय हस्ती गुरुवर।
शोभाचार्य के पटधर, ज्ञान-ध्यान सरवर ।। ध्रुव ।। ॐ जय.......

पौष सुदी चौदस को, सूरज उदित हुआ ।। स्वामी ।।
धन्य पीपाड़ शहर जो, जग-विख्यात हुआ ।।1 ।। ॐ जय.......

संयम के महापथ पर, नन्हे कदम बढ़े ।। स्वामी ।।
तरुणाई में देखो, पद आचार्य चढ़े ।। 2 ।। ॐ जय.......

रूपा-केवल नन्दन, श्रद्धा का चन्दन ।। स्वामी ।।
आचार्य हस्ती गुरु को, जग करता वन्दन ।। 3 ।। ॐ जय.......

स्वाध्याय-सामायिक प्रणेता, युग के निर्माता ।। स्वामी ।।
भाषा लिपि के ज्ञाता, आगम व्याख्याता ।। 4 ।। ॐ जय.......

ज्ञान-क्रिया के संगम, अनुपम जप योगी ।। स्वामी ।।
दीन-दुःखी पीड़ितों के, सच्चे सहयोगी ।। 5 ।। ॐ जय.......

गुणग्राहक गुणप्रेमी, महागुणी मुनिवर ।। स्वामी ।।
सद्भावों के निर्झर, करुणा के सागर ।। 6 ।। ॐ जय.......

नव इतिहास बनाया, खुद इतिहास बने ।। स्वामी ।।
क्या अद्भुत संथारा! जन-जन कहे-सुने ।। 7 ।। ॐ जय.......

गजसम धीर गंभीरा, है नेतृत्व कुशल ।। स्वामी ।।
रत्न संघ का हीरा, मान बढ़े प्रतिपल ।। 8 ।। ॐ जय.......

आरती महागुरु की, प्रतिदिन स्मरण करें ।। स्वामी ।।
रीते जीवन घट में, सुख-सौभाग्य भरे ।। 9 ।। ॐ जय.......

-35, डोरे नगर, उदयपुर (राज.)

केन्द्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर सूचना

स्वाध्यायियों के ज्ञान में उत्तरोत्तर विकास हो, इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा समय-समय पर स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाते हैं। वर्ष में एक बार केन्द्रीय शिविर आयोजित करने का निर्णय पूर्व में हुआ था। अतः समस्त स्वाध्यायियों को सूचित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ द्वारा **दिनांक 23 दिसम्बर से 29 दिसम्बर 2010 तक 'सप्त दिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर' जलगाँव (महा.)** में आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर में **15 से 50 वर्ष की** आयु के निम्नांकित योग्यता में से एक भी योग्यता प्राप्त स्वाध्यायी भाग ले सकेंगे-

1.श्री स्था. जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के स्वाध्यायी हों एवं पर्युषण सेवा देते हों।
2.अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की पंचम परीक्षा उत्तीर्ण हों।
3.सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल कण्ठस्थ हो।

उक्त शिविर में कुशल प्रशिक्षकों द्वारा **अन्तगड़सूत्र वाचन, प्रवचन शैली, भजनकला एवं आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षाओं के पाठ्यक्रम** के साथ ही **आध्यात्मिकता एवं नैतिकता** को पुष्ट करने वाले विविध विषयों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। शिविर की नियमावली एवं आवेदन पत्र संलग्न है। संलग्न आवेदन पत्र भरकर **10.12.2010** से पूर्व अवश्य जमा करावें। बिना पूर्व आवेदन पत्र व स्वीकृति के शिविर में प्रवेश सम्भव नहीं होगा। अतः आवेदन पत्र पूर्ण कर यथाशीघ्र प्रेषित करावें तथा स्वीकृति प्राप्त करें। आप इस शिविर में सम्बन्धित विषयों की तैयारी के साथ पधारें, ताकि आपको शिविर में उन विषयों का विशेष ज्ञान प्राप्त हो सके।

आवेदन-पत्र प्राप्त करने तथा जमा कराने का स्थान

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ
घोड़ों का चौक,
जोधपुर-342001 (राज.)
फोनः 0291-2624891,2633679,
फैक्स-2636763, मो. 9414267824
E-mail : swadhyaysanghjodhpur@yahoo.co.in

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ
श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ
व्यंकटेश मंदिर के पीछे, गणपति नगर
जलगांव-425001 (महा.)
फोन नं. 0257-2232315
मो. 9422591423

श्री हरकचन्द जी जैन
88, इन्द्रा कॉलोनी, बजरिया
सवाईमाधोपुर (राज.)
फोनः 07462-2224208
मो. 9462665067

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दु.नं.182-183 के ऊपर, बापू बाजार
जयपुर-302003(राज.)
फोन नं. 0141-2575997, 2570753

श्री कृष्णमोहन जी जैन
रेलवे फाटक के बाहर, जैन मंदिर के पास
वर्द्धमान नगर, पो. हिण्डौन सिटी-322230
जिला-करौली (राज.)
फोन नं. 07469-230759, 9461082742

श्री कन्हैयालाल जी जैन
सत्यम सुटिंग्स, 119, मुरली टैक्सटाईल्स
टॉवर, पूर रोड, भीलवाड़ा (राज.)
फोन नं. 01482-242812, 246028

श्री गौतम जी सुराणा
C/o Swadhyay Bhawan
No. 24-25, Basin Water Works St.
Sowcarpet, Chennai-600079 (T.N.)
Ph. 044-25295143] 9380997333

श्री सुमतिबाबू जी जैन
चौधरी जनरल हाउस, एसबीबीजे बैंक के पास
पो. मण्डी डबवाली, जिला-सिरसा (हरियाणा)
फोन नं. 01668-222153, 9354884803

श्री विरेन्द्र जी झामड़ म.नं. 5/179, मालवीय नगर जयपुर (राज.) फोन नं.0141-2554266,9414888043	श्री महेन्द्र जी कटारिया मैसर्स मोहनलाल महेन्द्र कुमार कटारिया अनाज बाजार, इतवारी, नागपुर (महा.) फोन नं. 0712-2680176, 9422459676	श्री नवनीत जी जैन जैन कॉलोनी, भैरवी रोड होशियारपुर-146001 (पंजाब) फोन नं. 01882-238314, 943010026

नियमावली एवं निर्देश

1. आवेदन पत्र में सारी सूचनाएँ सही एवं स्पष्ट भरें, काँट-छाँट नहीं करें। आवेदन-पत्र की फोटो-प्रति भी भरकर भिजवाई जा सकती है।
2. शिविर में केवल 15 से 50 वर्ष आयु के स्वाध्यायी ही भाग ले सकते हैं।
3. शिविरार्थियों को दिनांक 22.12.2010 को सायंकाल अथवा 23.12.2010 को प्रातः 7 बजे तक शिविर स्थल पर पहुँचना अनिवार्य है।
4. सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल अच्छी तरह से कण्ठस्थ कर पधारें, साथ ही शिक्षण बोर्ड की पिछली उत्तीर्ण कक्षा का पाठ्यक्रम याद करके पधारें।
5. सामायिक की वेशभूषा अनिवार्य रूप से साथ लेकर पधारें।
6. कम से कम प्रातः नवकारसी व्रत का पालन तथा रात्रि में तिविहार का पालन आवश्यक है।
7. आओ प्रत्याख्यान करें को नियमित भरना होगा।
8. शिविरार्थी वे ही माने जायेंगे जो नियमों व दिनचर्या का पालन करते हुए पूर्ण शिविर अवधि पर्यन्त शिविरार्थी के रूप में रहेंगे।
9. महिला एवं छात्रा शिविरार्थी के लिए निर्धारित वेशभूषा (साड़ी/सलवार कुर्ती) रहेगी।
10. शिविर प्रभारी की बिना अनुमति के शिविर स्थल नहीं छोड़ सकेंगे।
11. शिविरार्थी अपने साथ जोखिम का सामान नहीं लावें।
12. आवेदन-पत्र भरकर जोधपुर कार्यालय अथवा उपर्युक्त पते पर भिजवायें।
13. आपके द्वारा पठित विषयों में जो भी जिज्ञासाएँ हों, उन्हें अलग से नोट करके साथ में लेकर पधारें।
14. शिविर में पधारने वाले शिविरार्थियों को मात्र बस अथवा रेल का द्वितीय श्रेणी का मार्ग व्यय प्रदान किया जायेगा।

शिविर सम्बन्धी जानकारी के लिए निम्नांकित महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं- **1. श्री नवरतन जी डागा, संयोजक-9828032215, 2. श्री राजेश जी भण्डारी, सचिव-94610313878, 3. श्री प्रकाश जी जैन, जलगांव-9370020005, 4. श्री सुन्दरलाल जी जैन, जोधपुर-9460775428, 5. श्री प्रकाश जी सालेचा, जोधपुर-9414126279, 6. श्री मनोज जी संचेती, जलगांव-9422591423, 7. श्री कमलेश मेहता, जोधपुर-9414267824**

निवेदक

नवरतन डागा
संयोजक

राजेश भण्डारी
सचिव

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.), फोन-0291-2624891, 2633679

केन्द्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 23 दिसम्बर से 29 दिसम्बर 2010 तक

आवेदन-पत्र

शिविरार्थी का नाम..

पिता/पति का नाम..

जन्म तिथि........................आयु......................

पत्राचार का पूर्ण पता......................................

....

टेलीफोन नं.........................मोबाइल.................................

फैक्स नं. ....ई-मेल...

शैक्षणिक योग्यता(व्यावहारिक)...

धार्मिक योग्यता...

.........................शिक्षण बोर्ड की उत्तीर्ण कक्षा..........................

पर्युषण सेवा..

शिविरों में सहभागिता...

संघ की गतिविधियों में योगदान...

....

विशेष रुचि...

व्यवसाय/सर्विस...

शिविर में भाग लेने के लिये योग्यता का आधार..............................

....

दिनांक.............. हस्ताक्षर आवेदनकर्ता

नोट-आवेदन-पत्र 10 दिसम्बर तक प्राप्त होने पर स्वीकृति भेजी जाएगी।

रिपोर्ताज

मुणोत साहब को 'संघ सेवा-शिरोमणि' एवं ललवाणी जी को मिला 'संघ-रत्न' सम्मान

श्री नौरतन मेहता

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के तत्त्वावधान में धर्मधरा पाली-मारवाड़ में 9 अक्टूबर, 2010 को संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक **माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत** को संघ उन्नयन एवं संघ को सक्रिय, सक्षम व स्वावलम्बी बनाने में उल्लेखनीय योगदान के उपलक्ष्य में **संघ-सेवा शिरोमणि सम्मान** से सम्मानित किया गया, वहीं संघ संरक्षक एवं नव-निर्वाचित सांसद (राज्यसभा) **माननीय श्री ईश्वरलालजी ललवाणी** को **संघरत्न** सम्मान से सम्मानित किया गया।

त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत 8 अक्टूबर को युवक परिषद् की साधारण-सभा मध्याह्न एक बजे रखी गई। 8 अक्टूबर को सायं 7.30 बजे चिन्तन-बैठक में संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के शीर्ष पदाधिकारियों ने संघ की प्रवृतियों के पोषण, गतिविधियों के संचालन एवं कार्यक्रमों की क्रियान्विति में सबको परस्पर सहयोग हेतु चिन्तन किया। 9 अक्टूबर को प्रवचन एवं प्रातःकालीन भोजनोपरान्त मध्याह्न एक बजे श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन रखा गया। सायं 7.30 बजे सम्मान समारोह का कार्यक्रम पूरे उत्साह एवं पूरी भावना से हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ जो अपने आपमें अनुपम उदाहरण के रूप में सदा-सर्वदा याद किया जाता रहेगा। 10 अक्टूबर को संघ की साधारण सभा आयोजित की गई।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पाली के अध्यक्ष श्री रूपकुमारजी चौपड़ा, मंत्री श्री ताराचन्दजी सिंघवी, कार्यकारिणी के सदस्य महानुभावों के साथ संघ की मित्र परम्पराओं के पदाधिकारी व श्रावक-श्राविकाएँ त्रिदिवसीय कार्यक्रमों को गरिमापूर्ण तरीके से सम्पन्न करने की भावना से कई दिनों पूर्व सजग हो गये। कार्यक्रम स्थल सेठ मुकनचन्द बालिया राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय का चयन करके उसमें सम्मेलन स्थल, भोजन-चाय नाश्ते की व्यवस्था के साथ विद्यालय के मातुश्री राजलदेवी गोगड़ सभागार को प्रवचन हेतु पूर्व से

निर्धारित कर लिया गया।

संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक और संघ-सेवी, संत-सेवी सुज्ञ श्रावकरत्न माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत 7 अक्टूबर को मुम्बई से जोधपुर पधारे। जोधपुर विराजिता साध्वीप्रमुखा के दर्शन-वन्दन एवं सेवा-लाभ लेकर वे पाली पहुँचे जहाँ आराध्य गुरुवर्य की चरण सन्निधि में बैठकर संघोन्नति हेतु आवश्यक मार्गदर्शन लेकर रात्रि-विश्राम जोधपुर में किया एवं 8 अक्टूबर को पुनः पाली पहुँचकर संघ के त्रि-दिवसीय कार्यक्रम में भूमिका व भागीदारी प्रदर्शित की। संघ-संरक्षक एवं राज्यसभा सांसद माननीय श्री ईश्वरलालजी ललवाणी 8 अक्टूबर को जोधपुर पहुँचे। हवाई अड्डे पर संघ महामंत्री, जोधपुर संघ के अध्यक्ष सहित कतिपय संघ पदाधिकारियों ने नव-निर्वाचित सांसद की अगवानी की। उन्होंने साध्वीप्रमुखा-शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन का लाभ लिया एवं गोटन पहुँच कर परम श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि संत-मुनिराजों के दर्शन-वन्दन का भी लाभ लिया। गोटन से पाली पहुँचने पर संघ के प्रबुद्ध श्रावकों ने हाउसिंग बोर्ड पाली तक सामने पहुँचकर संघ संरक्षक माननीय श्री ललवाणी साहब की अगवानी की।

9 अक्टूबर, 2010 को सायं 7.30 बजे आयोजित सम्मान-समारोह में पाली सहित जोधपुर, पीपाड़, भोपालगढ़, कोसाना, मेड़ता, नागौर, ब्यावर, सोजत रोड़, पीपलिया, बीकानेर, अजमेर, दूदू, मदनगंज-किशनगढ़, जयपुर, बजरिया, हाऊसिंग बोर्ड, सवाईमाधोपुर, आलनपुर, चौथ का बरवाड़ा, चौरू, अलीगढ़-रामपुरा, कोटा, खेरली, नदबई, भीलवाड़ा, भरतपुर, अलवर, टोंक, दिल्ली, चैन्नई, बैंगलोर, हैदराबाद, कोलकाता, कानपुर, जलगाँव, इन्दौर, भोपाल, नीमच, बीजापुर, बंगारपेट, अहमदाबाद, बड़ौदा, सूरत, वापी आदि अनेक क्षेत्रों के श्रद्धालुगण भी आचार्यप्रवर एवं मुनिमण्डल के दर्शन-वन्दन एवं त्रि-दिवसीय कार्यक्रम में भाग लेने की भावना से पाली पहुँचे।

अतिथियों एवं पदाधिकारियों द्वारा मंचालंकरण-

कार्यक्रम संचालिका **डॉ. (श्रीमती) सुषमाजी सिंघवी** ने श्रमण भगवान महावीर की जय, प्रतिपल स्मरणीय आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के पावन गुण स्मरण करते हुए आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि संत-सतीवृन्द के जय-जयकार करवाकर अतिथियों को मंच पर आमन्त्रित किया। समारोह की

अध्यक्षता रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय श्री सुमेरसिंहजी बोथरा ने की। समारोह के मुख्य अतिथि माननीय न्यायमूर्ति श्री मुनीश्वरनाथजी भण्डारी थे। पाली नगर परिषद् के सभापति आदरणीय श्री केवलचन्दजी गोलेच्छा, पाली क्षेत्र के विधायक आदरणीय श्री ज्ञानचन्दजी पारख ने विशिष्ट अतिथि का आसन सुशोभित किया। सम्मान-समारोह में सम्माननीय संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत एवं संघ-संरक्षक व राज्यसभा सांसद सम्माननीय श्री ईश्वरलालजी ललवाणी, शासन सेवा समिति के संयोजक एवं संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना, संघ के कार्याध्यक्ष श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, संघ के महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी, श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती मधुजी सुराना, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा, पाली संघाध्यक्ष श्री रूपकुमारजी चौपड़ा, पाली संघमंत्री श्री ताराचन्दजी सिंघवी ने भी मंच को सुशोभित किया। ज्यों-ज्यों मंच पर अतिथि एवं संघ के पदाधिकारी पधारते गये हर्ष-हर्ष, जय-जय के जयनाद कर्णगोचर होते रहने से जनसमुदाय की प्रसन्नता का सहज आभास होता रहा।

मंगलाचरण स्वागत गीत, स्वागत भाषण

सम्मान समारोह का शुभारम्भ मंगलाचरण से किया गया। अनन्य गुरुभक्त श्री हस्तीमलजी गोलेच्छा ने गुरुगुणगान के साथ काव्यमय गीत की पंक्तियों में सम्मानित महानुभावों के प्रति भी अपनी शुभकामना व्यक्त की। पाली की बालिकाओं ने स्वागत-गीत की सुमधुर स्वर लहरी में सुन्दर प्रस्तुति दी। पाली संघ के प्रबुद्ध श्रावकरत्न श्री चैनराजजी मेहता ने स्वागत भाषण के माध्यम से माननीय अतिथियों का, मुणोत साहब, ललवाणी साहब सहित संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों का एवं देशभर से पधारे श्रीसंघों का एवं श्रद्धालुओं का हार्दिक स्वागत किया। परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि चातुर्मास के सुयोग से हमें आज का यह अलभ्य अवसर मिला है इस कारण हमारा एक-एक सदस्य हर्षित-प्रमुदित है।

स्वागत-भाषण के पश्चात् मंचासीन अतिथियों का माला, शाल एवं प्रतीक चिह्न से सत्कार किया गया।

स्वागत सत्कार में जन-जन के हृदयहार संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक उदारमना श्रावकरत्न माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत एवं संघ संरक्षक माननीय श्री

ईश्वरलालजी ललवाणी का स्वागत सत्कार-बहुमान संघ के विभिन्न क्षेत्रों के प्रमुख एवं प्रबुद्ध श्रावकों के कर-कमलों से करवाया गया। जिससे दोनों सम्मानित होने वाले महानुभावों के प्रति हर क्षेत्र की भावना व भागीदारी का सुन्दर रूप सामने आया।

हृदयोद्गार एवं भावाभिव्यक्ति

शासन सेवा समिति के संयोजक, संघ के पूर्व अध्यक्ष एवं शाकाहार-सदाचार के प्रबल प्रेरक **आदरणीय श्री रतनलालजी बाफना** ने सम्माननीय मुणोत साहब और राजा बाबूजी के प्रेरक व्यक्तित्व-कृतित्व के चन्द उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि दोनों संघ संरक्षकों ने संघ-दीप्ति में तन-मन-धन से एवं समर्पित भाव से सेवाएँ दी, उनका स्वागत समयोचित है। मुणोत साहब का स्वागत बहुत पहले करने की भावना हो गई थी, किन्तु आपने उसे यह कहकर रोक दिया कि मैं अभी रिटायरमेन्ट नहीं लेना चाहता। मुणोत साहब की संघहित की भावना, संघ उन्नति में योगदान और संघ प्रवृत्तियों के पोषण में उदारता पूर्वक सहयोग से संघ में व्यक्ति-व्यक्ति का जुड़ाव बढ़ा है। आपका सबके प्रति स्नेह है, इस कारण संघ का हर सदस्य आपको अपना हितैषी मानता है। हम-सब आपके सद्गुणों से सीख लेकर संघोन्नति में कार्य करें यह समय की माँग है।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व अध्यक्ष एवं तप साधक **सुश्रावक श्री चेतनप्रकाशजी डूँगरवाल-बैंगलोर** ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि माननीय मुणोत साहब की प्रेरणा संघहित में हम-सबके लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। आप इतने व्यस्त रहते हैं लेकिन संघ को जब भी जरूरत होती है, आप सारे काम छोड़कर संघ-सेवा में सक्रिय हो जाते हैं। आपके सम्मान से हम-सब गौरवान्वित हैं और हम आपकी उदारता से प्रेरणा लें यही हमारी भावना है। मैं आपके एवं बाबूजी के मंगलमय जीवन की कामना करता हूँ।

अभिनन्दन-पत्रों की प्रस्तुति एवं समर्पण

संघ-संरक्षक एवं राज्यसभा सांसद सम्माननीय श्री ईश्वरलालजी ललवाणी के पारिवारिक परिचय के साथ उनके व्यक्तित्व-कृतित्व एवं संघ-समाज को उल्लेखनीय देन जैसे प्रमुख अंशों से युक्त अभिनन्दन-पत्र की सुन्दर एवं भावपूर्ण प्रस्तुति दी भाई **श्री कैलाशमलजी दुग्गड़, चेन्नई** ने। दुगड़ साहब ने महाराष्ट्र में चिकित्सा, शिक्षा, जनसेवा, परोपकारी कार्यों में ललवाणी परिवार का विवरण-विवेचन प्रस्तुत करते हुए आपके राजनैतिक जीवन की झांकी तो रखी ही, राज्यसभा के निर्विरोध सांसद निर्वाचित होने को सकल जैन समाज का गौरव

बताया। ललवाणी साहब अल्पसंख्यक जैन समाज के छात्र-छात्राओं के अध्ययन के लिए विश्वविद्यालय स्तर की संस्था को अंजाम देना चाहते हैं, उसका उल्लेख किया साथ ही अभिनन्दन-पत्र के प्रमुख अंश पढ़कर सुनाये। संघरत्न-2010 सम्मान को अतिथियों व संघ के शीर्ष पदाधिकारियों ने ललवाणी साहब के कर-कमलों में सस्नेह सादर समर्पित किया।

कार्यक्रम संचालिका विदुषी श्राविका **डॉ. (श्रीमती) सुषमाजी सिंघवी** जिनका हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत पर अधिकार है, बीच-बीच में सम्मानित होने वाले महानुभावों की विशेषताएँ जनसमुदाय के समक्ष रखी जिससे कार्यक्रम की भव्यता और बढ़ गई।

संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक सम्माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत का प्रभावी परिचय दिया **आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी समारोह समिति के संयोजक श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना** ने। मुणोत साहब ने कैसे संघ को संकट से उबारा, कैसे संगठन को सक्रिय किया, कैसे संघ में ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि के लिए पहल की जैसे विषयों पर प्रकाश डालते हुए बाफना साहब ने मुणोत साहब के प्रेरणादायी कृतित्व के पहलू उद्घाटित किए।

संघ-संरक्षक एवं राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व **न्यायमूर्ति माननीय श्री जसराजजी चौपड़ा** ने अपने प्रभावी उद्बोधन के माध्यम से माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत का पारिवारिक-परिचय, व्यापार-व्यवसाय की प्रामाणिकता, संघ-समाज को देन, सबको साथ लेकर चलने की क्षमता जैसे कई बिन्दुओं को रेखांकित किया। मुणोत साहब की धर्मपरायणा-धर्मपत्नी स्व. श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत के योगदान का उल्लेख करते हुए जज साहब ने श्रीमती शरदचन्द्रिका जी की गुरुभक्ति, संघनिष्ठा, सेवा-धर्म की साधना आदि के साथ श्राविका की उदारता, सहिष्णुता, सरलता पर भी प्रकाश डाला।

न्यायमूर्ति चौपड़ा साहब ने माननीय मुणोत साहब और बाबूजी के सम्मान समारोह के निर्णय के सन्दर्भ में वस्तुस्थिति रखते हुए बताया कि संघाध्यक्ष महोदय का प्रस्ताव रहा कि संघ उन्नयन एवं संघ को सक्रिय, सक्षम व स्वावलम्बी बनाने में संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत ने तन-मन-धन से, समर्पित भाव से एवं समय का भोग देकर संघ की एकता-एकरूपता बनाए रखने का महनीय कार्य अत्यन्त कुशलतापूर्वक किया है, संघ को मुणोत साहब का एवं महाराष्ट्र से राज्यसभा सांसद चुने जाने का गौरव अर्जित करने वाले संघ संरक्षक माननीय बाबूजी का संघ स्तर पर सार्वजनिक रूप से सम्मान करना

चाहिये। आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान, युवा प्रतिभा शोध साधना सेवा सम्मान, विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान के साथ गुणी अभिनन्दन के अन्तर्गत बहुविध संघ-सेवियों के नामों का चयन, चयन समिति करती है जिनका संघ के वार्षिक अधिवेशन में स्वागत-अभिनन्दन किया जाता है, किन्तु इस बार अपेक्षित प्रविष्टियाँ प्राप्त नहीं होने से अध्यात्म-चेतना वर्ष के समापन पर सम्मान करने का निर्णय रहा। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक मुणोत साहब एवं संघ-संरक्षक बाबूजी का स्वागत-सत्कार-अभिनन्दन विशाल आयोजन के रूप में भव्यातिभव्य हो, एतदर्थ संघ-स्तर पर कार्ड तैयार करने व समाचार संप्रेषित करने के साथ सम्मान-समारोह की सफल क्रियान्विति हेतु पाली संघ ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ से दिशा-निर्देश प्राप्त करते हुए त्रि-दिवसीय कार्यक्रम की सफलता में रात-दिन एक कर दिए।

चौपड़ा साहब ने संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक मुणोत साहब की भावना को उद्धृत करते कहा कि फोन पर आपने साफ लब्जों में कह दिया था कि सम्मान ही देना है तो संघ-सेवक का सम्मान दें। मुणोत साहब को उन्होंने कहा कि संघ की भावना को एकदम नजर-अन्दाज नहीं किया जा सकता, इसलिये 'संघ-सेवा शिरोमणि सम्मान' से सम्मानित करने का निर्णय रहा। जज साहब ने अभिनन्दन-पत्र के प्रमुख अंश जनसमुदाय के समक्ष रखे एवं अतिथियों व संघ के शीर्ष पदाधिकारियों ने अभिनन्दन पत्र मुणोत साहब के कर-कमलों में हर्षित-उल्लसित मन से एवं सस्नेह श्रद्धाभाव के साथ समर्पित किया। जनमेदिनी ने हर्ष-हर्ष, जय-जय के गगनभेदी जयनाद कर अपनी प्रसन्नता प्रकट की। उमंग-उल्लास का ऐसा नज़ारा पहले शायद संघ में कभी देखने में नहीं आया।

संघ-सेवा शिरोमणि एवं संघरत्न सम्मान की रजत पट्टिकाओं का समर्पण

सम्मान-समारोह में जन-जन की भावना, हार्दिक शुभकामना और सम्मानित महानुभावों के प्रति मंगलमनीषा का इजहार हो, एतदर्थ संघ ने रजत पट्टिका पर मुद्रित सम्मान पट्टिकाएं माननीय मुणोत साहब और बाबूजी के कर-कमलों में अतिथियों व संघ पदाधिकारियों ने सहर्ष-सादर समर्पित की।

मुणोत साहब एवं बाबूजी के प्रति आत्मीयजनों ने भी संघ-सेवा शिरोमणि एवं संघरत्न सम्मान के उपलक्ष्य में अपनी ओर से भव्य स्मृति चिह्न जो रजत पट्टिकाओं पर कलात्मक रूप से अंकित थे, भेंट स्वरूप ससम्मान प्रदान किये।

सम्मान समारोह में सैंकड़ों स्नेहियों ने मुणोत साहब और बाबूजी का माल्यार्पण किया।

मुणोत एवं ललवाणी परिवारजनों का स्वागत

सम्मान-समारोह में मुणोत साहब एवं बाबूजी के पारिवारिक-परिजन समुपस्थित होने से संघ एवं संघ की सहयोगी शाखाओं की ओर से दोनों परिवारों के सभी सदस्य महानुभावों का माल्यार्पण से स्वागत किया गया। पराग बाबू, मनीष बाबू का शॉल ओढ़ाकर बहुमान किया गया, वहीं पुत्रवधुओं का, सुपुत्रियों का, जंवाई राजाओं को भी मंच पर आमन्त्रित कर उनका स्वागत-सत्कार-बहुमान किया गया। श्रीमती पुष्पाजी ललवाणी एवं पुत्रवधू सौ. कां. निकिताजी ललवाणी का व श्रीमती मोनिकाजी मुणोत का चून्दड़ी ओढ़ाकर बहुमान किया गया।

पाली संघ ने मंचासीन महानुभावों को स्मृति चिह्न भेंट किये वहीं माल्यार्पण कर सबका स्वागत किया व शॉल ओढ़ाकर बहुमान किया।

स्वागत-सत्कार का पूरा कार्यक्रम अत्यन्त मनभावन रहा। 7.30 बजे प्रारम्भ कार्यक्रम लगभग रात्रि 11.15 बजे तक अत्यन्त शालीनता के साथ सम्पन्न हुआ। सम्मानित महानुभावों के प्रति संघ सदस्यों की इतनी आत्मीयता थी कि जन-जन के मुँह से यही सुना गया कि ऐसा शान्त और भव्य समारोह पहले कभी न तो देखा, नही सुना।

अतिथियों के हृदयोद्गार

सम्मान-समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे पाली विधानसभा क्षेत्र के लोकप्रिय विधायक आदरणीय **श्री ज्ञानचन्दजी पारख** ने अपने विचार रखते हुए कहा कि यह पाली का सौभाग्य है कि हमें गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा के चातुर्मास का सुयोग मिला है। चातुर्मास में सम्मान-समारोह का यह आयोजन पालीवासियों के लिए बहुत महत्त्व रखता है। मैं माननीय मोफतराज जी मुणोत साहब की गुरुभक्ति, उदारता, सेवाभावना और संघ के कुशल नेतृत्व की बात लम्बे समय से सुनता आ रहा हूँ। सम्मान उसी का होता है जो सेवाएँ देता है। मुणोत साहब ने संघ-समाज को निश्चित ही उल्लेखनीय सेवाएँ दी होंगी, इसीलिए आज यह भव्य आयोजन हुआ है। मैं पाली की धर्मधरा पर अपनी ओर से पाली विधानसभा क्षेत्र की ओर से आपका स्वागत करता हूँ। संघ-संरक्षक एवं महाराष्ट्र से राज्यसभा सांसद श्री ईश्वरलालजी ललवाणी का भी मैं हृदय से अभिनन्दन करता हूँ। आपका राज्य सभा में सांसद निर्वाचित होना पूरे जैन समाज को गौरव का आभास कराता है।

मैं देश भर से पधारे श्रावक-श्राविकाओं का भी आभार व्यक्त करता हूँ। संघ ने मुझे इस अवसर पर याद किया, यह मेरा सौभाग्य है।

विशिष्ट अतिथि एवं पाली नगर परिषद् के सभापति आदरणीय **श्री केवलचन्दजी गोलेच्छा** ने अपने विचार रखते कहा कि धर्मधरा पाली का सौभाग्य है कि हमें आज यह सुन्दर अवसर प्राप्त हुआ है। मुणोत साहब श्री मोफतराजजी मुणोत एवं बाबूजी श्री ईश्वरलालजी ललवाणी संघ के गौरव हैं। इनके सार्वजनिक सम्मान के पीछे सद्गुणों की महक रही हुई है, मैं अपनी ओर से आप दोनों महानुभावों का स्वागत-सत्कार ओर अभिनन्दन करता हूँ।

संघ के **मुख्य अतिथि माननीय न्यायमूर्ति श्री मुनीश्वरनाथजी भण्डारी**, न्यायाधिपति, राजस्थान उच्च न्यायालय ने इतनी विशाल जनमेदिनी में अपूर्व शांति रहने को आश्चर्य बताते कहा कि इस तरह आप-सब भाई-बहिनों का देर तक तन्मयता से सुनना वस्तुतः सबके स्नेह का ही कारण है। न्यायमूर्ति भण्डारी साहब ने संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा को दादा के नाम से पुकारते हुए कहा कि मुझे संघ के निकट लाने में दादा का सहयोग रहा। इस समारोह के लिए भी दादा ने पहल करके कहा कि मुझे पाली पहुँचना है। मैं आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. प्रभृति मुनिपुंगवों के दर्शन-वन्दन की भावना रखता था, इसलिए भी दादा के आग्रह को सहज स्वीकार कर लिया। यहाँ आकर मुझे अनुभव हुआ कि मैं यदि यहाँ नहीं आता तो इतने सुन्दर सुयोग से वंचित रह जाता। मेरे पूर्व वक्ताओं ने मुणोत साहब और ललवाणी साहब के लिए बहुत कुछ कह दिया है, मैं उसे पुनः दोहराऊँ इसके बजाय इतना ही कहना पर्याप्त मानता हूँ कि सोना, सोना रहता है भले ही वह कोयले की खदान में ही क्यों न हों। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक चाहे संघाध्यक्ष के रूप में रहे हों या संघ-सेवी श्रावकरत्न के रूप में अथवा संघ-सेवा शिरोमणि पद से विभूषित हैं, आपमें संघ-सेवा का जज्बा है और सदा रहेगा। संघ-संरक्षक एवं नव-निर्वाचित सांसद बाबूजी ने भी जन-सेवा के साथ समाज-सेवा का आदर्श उपस्थित किया है। आज का यह आयोजन गुणदर्शन, गुणवर्णन और गुणग्रहण का है। आपने शांति से मुझे सुना, मैं आपका शुक्रगुजार हूँ।

'संघरत्न' सम्मान से सम्मानित ललवाणी साहब द्वारा सम्बोधन

संघ संरक्षक, राज्यसभा सांसद एवं संघरत्न सम्मान से सम्मानित **माननीय श्री ईश्वरलालजी ललवाणी** ने आचार्यश्री-उपाध्यायश्री प्रभृति संत-सतीवृन्द को वन्दन-नमन कहकर मंचासीन महानुभावों का नामोल्लेख कर उपस्थित

जनसमुदाय से मुखातिब हो कहा कि हमारा परिवार पीढ़ियों से रत्नसंघ के प्रति समर्पित रहा। अपने पूज्य पिताश्री एवं पितामह की संघहित की कामना-भावना पर प्रकाश डालते ललवाणी साहब ने कहा कि हमारे परिवार की उदारता के एक नहीं, अनेकानेक उत्कृष्ट उदाहरण हैं जिनमें शिक्षा, संस्कार-निर्माण और सार्वजनिक हित के कार्यों में योगदान के कारण न केवल जलगाँव-जामनेर में, अपितु समूचे महाराष्ट्र में हमारी पारिवारिक प्रसिद्धि वर्षों से चली आ रही है। गुरु हस्ती के जलगाँव के दो वर्षावास एवं गुरु हीरा एवं गुरु मान के चातुर्मास में मैंने तथा मेरे परिवारजनों ने सेवा-भक्ति का लाभ लिया, गुरुचरण सन्निधि हमारे लिए वरदान का रूप है। व्यापार-व्यवसाय, राजनीति, समाज-सेवा, शिक्षा जैसे कार्यों का ललवाणी साहब ने विवरण-विवेचन रखते हुए कहा कि सेवा-धर्म की साधना से हमें आनन्द की अनुभूति मिली है।

संघ-सेवा, संत-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य-सेवा की भावना के कारण मेरी प्रबल कामना है कि मैं अल्पसंख्यक जैन समाज के लिए विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षण संस्था प्रारम्भ कर सेवा-धर्म की साधना में अपना योगदान कर सकूँ तो मैं अपने-आपको भाग्यशाली समझूँगा।

संघ ने मेरे सम्मान में विशाल आयोजन किया, मैं ही नहीं मेरा पूरा परिवार अभिभूत है और इस आयोजन से मेरे परिवार के सभी सदस्यों को संघ-सेवा में सक्रिय रहने की सहज प्रेरणा प्राप्त हुई है। मैं समारोह में पधारे अतिथियों का, संघ पदाधिकारियों का, संघ सदस्यों का और पाली के प्रबुद्धजनों का हृदय से आभारी हूँ।

'संघ-सेवा शिरोमणि' सम्मान से सम्मानित मुणोत साहब का उद्बोधन

संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक **सम्माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत** ने संघ-सेवा शिरोमणि सम्मान प्राप्त करने के अनन्तर उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए सर्वप्रथम अपने मन के भगवन्त आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज के पावन गुण स्मरण कर अपनी आस्था के केन्द्र आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., श्रद्धेय आनन्दमूर्ति श्री मानचन्द्रजी म.सा. प्रभृति संत-मुनिराजों के नामोल्लेख करते हुए साध्वीप्रमुखा-शासनप्रभाविका महासती आदि सतीवृन्द को भाव वन्दन कर मंचासीन अतिथियों, जीवन में प्रेरक विशिष्ट जनों एवं जन समुदाय को सम्बोधित किया।

मुणोत साहब ने आचार्य भगवन्त के शुभाशीर्वाद एवं विशेष उपकारों का

स्मरण करते कहा कि मेरा जीवन संघ-समाज और धर्म के उतना निकट नहीं था, उसे आचार्य श्री ने ऐसा मोड़ दिया कि मैं आज आपके समक्ष उपस्थित हूँ। आचार्यश्री-उपाध्यायश्री मुनिमण्डल और महासती मण्डल की कृपा पर प्रमोद प्रकट करते कहा कि मेरे पूज्य पिताश्री संघ-सेवी श्रावकरत्न श्री पुखराजजी साहब मुणोत जिनका मैंने गुरुचरणों में पूर्ण समर्पण देखा है, साथ ही माताश्री सुश्राविका श्रीमती सुगनीदेवीजी के संस्कारों से संस्कारित हमारा परिवार गुरुभक्ति, संघनिष्ठा और संघ-सेवा में सदा से सजग रहा है, मैं अपने पूज्य माता-पिता के उपकारों से उपकृत हूँ।

अपने अध्ययन की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत करते हुए मुणोत साहब ने कहा कि मैं सत्रह वर्ष की उम्र में व्यापार के लिए मुम्बई चला गया, तीस वर्ष की उम्र में विदेश में व्यापार के कारण जीवन की आपाधापी में गुरु दर्शन-वन्दन का लाभ तो पिताश्री की प्रेरणा से लेता रहा, किन्तु सेवा-भक्ति का विशेष अवसर नहीं मिला। वर्ष 1981 में भाई श्री सुमेरसिंहजी बोथरा, भाई श्री उमरावमलजी सुराना आदि पाँच-छः प्रमुख श्रावकों ने मुझसे सम्पर्क किया और संघ-सेवा के निमित्त अर्थ सहयोग करने की बात रखी। मैंने संघ के प्रमुखजनों की भावना का समादर किया। वर्ष 1982 में जलगाँव में आदरणीय श्री सुरेशदादा जैन को समाज चिंतामणि की पदवी दी जा रही थी, उस अवसर पर मुझे विशेष अतिथि के रूप में बुलाया गया और फिर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष का दायित्व देकर संघ-सेवा से जोड़ने का हमारे हितैषियों का प्रयास रहा। वर्ष 1986 में आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. आदि ठाणा का पीपाड़ चातुर्मास था, तब मुझे गुरुचरण सरोजों में बैठने एवं चातुर्मास में प्रवचन श्रवण करने का सौभाग्य मिला। वर्ष 1989 में श्री शीतलमुनिजी महाराज की घटना के समय मुझे याद है संघ-संरक्षक श्री नथमलजी हीरावत ने उलाहना देते कहा था कि आचार्यश्री के पास कोई जिम्मेदार श्रावक नहीं है, इसलिये आगत व्यक्ति पूज्य गुरुदेव को जो मन में आता है, कह जाता है। मैं किशनगढ़ से अजमेर तक गुरुचरण सेवा में विहार में साथ रहा। मेरा वह दस-ग्यारह दिन का स्वर्णिम प्रवास था। पूज्य गुरुदेव ने एक-एक कर कई अनमोल सूत्र मुझे प्रदान किए। मुझे आज भी याद है 28 मई, 89 का दिन, जब गगवाना में पूज्य गुरुदेव ने कहा था-हमारा संघ तो है, संगठन नहीं।

मुणोत साहब ने आचार्य भगवन्त के 1990 के पाली चातुर्मास का उल्लेख करते हुए बताया कि प्रतिवर्ष की भांति चातुर्मास में संघ की वार्षिक साधारण सभा

रखी गई, किन्तु किन्हीं कारणों से वह सभा स्थगित कर दी गई और फिर 18 जनवरी, 1991 को बैठक पाली में रखी गई। पाली में संघाध्यक्ष का चुनाव प्रस्तावित था। संघाध्यक्ष बनने की न तो मेरी चाह थी और न मेरी योग्यता ही थी, फिर भी मेरे नाम पर विचार चल रहा था, तब मैं गुरु चरणों में पहुँचा और आचार्य भगवन्त से स्पष्ट रूप से निवेदन किया कि मैं संघ के अध्यक्ष पद की जवाबदारी नहीं ले सकता। पूज्य गुरुदेव ने संघ-सेवा को कर्म-निर्जरा का कारण बताया, साथ ही फरमाया कि संघ-सेवा से तीर्थंकर नाम कर्म गोत्र का बंध हो सकता है। जो कर्म में शूर है वह धर्म में शूर क्यों नहीं बन सकता है। पूज्य गुरुदेव ने पद स्वीकार करने में संकोच नहीं करने को कहा। मैं तो पूज्य गुरुदेव की चरण सन्निधि में बैठा था, किन्तु संघ की बैठक में अध्यक्ष पद के लिए मेरे नाम की घोषणा कर दी गई। पूज्य गुरुदेव के शब्द कितने ताकतवर थे कि मैं जो अध्यक्ष पद लेने के लिए कतई तैयार नहीं था, पूज्य गुरुदेव की कृपा से, संघ के प्रमुख श्रावकों और मेरी धर्मसहायिका स्व. श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत के सहयोग और विश्वास पर मैंने अध्यक्ष पद का दायित्व स्वीकार किया।

मुणोत साहब ने उपकारी गुरु की सद्शिक्षाओं का स्मरण करते हुए कहा कि आचार्य भगवन्त ने सच्चा मित्र कौन होता है, इसको श्लोक सुनाकर हार्द समझाया। पूज्य गुरुदेव ने कहा-

पापान्निवारयति योजयते हिताय,
गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः।

जो पापों से हटाता है, हित मार्ग में जोड़ता है, कमजोरियों को एकान्त में कहता है, बाहर में गुण प्रकट करता है, आपत्ति आने पर साथ नहीं छोड़ता और समय पर सहायता करता है, तत्त्व के ज्ञाता पुरुषों ने सद्मित्र के ये लक्षण कहे हैं। आचार्य भगवन्त ने मुझसे कहा- तुम सच्चे संघमित्र की जवाबदारी निभाना। पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा आज भी मन को सन्तुष्टि देती है। आचार्य भगवन्त ने सद्मित्र की तरह दुर्जन-सज्जन कौन होता है, यह भी समझाया-

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः
हसन्ति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जनाः।

त्रुटि, भूल या स्खलना किसी से भी हो सकती है, भूल न चाहते हुए भी

हो जाती है। दुर्जन व्यक्ति भूल पर हँसते है, जब कि सज्जन सहारा देकर ऊपर उठाते हैं। आचार्य भगवन्त सामान्य बोलचाल की भाषा में जीवन-निर्माण के सूत्र इस खूबी से देते थे कि वे आज भी मेरे लिए उपयोगी हैं। आचार्य भगवन्त एक दोहा फरमाते थे-

धन दे तन को राखिये, तन दे रखिये लाज।
तन दे धन दे लाज दे, एक धर्म के काज।।

पूज्य गुरुदेव के अमृत रूपी वचनों को मैंने गाँठ बाँधकर संघ-सेवा की यात्रा प्रारम्भ की।

आचार्य भगवन्त 10 अप्रेल 1991को कुशालपुरा से संतों के सहयोग से निमाज पधारे। उस महापुरुष ने कितनी सच्चाई से फरमाया कि मैंने संतों के सहयोग से अपना वचन पूरा किया है, अब कहीं जाने की जरूरत नहीं। निमाज में आचार्य भगवन्त ने प्रमुख श्रावकों को हितशिक्षाएँ व प्रेरणाएँ दीं और मुझे भोलावन देते कहा कि मैंने तो संघ का संचालन मात्र मामूली संकेतों से वगैर कोई टंटा लगाये कर लिया और मेरे श्रावक भी इतने श्रद्धालु कि उन्होंने मुझे संकेत का अवसर भी नहीं दिया। आगे भी श्रावक अपना धर्म खुद निभायेंगे। श्रावक के कामों में संत नहीं पड़ेंगे तो संघ आगे बढ़ेगा। आचार्य भगवन्त की सद्शिक्षाओं के कारण मैंने पूर्ण निष्ठा व समर्पण से संघ की सेवा का प्रयास किया।

आचार्य भगवन्त का 21 अप्रेल, 1991 को निमाज में देवलोक-गमन हो गया। पूज्य गुरुदेव का सजगता पूर्वक ग्रहण किया गया संथारा आपने देखा है, मैं उस विषय में ज्यादा नहीं कहता, किन्तु मैंने अपने जीवन में ऐसी नियोजित मृत्यु नहीं देखी। मुझे तो अहसास होता है संघाध्यक्ष पद पर मेरा चयन गुरुदेव की प्लानिंग का हिस्सा रहा होगा। दि. 22 अप्रेल 1991 को सायं श्रद्धांजलि सभा में जज साहब श्री जसराजजी चौपड़ा ने आचार्य भगवन्त का हस्तलिखित पत्र पढ़कर सुनाया, जिसमें पं. रत्न श्री हीराचन्द्रजी म.सा. को आचार्य पद एवं पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. को उपाध्याय पद प्रदान किया गया था। निमाज में आप-हम-सबने आराध्य आचार्य भगवन्त को श्रद्धा-सुमन अर्पित किए, लेकिन एक मुस्लिम भाई ने भावना पूर्वक जो शब्द कहे, वे बहुत महत्वपूर्ण हैं। उसने कहा-

वो पथ क्या ? वो पथिक क्या ? जिस पथ पर बिखरे शूल न हों।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या ? जब धाराएँ प्रतिकूल न हों।

प्रतिकूलता झेलना चुनौती होती है, मुस्लिम भाई की बात मुझे बोध दे

गई। मुणोत साहब ने कहा कि सन्त प्रवरों की कृपा एवं आशीर्वाद से तथा आप-सबके प्रेम एवं सहयोग से मुझे जो भी अवसर एवं जवाबदारी मिली मैंने उसका पूर्ण निष्ठा से, समर्पण भाव से, तन-मन-धन से निभाया। संघ-सेवा में आज भी मैं सक्रिय हूँ, आगे भी सक्रिय रहने की भावना रखता हूँ।

मेरी शुरू से धारणा रही है कि शीर्ष पदों पर जो भी सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं, यथा सम्भव उनका सम्मान न हो। कम-से-कम मेरा सम्मान तो कतई न हो। मेरा सम्मान होगा, मुझे इसकी परिकल्पना तक नहीं थी। मेरे सम्मान के लिए जब पहले बात आई, मैंने विरोध करके सम्मान रोक दिया। मुझे वैसे भी समूचे संघ का विशेष प्रेम व सम्मान हमेशा मिलता रहा है। इस बार मेरी जानकारी के बिना निर्णय लिया गया। मुझसे किसी ने चर्चा तक नहीं की और कुछ दिनों बाद जब मुझे मालूम पड़ा कि मेरा सम्मान होना है तो मैंने प्राइमरी रि-एक्शन में बोथराजी को फोन किया कि मैं सम्मान लेने नहीं आऊँगा। अध्यक्षजी ने बहुत शान्तभाव से कहा-यह मेरा नहीं किन्तु जज साहब की अध्यक्षता में गठित समिति ने सर्वसम्मति से निर्णय किया है, आपको संघ के निर्णय की पालना करनी चाहिये। मैंने संघ महामंत्रीजी से बात की, संघ कार्यालय से पूछताछ की तो मुझे मालूम हुआ कि सम्मान की बात 'रत्नम्' में प्रकाशित की जा चुकी है और एवं कार्ड भी प्रेषित हो चुके हैं। मैंने संघ आदेश की कभी अवहेलना नहीं की और संघ आदेश की अवहेलना का भाव मेरे स्वभाव में भी नहीं है। संघ आदेश को मैंने सर्वोपरि माना है। फिर भी मैंने जज साहब से, संघाध्यक्ष भाई श्री सुमेरसिंहजी बोथरा से और मेरे सहयोगी श्री रतनलालजी बाफना से मदद की गुहार की और कहा कि सम्मान ही देना तो 'संघ शिरोमणि' की जगह 'संघ सेवक' का सम्मान दिया जाये। मैंने अपने-आपको हमेशा संघ-सेवक माना है। मैंने चौपड़ा साहब को माखनलाल चतुर्वेदी की कविता सुनाई, वह इस प्रकार हैः-

चाह नहीं मैं सुरबाला के, गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी माला में, बिंध प्यारी को ललचाऊँ
चाह नहीं सम्राटों के शव पर, हे हरि डाला जाऊँ
चाह नहीं देवों के सिर पर, चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक,
मातृ भूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

मैंने अपने मन की भावना संघनायक पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के श्रीचरणों में भी निवेदन करवाई, पर मेरी अपील की मामूली सुनवाई हुई।

खैर.......मैं संघ के इस सम्मान को संघ-सेवक के रूप में स्वीकार करता हूँ। मैं संघ का समर्पित सिपाही हूँ और तहेदिल से संघ के प्रति समर्पित हूँ। संघ-सेवा के रूप में मेरी 28 सालों की यात्रा जिसमें मुझे शीर्ष पद पर सेवा का अवसर मिला, जब मैंने संघाध्यक्ष पद का दायित्व सँभाला तब मुझे आचार्य भगवन्त का आशीर्वाद, मेरी श्रद्धा के केन्द्र आचार्यश्री, उपाध्यायश्री, संतप्रवर, साध्वीप्रमुखा सहित महासती मण्डल का मुझे मार्गदर्शन मिला। संघाध्यक्ष भाई श्री सुमेरसिंहजी बोथरा, पूर्व अध्यक्ष आदरणीय श्री रतनलालजी बाफना, श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, मेरे मित्र ज्ञानेन्द्रजी बाफना, प्रसन्नचन्दजी बाफना, स्व. श्री गणेशमलजी भण्डारी और सभी महामंत्रियों का मुझे सहयोग मिला। संघ संरक्षक श्री नथमलजी हीरावत का मार्गदर्शन मुझे शुरु से बराबर मिल रहा है। संघ संरक्षक स्व. श्री उमरावमलजी ढड्ढा, संघ सरंक्षक स्व. श्री इन्दरचन्दजी हीरावत, संघ-संरक्षक स्व. श्री पूनमचन्दजी बढेर, संघ संरक्षक स्व. श्री सायरचन्दजी काँकरिया, संघ-संरक्षक स्व. श्री जँवरीलालजी ओस्तवाल, संघ-संरक्षक स्व. श्री कनकमलजी चोरड़िया, संघ-संरक्षक श्री श्रीकृष्णमलजी लोढ़ा, संघ-संरक्षक डॉ. सम्पतसिंहजी भाण्डावत, संघ-संरक्षक श्री डी. आर. मेहता साहब, संघ-संरक्षक श्री भँवरलालजी बाफना, संघ-संरक्षक श्री रिखबराजजी बाफना, संघ-संरक्षक प्रो. चान्दमलजी कर्नावट, संघ-संरक्षक श्री उमरावमलजी सुराना और आज जिनको संघरत्न से सम्मानित किया गया है, संघ-संरक्षक श्री ईश्वरलालजी ललवाणी का मुझे सहयोग प्राप्त हो रहा है।

मुझे संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों का, गजेन्द्रनिधि ट्रस्ट के ट्रस्टियों का विशेष रूप से ट्रस्टी श्री सरदारसिंहजी कर्नावट का, संघ के सभी गुरुभ्राताओं का, रत्नसंघ परिवार का मुझे सहयोग रहा है, सहयोग मिल रहा है। संघ-सेवा में मुझे अपनी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत का हर कदम पर सहयोग रहा। घर-परिवार में ही नहीं, संघ-समाज के एक-एक व्यक्ति को कैसे संभालना, उन्हें भली-भाँति ज्ञात था। मेरे जीवन को धर्म के सन्मुख लाने में और जीवन को सुन्दर बनाने में 90 प्रतिशत सहयोग धर्मपत्नी का रहा। संघ-सेवा में मुझे मेरे सुपुत्र पराग का, पुत्रवधू श्रीमती मोनिका का, मेरी सुपुत्री सुधा व सुनीता का, जँवाईराजा राजेशजी-विजयजी का भी बराबर सहयोग रहा। संघ के सभी सदस्यों का प्रेम व सहयोग मेरा असली सम्मान है। आज संघ ने मुझे सम्मानित किया है, उसे मैं संघ सेवक के रूप में स्वीकार करता हूँ।

मैं जब से संघ-सेवा में सक्रिय हुआ तभी से मेरे मन में कुछ कल्पनाएँ रहीं, आज भी हैं। मैं मानता हूँ, हमारा संघ जीवन्त है। संगठन की भावना भी है। संघ के कार्यक्रम भी हैं। संघ की उन्नति तभी संभव है जब हम परस्पर सहयोग से संघ को एवं संघ की संस्थाओं की प्रवृत्तियों को आगे बढ़ायें, संघ के कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में शक्ति लगायें। मेरी तो कामना है कि अपना संघ श्रद्धेय गौतममुनिजी म.सा. द्वारा रचित संघ समुत्कीर्तन गीत को साकार करे।

मैं कभी-कभी किसी को कुछ कह जाता हूँ। मुझे याद है श्राविका मण्डल की सभा में मेरे लिए एक बहिन ने 'कठोर' किन्तु 'कोमल' शब्द का प्रयोग किया, वहीं रतनलालजी बाफना के लिए मृदुभाषी शब्द बोला। मैंने कभी किसी को कुछ कठोर शब्द कहें हों या किसी का दिल दुःखाया हो तो उसके लिए तहेदिल से क्षमाप्रार्थी हूँ।

मुणोत साहब ने कहा- संघ की प्रवृत्तियों के पोषण में और कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में धन की जरूरत है, रहेगी भी। इसलिए मैं प्रथम चरण में एक करोड़ रूपये की राशि मुणोत फाउण्डेशन के माध्यम से संघ की गतिविधियों के संचालन में लगाने की भावना व्यक्त कर रहा हूँ। संघ-सेवा में पाली का विशेष महत्त्व रहा है। मुझे अध्यक्ष पद का दायित्व पाली में मिला, पाली संघ की गतिविधियों में भी मैं सहभागी रहा, आज सम्मान भी इसी धरा पर हुआ है। मैं पालीवासियों के प्रेम से प्रभावित हूँ। पाली संघ ने सुन्दर व्यवस्था की है।

पाली में संघाध्यक्ष पद दायित्व ग्रहण करने के बाद जोधपुर में संघ की बैठक में मैंने कहा था :-

मुब्बराए हुनर हूँ मैं, सरोपा एब हूँ अकबर
अहबावों की इनायत है, जो अच्छा समझते हैं।

मैं पाली में वही दो पंक्तियें फिर से इसलिये सुना रहा हूँ कि मेरे में कई ऐब हैं। आप मुझे अच्छा समझते हैं, यह आपका बड़प्पन है। आप-सबने तीन घंटे से ज्यादा समय तक वक्ताओं को तन्मयता पूर्वक, भावना पूर्वक, खुशी-खुशी सुना और शान्त-सहज रूप से बैठ हुए हैं यह आप-सबका प्रेम ही तो है। मैं देशभर से आए संघ परिवार के सभी सदस्यों के स्नेह से अभिभूत हूँ। आपको सबको प्रणाम!

संघाध्यक्ष महोदय द्वारा धन्यवाद

संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते कहा कि मैंने अपने जीवन में सैंकड़ों-हजारों बैठकों में भाग लिया है, किन्तु ऐसी शांति,

ऐसा अनुशासन, ऐसी स्नेह की मिसाल कभी देखने में नही आई। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत एवं संघ-संरक्षक माननीय श्री ईश्वरलालजी ललवाणी का संघ ने आत्मीयता की शुभ भावना से स्वागत-सत्कार-बहुमान किया वह अपने-आपमें अनुपम उदाहरण है। देशभर के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं ने, संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों ने, पाली संघ के सकल जैन समाज ने धैर्य के साथ समूचे समारोह की शोभा बढ़ाई उसकी जितनी प्रशंसा की जाय, कम है। पाली श्रीसंघ का उत्साह, कार्य-सम्पादन में परस्पर सहयोग और रात-दिन एक कर समारोह को सफल बनाने की व्यक्ति-व्यक्ति की भावना अनुकरणीय, अनुमोदनीय, अभिनन्दनीय है। समारोह की अध्यक्षता के लिए मुझे कहा गया तभी से मेरे मन में विचार आता रहा कि सबसे पीछे बोलने वाले को कौन सुनेगा ? लेकिन आप-सबका मुणोत साहब और बाबूजी के प्रति इतना प्रगाढ़ प्रेम है कि कोई उठने का नाम तक नहीं ले रहा है, सब शान्त-सहज होकर वक्ताओं को सुन रहे हैं। मैं लम्बा कुछ नहीं कह कर मात्र इतना ही कहूँगा कि पाली श्रीसंघ ने सुन्दर आयोजन किया, आप-सबका श्रम सार्थक है, मैं अपनी ओर से एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ परिवार की ओर से हृदय से साधुवाद-धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। समारोह में पधारे न्यायमूर्ति माननीय श्री मुनीश्वरनाथजी भण्डारी, पाली नगर परिषद् के सभापति भाई श्री केवलचन्दजी गोलेच्छा, पाली क्षेत्र के विधायक भाई श्री ज्ञानचन्दजी पारख का हृदय से शुक्रगुजार हूँ। संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों के साथ देश भर से पधारे संघ परिवार का मैं आभार व्यक्त किए बिना नहीं रह सकता। मुणोत साहब और बाबूजी के परिवारजनों को भी मैं धन्यवाद देता हूँ और आशा रखता हूँ कि संघ-सेवा में आप भी अपना योगदान करते रहेंगे। आप-सबका आभार, धन्यवाद!

संघ-सेवा शिरोमणि और संघरत्न सम्मान से सम्मानित दोनों महानुभावों के प्रति जन समुदाय का स्नेह ही था जो कार्यक्रम के अन्तिम चरण में माल्यार्पण हो या शॉल ओढ़ाना हो या अपनी ओर से स्मृति चिह्न भेंट करना हो लम्बी लाइन लग गई। मंच का आलम यह था कि जब तक स्वागत नहीं कर लें तब तक वहाँ से कोई हटना नहीं चाहता था। करीब आधे घंटे तक व्यक्ति-व्यक्ति ने अपने मुखियाओं का स्वागत करके ही मंच छोड़ा। हर्ष-हर्ष, जय-जयकार के गगनभेदी जयनाद समारोह समाप्ति तक पूरे उत्साह से चल रहे थे।

समाचार-विविधा

पाली में तप-त्याग की निरन्तरता

संघनायक परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 9 के पाली चातुर्मास में तप-त्याग, साधना-आराधना, ज्ञान-ध्यान आदि निरन्तर प्रवाहमान हैं। चातुर्मास के तीन माह व्यतीत होने के पश्चात् भी श्रावक-श्राविकाओं के उत्साह एवं उल्लास में कमी परिलक्षित नहीं हुई है। एक ओर जहाँ श्रावक-श्राविकाएँ सामायिक-स्वाध्याय, पौषध-प्रतिक्रमण के साथ उपवास, आयंबिल, एकासन, दया-संवर आदि की साधना-आराधना में रत हैं वहीं युवक-युवतियाँ ज्ञान-ध्यान के क्रम में आगे बढ़ रहे हैं। संवत्सरी के पश्चात् देश के विभिन्न ग्राम-नगरों से श्रावक-श्राविकाओं एवं श्रीसंघों का श्रद्धेय आचार्यप्रवर की सेवा में दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ क्षमायाचना हेतु आवागमन बना हुआ है। संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की साधारण सभाओं का आयोजन एवं सम्मान समारोह 8 से 10 अक्टूबर तक विशाल रूप से तथा व्यवस्थित ढंग से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। तप-साधिका श्राविकारत्न श्रीमती प्रकाशदेवी जी धर्मपत्नी श्री चैनरूपचन्द जी बाफना ने 108 से 113 दिवसीय तप के पच्चक्खाण आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से प्राप्त किए। तत्पश्चात् साधिकारत्न जोधपुर साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के दर्शनार्थ पधारी तथा यहाँ 115 दिवसीय तप के पच्चक्खाण ग्रहण किए।

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराणा मार्केट, पाली-306401 (राज.) फोन-02932-250021

आवास व्यवस्था- (1) सुराणा सराय, पुराना बस स्टेण्ड के पास, पाली, फोन-02932-250944 (2) श्री जैन रत्न हितैषी छात्रावास, आनन्द नगर, मण्डिया रोड, पाली, फोन नं. 02932-230452 (विशेष वाहनों के लिए)

सम्पर्क सूत्र- (1) श्रीमान ताराचन्दजी सिंघवी, 7-गाँधी कटला, पाली- 306401, फोन-02932-222005 (2) श्री रूपकुमारजी चौपड़ा, बी-60, केशर कुंज, वीर दुर्गादास नगर, पाली- 306401, फोन-02932-220603/94141-22304

गोटन में उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में धर्म-प्रभावना

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 के गोटन चातुर्मास में धर्म-ध्यान का अनूठा ठाट लगा हुआ है। छोटा क्षेत्र होते हुए भी त्याग-तप, ज्ञान-ध्यान एवं साधना-आराधना का निरन्तर क्रम बना हुआ है। विभिन्न तपश्चर्याएँ निरन्तर गतिशील हैं। श्रीमती सिम्पल जी धर्मपत्नी श्री रेखचन्द जी ओस्तवाल ने 11 दिवसीय तप किया है। प्रतिदिन समीपवर्ती-सुदूरवर्ती ग्राम-नगरों से श्रीसंघों एवं श्रावक-श्राविकाओं का दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण हेतु आवागमन बना हुआ है। स्वाध्याय संघ द्वारा 12 से 16 अक्टूबर तक आयोजित पंच दिवसीय शिविर में विभिन्न क्षेत्रों से पधारे स्वाध्यायियों ने भी उपाध्यायप्रवर आदि मुनिवृन्द की पावन सन्निद्धि का लाभ प्राप्त किया है। गोटन श्रीसंघ की आतिथ्य सेवाभक्ति प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर कॉलोनी, गोटन 342902 (जिला-नागौर) राज.

सम्पर्क सूत्र- (1) श्री भैरूलालजी ओस्तवाल, रसाली स्टोर, पो.-गोटन-342903 (जिला-नागौर) राज., फोन-01591-230135/94141-18701/94144-84911 (2) श्री चैनरूपचन्दजी बाफना, स्टेशन रोड़, पो.-गोटन-342902 (जिला-नागौर) राज., फोन-94131-69889

युवक परिषद् की वार्षिक आमसभा पाली में सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की वार्षिक आमसभा 08 अक्टूबर, 2010 को पाली में स्थानीय बालिया गर्ल्स स्कूल प्रांगण में सम्पन्न हुई। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंगलाचरण से हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, संयोजक-संरक्षक मण्डल, श्रीमान् रतनलाल जी बाफना, संयोजक-शासन सेवा समिति, संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, श्री सी.एम बच्छावत क्षेत्रीय पूर्व प्रधान पूर्वी भारत संभाग, श्रीमान् गौतम जी हुण्डीवाल-कार्याध्यक्ष, श्री रूपकुमार जी चौपड़ा-अध्यक्ष, श्री जैन रत्न हितैसी श्रावक संघ, पाली, श्री ताराचन्द जी सिंघवी, मंत्री- हितैषी श्रावक संघ, पाली, श्री कैलाशचन्द

जी हीरावत, युवक परिषद् के निदेशक श्री सुमतिचन्द जी मेहता, अध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा, कार्याध्यक्ष श्री राजकुमार जी गोलेच्छा, महासचिव श्री मनोज जी कांकरिया तथा युवक परिषद् पाली शाखा के शाखाप्रमुख श्री कल्पेश जी लोढ़ा मंचासीन रहे। मंचासीन विशिष्ट अतिथियों का भारतीय पद्धति से माला व शॉल द्वारा सम्मान किया गया।

महासचिव श्री मनोज जी कांकरिया ने युवक परिषद् की वर्षभर में सम्पन्न हुई कार्य गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत ने युवारत्नों से संघ व परिषद् के कार्य के प्रति सजग, सक्रिय व अनुशासनबद्ध रहने का आह्वान करते हुए धर्म के प्रति श्रद्धा रखने व इसे व्यावहारिक रूप में जीवन में अपनाने की प्रेरणा की। संघाध्यक्ष महोदय श्री सुमेरसिंह जी बोथरा सा. ने युवारत्नों के कार्य के प्रति सन्तोष व्यक्त किया तथा समर्पण, समन्वय, संस्कार व सापेक्षता का भाव बनाए रखने की युवारत्नों से अपेक्षा की। कार्याध्यक्ष श्री राजकुमार जी गोलेछा ने अपने उद्‌बोधन में युवकों में कार्य के प्रति प्रामाणिकता बढ़ाने पर बल दिया। अध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा ने आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृति योजना, युवकों में व्यक्तित्व विकास में अभिवृद्धि की कार्य योजना सहित अन्य कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की।

आमसभा में युवक परिषद् के राष्ट्रीय कार्यक्रमों के तहत सराहनीय कार्य के लिए तथा दिवस विशेष पर प्रशंसनीय कार्य के लिए शाखाओं को स्मृतिचिह्न प्रदान कर बहुमान किया गया, जिसका विवरण इस प्रकार है-

चतुर्विधसंघ सेवा पुरस्कार 2010- श्री जैन रत्न युवक परिषद् बालोतरा, जोधपुर, हांगकांग। **सामायिक स्वाध्याय पुरस्कार 2010-** श्री जैन रत्न युवक परिषद् सवाईमाधोपुर। **धार्मिक शिक्षण पुरस्कार 2010-** श्री जैन रत्न युवक परिषद् जयपुर, चेन्नई। **स्वधर्मी वात्सल्य व समाज में सेवा पुरस्कार 2010-** श्री जैन रत्न युवक परिषद् हिण्डौन।

विशेष दिवस सम्मान 2010- तप दिवस- श्री जैन रत्न युवक परिषद् जयपुर, **सामायिक दिवस-** भोपालगढ़, **दया दिवस-** चेन्नई, **स्वाध्याय दिवस-** ब्यावर, **संयम दिवस-** भरतपुर, **अहिंसा/जीवदया दिवस-** गंगापुर सिटी, **व्यसनमुक्ति दिवस-**पीपाड़ शहर।

राष्ट्रीय अभियान के तहत उल्लेखनीय कार्य करने पर शाखा सम्मान

आओ 25 बोल सीखें- श्री जैन रत्न युवक परिषद्- खेरली, आओ

12 व्रत धारण करें *- श्री जैन रत्न युवक परिषद्-जयपुर।*

200 किलोमीटर श्रावकोचित विहार सेवा पुरस्कार 2010- श्री जैन रत्न युवक परिषद्-पाली, जोधपुर, भरतपुर, सवाईमाधोपुर, अहमदाबाद, सूरत, बालोतरा, बैंगलोर, पीपाड़ शहर।

व्यक्तिगत कार्यक्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए अग्राङ्कित युवारत्नों को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया-

1. **तप**- मासखमण करने पर श्री मुकेश सूर्या-पाली, श्री मुपेश ओस्तवाल-गोटन, श्री रेखचन्द ओस्तवाल-गोटन को तथा वर्षीतप करने पर श्री सुमतिचन्द मेहता-पीपाड़शहर, श्री राजीव नाहर-सूरत, श्री ललित गोलेछा-अहमदाबाद, श्री राजकुमार गोलेच्छा-पाली को तथा श्री श्रेणिक चोरडिया-चेन्नई को नियमित एकासना करने पर सम्मानित किया गया।
2. **संयम**- ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने पर श्री जयचन्द मरलेचा-अमरावती को तथा 12 व्रत धारण करने पर श्री राजकुमार गोलेछा-पाली, श्री उगम गाँधी-पाली, श्री ललित गोलेछा-अहमदाबाद, श्री परेशकुमार मुथा-पीपाड़, श्री सुरेन्द्र गुन्देचा-पीपाड़, श्री राकेशचन्द जैन-हिण्डौनसिटी, श्री राजेशकुमार जैन-हिण्डौन सिटी, श्री मनोज कांकरिया-जोधपुर को तथा जयपुर शाखा के श्री आलोक हीरावत, श्री सुनिल मुणोत, श्री पवन गुन्देचा, श्री मनीष मुणोत, श्री सौरभ बाफना, श्री सिद्धार्थ बाफना, श्री संजीव कोठारी, श्री विकास मेहता, श्री रितेश बोथरा, श्री सुशील जैन, श्री ललित जैन, श्री शुभम जैन, श्री महावीर जैन, श्री हेमन्त जैन, श्री अमित जैन, श्री लविश जैन, श्री अंकित मेहता, श्री प्रकाश लोढ़ा, श्री विपेन्द्र पालडेचा, श्री नीरज जैन, श्री रितुल पटवा, श्री अमित पटनी को प्रदान किया गया।
3. **शिक्षा** के क्षेत्र में श्री कैलाश गोलेछा-बालोतरा को, आई.आई.टी. मुम्बई में 99 प्रतिशत प्राप्तांक व तृतीय रेंक प्राप्त करने पर तथा श्री निर्मल ओस्तवाल-गोटन को सी.ए. में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम रैंक प्राप्त करने पर शिक्षा 2010 का पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।
4. **समाज सेवा** में सराहनीय कार्य के लिए श्री अनिल गोलेछा-पाली, श्री विवेक कुमार जैन-भरतपुर, श्री संजय कोठारी-अहमदाबाद, श्री विरेन्द्र कांकरिया-चेन्नई, श्री अशोक बाफना-चेन्नई, श्री मनीषकुमार जैन-खेरली, श्री श्रेणिकराज कटारिया-पीपाड़शहर तथा श्री लोकेश कुम्भट-जोधपुर को

स्मृति चिह्न प्रदान किया गया।

उपर्युक्त व्यक्तिगत कार्यक्षेत्र के अलावा श्रावकोचित विहार सेवा में सात दिन उल्लेखनीय सेवा देने वाले तथा प्रथम बार स्वाध्यायी-सेवा देने वाले विभिन्न शाखाओं के युवारत्न बन्धुओं को भी पुरस्कार स्वरूप स्मृतिचिह्न प्रदान कर बहुमान किया गया। परिषद् के चारों राष्ट्रीय कार्यक्रमों, दिवस विशेष एवं अभियानों में उत्कृष्ट कार्य के लिए श्री जैन रत्न युवक परिषद् पाली को सर्वश्रेष्ठ शाखा का पुरस्कार प्रदान किया गया तथा इसी क्रम में छोटी शाखा द्वारा सराहनीय कार्य के लिए श्री जैन रत्न युवक परिषद् पीपाड़शहर शाखा को सर्वश्रेष्ठ शाखा का पुरस्कार प्रदान किया गया।

प्रथम बार स्वाध्यायी सेवा देने पर सम्मान- श्री मनीष लोढ़ा-जोधपुर, श्री पंकज ओस्तवाल-जोधपुर, श्री राजेश बोहरा-चेन्नई, श्री सौरभ जैन-खेरली।

विहार में 7 दिन उल्लेखनीय सेवा देने वाले युवकों को भी सम्मानित किया गया।

अध्यात्म चेतना वर्ष समाप्ति पर एकान्तर तप-साधना की पूर्णाहुति

प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100वें जन्म-दिवस पौष शुक्ला चतुर्दशी, जिसका अध्यात्म-चेतना वर्ष के रूप में शुभारंभ पालनपुर (गुजरात) में दिनाँक 30 दिसम्बर 2009 को किया गया था, में कई तप-साधकों ने एकान्तर तप की साधना प्रारम्भ की। पूज्य आचार्य भगवन्त की शताब्दी समारोह का समापन पौष शुक्ला चतुर्दशी दिनाँक 18 जनवरी, 2011 को होगा।

परमाराध्य आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन श्री चरणों में कई श्री संघों ने अपने-अपने क्षेत्र की पुरजोर भावपूर्ण विनति प्रस्तुत की है। आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव यथा समय जैसा भी अवसर होगा, स्थान विशेष की स्वीकृति फरमा सकते हैं। आचार्यप्रवर जहाँ भी विराजेंगे वहाँ अध्यात्म-चेतना वर्ष की समाप्ति पर जो तप-साधक पारणक करने को इच्छुक हैं, वे अपने नाम संघ के प्रधान कार्यालय को पत्र से अथवा फोन करके अवगत कराने का कष्ट करें। व्यवस्था की दृष्टि से पारणक करने वालों की जानकारी अपेक्षित है। *-पूरणराज अबानी, महामंत्री- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 0291-2636763, 2641445*

पाली में 13-14 नवम्बर को राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी

अध्यात्म-चेतना वर्ष के अन्तर्गत पाली (राज.) में परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन सान्निध्य में 13-14 नवम्बर 2010 को 'आचार्य हस्ती का साहित्य और समाज को अवदान' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ पाली के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित की जा रही है। संगोष्ठी का शुभारम्भ 13 नवम्बर को प्रातः 9 बजे सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराणा मार्केट में आचार्यप्रवर की सन्निधि एवं राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया के मुख्यातिथ्य में होगा। संगोष्ठी में कुल सात सत्र होंगे तथा लगभग 40 विद्वानों के भाग लेने की सम्भावना है। रात्रिकालीन सत्र श्री जैन रत्न हितैषी छात्रावास में होना सम्भावित है।

स्वाध्यायियों का राष्ट्रीय अधिवेशन 26 दिसम्बर को जलगाँव में

परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के दूरदर्शीपूर्ण चिन्तन से श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा स्वाध्यायी-सेवा की प्रवृत्ति प्रारम्भ हुई। विगत 65 वर्षों से संघ द्वारा भारतवर्ष ही नहीं, अपितु विदेशों में भी स्वाध्यायियों को भेजकर पर्युषण पर्व के दौरान पर्वाराधना का कार्यक्रम सम्पन्न करवाया जाता है। आज पूरे भारतवर्ष में स्वाध्याय संघ के लगभग 1100 स्वाध्यायी हैं, जिनमें से प्रतिवर्ष लगभग 475 स्वाध्यायी अपनी सेवाएं निरन्तर प्रदान कर रहे हैं। वर्ष में एक बार नये-पुराने सभी स्वाध्यायी एक स्थान पर एकत्रित हो आपस में जानकारी प्राप्त करें, इसलिए स्वाध्यायियों का एक राष्ट्रीय अधिवेशन 26.12.2010 को जलगाँव में आयोजित किया जा रहा है। **अधिवेशन में पूर्व संयोजकों एवं सचिवों का जिन्होंने संघ को विशिष्ट योगदान दिया उनका तथा विशिष्ट सेवा प्रदान करने वाले स्वाध्यायियों का सम्मान भी किया जायेगा।** सभी स्वाध्यायियों से निवेदन है कि उक्त अधिवेशन में जरूर पधारने का लक्ष्य रखें तथा अपने पधारने की स्वीकृति कार्यालय को प्रेषित करावें। साथ ही जिन स्वाध्यायियों के परिचय-पत्र अभी नहीं बने हैं, वे अपना विवरण एवं फोटो कार्यालय को शीघ्र प्रेषित करावें, ताकि उनका

परिचय-पत्र बनाकर उन्हें अधिवेशन से पूर्व भिजवाया जा सके।

-नवरतन डागा, संयोजक

गोटन में स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

स्वाध्यायियों के ज्ञान में अभिवृद्धि हेतु श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा दिनांक 12 से 16 अक्टूबर 2010 तक गोटन में परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में पंचदिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में जयपुर, जोधपुर, पीपाड़, भोपालगढ़, सवाईमाधोपुर, बजरिया, कुशतला, चौथ का बरवाड़ा, अलीगढ़, गंगापुर सिटी, हिण्डौन सिटी, नदबई, खेरली, मन्दसौर क्षेत्र के कुल 40 स्वाध्यायियों ने भाग लिया। प्रातः 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक शिविर दिनचर्या के माध्यम से स्वाध्यायियों ने 4 कालांशों में विभिन्न विषयों का विद्वान् प्रशिक्षकों से ज्ञानार्जन किया। स्वाध्यायियों ने प्रातःकालीन सामूहिक कक्षाओं में आत्मतत्त्व की गूढ़ विवेचना प्राप्त की तो स्वास्थ्य से सम्बन्धी अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियों की जानकारी भी ली। पूज्य उपाध्यायप्रवर ने अनंत कृपा कर सायंकालीन सामूहिक कक्षा में मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रमुनि जी म.सा. तथा श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनि जी म.सा. को अनुमति प्रदान की, जिससे विभिन्न विषयों पर स्वाध्यायियों को विशिष्ट प्रेरणा प्राप्त हुई। रात्रिकालीन प्रतिक्रमण के पश्चात् वक्तृत्व कला विकसित करने हेतु ईपीएस कार्यक्रम के साथ ही विभिन्न प्रतियोगिताएँ भी आयोजित हुई। प्रवचन में विशेष प्रेरणा के माध्यम से लगभग सभी शिविरार्थियों ने बारहव्रत में से कई व्रत शिविर काल में ग्रहण कर पुस्तिका जमा करवाई। शिविर में स्थानीय 11 नये स्वाध्यायी बनाये गये, जो शिविर की विशेष उपलब्धि कही जा सकती है। संयोजक श्री नवरतन जी डागा एवं सचिव श्री राजेश जी भण्डारी ने भी शिविर के दौरान समय का भोग दिया। शिविर में आवास-निवास एवं भोजन-व्यवस्था गोटन श्रीसंघ द्वारा बहुत ही सुन्दर एवं सुनियोजित तरीके से की गई। शिविरार्थियों को पुरस्कार भी गोटन श्रीसंघ द्वारा प्रदान किया गया। गोटन श्री संघ के संरक्षक श्री ओमप्रकाश जी ओस्तवाल, अध्यक्ष श्री भैरूलाल जी ओस्तवाल, मंत्री श्री चैनरूपचन्द जी बाफना, सुश्रावक श्री हंसराज जी चौपड़ा सहित सभी कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग शिविर के दौरान प्राप्त हुआ। *-राजेश भण्डारी, सचिव*

शिक्षण बोर्ड की 9 जनवरी 2011 की परीक्षा सामायिक, प्रतिक्रमण एवं 25 बोल पर आधारित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक आम सभा 10 अक्टूबर 2010 को पाली में सम्पन्न हुई। इस आम सभा में सर्वानुमति से यह प्रस्ताव स्वीकृत किया गया कि इस अध्यात्म चेतना वर्ष में शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा सामायिक, प्रतिक्रमण एवं 25 बोल पर केन्द्रित करके आयोजित की जानी चाहिए। इस प्रस्ताव की क्रियान्विति हेतु 9 जनवरी 2011 की परीक्षा गत परीक्षाओं में सीखे गये सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, मूल अर्थ एवं प्रश्नोत्तर आदि को आधार बनाकर मूल्यांकन परीक्षा के रूप में आयोजित की जा रही है।

परीक्षा सम्बन्धी विशेष तथ्य-

- **प्रथम कक्षा की परीक्षा यथावत् शिक्षण बोर्ड की प्रथम कक्षा की संशोधित पाठ्यपुस्तक के अनुसार आयोजित होगी।**
- **द्वितीय एवं तृतीय कक्षा की परीक्षा- सामायिक सूत्र, मूल पाठ- शब्दार्थ, भावार्थ, प्रश्नोत्तर, 32 दोष अर्थ सहित, सामायिक लेने व पारने की विधि, 25 बोल पूर्ण (मूल) पर आधारित होगी।**
- **चौथी से आठवीं कक्षा की परीक्षा- प्रतिक्रमण सूत्र-मूल पाठ- विधि, शब्दार्थ, भावार्थ, प्रश्नोत्तर, 25 बोल पूर्ण (मूल) पर आधारित होगी।**

1. इस मूल्यांकन परीक्षा में केवल वे ही महानुभाव भाग ले सकते हैं, जिन्होंने इस बोर्ड द्वारा आयोजित कक्षा 1 से 8 तक की विगत किसी भी परीक्षा में भाग ले रखा है।
2. प्रथम कक्षा की परीक्षा में पहली बार परीक्षा देने वाले अथवा प्रथम कक्षा में जो अनुत्तीर्ण हुए हैं, वे ही भाग ले सकेंगे।
3. द्वितीय एवं तृतीय कक्षा में वे परीक्षार्थी भाग ले सकेंगे जिन्होंने इस संस्था की प्रथम अथवा द्वितीय कक्षा उत्तीर्ण कर रखी है। अथवा द्वितीय, तृतीय कक्षा की परीक्षा में जो अनुत्तीर्ण हुए हैं। द्वितीय व तृतीय कक्षा का एक समान ही प्रश्न-पत्र रहेगा।
4. चौथी से आठवीं कक्षा की परीक्षा में एक समान ही प्रश्न-पत्र रहेगा। इस परीक्षा में इस संस्था द्वारा आयोजित किसी भी वर्ष तीसरी से आठवीं कक्षा

उत्तीर्ण किये हुए अथवा चौथी से आठवीं कक्षा में अनुत्तीर्ण रहे परीक्षार्थी भाग ले सकते हैं।

5. उक्त तीनों परीक्षाओं की तैयारी हेतु निम्नलिखित पुस्तकें अधिकृत रहेंगी-
   1. प्रथम कक्षा की परीक्षा हेतु- संशोधित पाठ्यक्रम की प्रथम कक्षा की पुस्तक।
   2. सामायिक-सार्थ, प्रश्नोत्तर एवं 25 बोल मूल की परीक्षा हेतु- शिक्षण बोर्ड की द्वितीय कक्षा की पुस्तक।
   3. प्रतिक्रमण मूल, अर्थ, भावार्थ विधि, प्रश्नोत्तर एवं 25 बोल मूल पाठ की परीक्षा हेतु- शिक्षण बोर्ड की चतुर्थ व पंचम कक्षा की पुस्तक एवं 25 बोल मूल की कोई पुस्तक।
6. इस मूल्यांकन परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए लिखित व मौखिक दोनों परीक्षाओं में न्यूनतम 80 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है। 80 प्रतिशत अथवा इससे अधिक अंक पाने वाले सभी परीक्षार्थियों को 100 रुपये का प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।
7. उक्त परीक्षाएँ 80 अंकों की लिखित एवं 20 अंकों की मौखिक रूप से ली जायेंगी। लिखित परीक्षा के तुरन्त पश्चात् उसी केन्द्र पर मौखिक परीक्षा ली जायेगी।
8. यह मूल्यांकन परीक्षा कक्षा 1 से 8 तक को तीन भागों में विभक्त करके आयोजित की जा रही हैं। अतः वरीयता पुरस्कार भी तीन कक्षाएँ मानकर प्रत्येक कक्षा के अलग-अलग प्रदान किये जायेंगे।
9. तीनों कक्षाओं में वरीयता सूची में **प्रथम स्थान** पाने वाले प्रत्येक को 5000/-रुपये, **द्वितीय स्थान** पाने वाले प्रत्येक को 3000/- रुपये, **तृतीय स्थान** पाने वाले प्रत्येक को 2000/-, **अगले दस प्रत्येक** परीक्षार्थियों को 1000/- रुपये प्रोत्साहन पुरस्कार के रूप में प्रदान किये जायेंगे।
10. आगामी परीक्षा जो जुलाई-2011 में आयोजित करनी है वह विधिवत् कक्षावार, शिक्षण बोर्ड के संशोधित पाठ्यक्रमानुसार ही आयोजित होगी।
11. परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र भरते समय प्रथम कक्षा वाले- प्रथम कक्षा ही लिखें। द्वितीय -तृतीय कक्षा वाले- **'सामायिक सार्थ'** लिखें तथा

चौथी से आठवीं कक्षा वाले परीक्षार्थी- 'प्रतिक्रमण सार्थ' लिखें।

12. **यह विशेष मूल्यांकन परीक्षा है।** प्रथम कक्षा वालों को छोड़कर शेष परीक्षार्थियों को जुलाई-2011 में पहले उत्तीर्ण की गई कक्षा से आगे की कक्षा की परीक्षा देनी होगी।

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्रः- आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड कार्यालय, घोड़ों का चौक, जोधपुर-0291-2630490, सुशीला बोहरा-संयोजक-94141-33879, धर्मचन्द जैन-रजिस्ट्रार-93515-89694

कर्मसिद्धान्त वारिधि (पूर्वार्द्ध) का परिणाम घोषित

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 1 अगस्त, 2010 व 8 अगस्त 2010 को आयोजित कर्म सिद्धान्त वारिधि (पूर्वार्द्ध) प्रथम व द्वितीय प्रश्न पत्र की परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। परीक्षार्थियों का परिणाम इस प्रकार रहा- बाबूलाल जी कटारिया 87, 91, वसन्ता कुमारी-24, सन्तोष कुमार-35.5, मंजू भण्डारी 74.5, 86, कंचन नाहटा 65.5, 61, प्रेमराज पिंपाड़ा 88, 91, गणेशदेवी लोढ़ा 69, 67, मंजूदेवी रेतरिया 76.5, 64, मोनाली पिंचा-62, हेमलता सांखला-40.5, पुष्पा कोठारी 79, 96, बसन्ता संकलेचा 40, 41, लीलाबाई कोठारी 82, 72, महावीरप्रसाद जैन 15, 8। महासतीवर्याओं का परिणाम यहाँ प्रकाशित नहीं किया जा रहा है।

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें- सुशीला बोहरा-संयोजक, 0291-2630490, 94141-33879, www.jainratnaboard.com, email : info@jainratnaboard.com

मैसूर में जैन विद्या पर अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

कर्नाटक सरकार के पुरातत्त्व निदेशालय एवं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में जैन विद्या के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (Jainism Through Ages : A historical perspective) विषय पर 8-10 अक्टूबर 2010 तक मैसूर में एक अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें देश-विदेश के अनेक विद्वानों ने भाग लिया। संगोष्ठी अत्यन्त भव्य रूप में एवं विचारोत्तेजक रही।

देवनार पशुवध केन्द्र में बढ़ते पशुकत्ल को रोकें

राजस्थान टाइम्स, अलवर से ज्ञात हुआ है कि देवनार पशुवध केन्द्र की वध क्षमता बढ़ाकर अब 15000 पशुओं का प्रतिदिन वध करने का निर्णय लिया गया है, जिसका अहिंसा प्रेमियों को विरोध करना चाहिए। जीव दया मण्डल ट्रस्ट, टोंक ने एतदर्थ महानगर पालिका, मुम्बई के आयुक्त को विरोध पत्र प्रेषित किया तथा राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री आदि को प्रतियाँ भिजवायी हैं।

श्रवण बेलगोला में अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत संगोष्ठी सम्पन्न

बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ, श्रवणबेलगोला एवं राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में 12 से 14 अक्टूबर 2010 तक प्राचीन प्राकृत ग्रन्थों में वैश्विक मूल्य (Universal Values of Ancient Prakrit Texts) विषय पर अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी में उद्घाटन भाषण राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने दिया। संगोष्ठी में देश-विदेश के अनेक विद्वानों ने भाग लिया।

उपाध्याय पुष्करमुनि जन्म-शताब्दी गौरव समारोह सम्पन्न

उदयपुर- उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि का जन्म शताब्दी गौरव समारोह 10 अक्टूबर को उत्साह एवं उमंग के साथ सम्पन्न हुआ। श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय के समीप 32 हजार वर्ग फीट पाण्डाल में मेवाड़, मारवाड़, मध्यप्रदेश, गुजरात, पंजाब, दिल्ली आदि 12 प्रान्तों के 7 हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने भाग लेकर 'जय पुष्कर' की ध्वनि गुंजित की। प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री ने कहा कि गुरु पुष्कर ने धर्म, अध्यात्म, शिक्षा, चिकित्सा एवं साहित्य के क्षेत्र में कई श्रावक तैयार किए जो समाज सेवा में अग्रणी कार्य कर रहे हैं। सलाहकार श्री दिनेशमुनि आदि ने भी सभा को सम्बोधित किया। सांसद रघुवीर मीणा, नगर परिषद् सभापति रजनी डांगी ने भी सम्बोधित किया। गौरव समारोह का शुभारम्भ नवकार मंत्र के सामूहिक जाप से हुआ। मुख्य अतिथि मुम्बई के उद्योगपति श्री धनसुख भाई डोसी थे। समारोह के पूर्व 6 अक्टूबर को 174 महिला-पुरुषों ने नीवी का तप किया तथा 3 अक्टूबर को 108 लोगों ने रक्तदान किया।

-गणेशलाल गोखरू, मंत्री

आचार्य देवेन्द्र श्रुतसेवा सम्मान श्रीचन्द सुराना को

प्रख्यात जैन साहित्यकार श्री चन्द सुराना 'सरस' को मरणोपरान्त 10 अक्टूबर को आयोजित उपाध्याय पुष्करमुनि जन्मशताब्दी गौरव समारोह में 'आचार्य देवेन्द्र श्रुत सेवा सम्मान' प्रदान किया गया। यह सम्मान उनके पुत्र श्री राजेश सुराना एवं उनके परिवार ने ग्रहण किया। 2005 से प्रारम्भ इस पुरस्कार के अन्तर्गत 21 हजार रुपये नकद, प्रशस्तिपत्र, शाल एवं श्रीफल प्रदान किए जाते हैं।

संक्षिप्त-समाचार

पीपाड़ शहर- विदुषी महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में पीपाड़ शहर में धर्म-ध्यान का ठाट लगा हुआ है। यहां 51, 18,15 की तपस्या के साथ ही 11, 9, 8, 7, 6, 5, 4, 3 की तपस्या भी सम्पन्न हुई है। नवरंगी एवं पचरंगी भी यहां पूर्ण हुई है। 20-25 बहिनों के एकान्तर तप चल रहे हैं। श्री चमनलाल जी मुथा एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शांताबाई जी ने आजीवन शीलव्रत का नियम महासती से अंगीकार किया है।

हैदराबाद- आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष के अन्तर्गत श्री जैन रत्न सेवासंघ, रामकोट, हैदराबाद के तत्त्वावधान में 'साहित्य : मानव का मित्र' विषयक संगोष्ठी जैनाचार्य हस्ती जन्मशताब्दी समिति द्वारा 31 अक्टूबर 2010 को आयोजित की गई।

सूरत- उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी म.सा. 'कमल' के सुशिष्य तपस्वी श्री संजय मुनि जी म.सा. 'सरल' जिनके 16 वर्षों से वर्षीतप चल रहा है, ने मासखमण की उग्र तपश्चर्या की, जिसका पूर 2 अक्टूबर को सानन्द सम्पन्न हुआ।

इन्दौर- दिगम्बर जैन समाज में 'अखिल भारतीय दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ' बनाने हेतु योजना चल रही है। इसके माध्यम से पूरे भारत में एक हजार सोशल ग्रुप खोलकर एक लाख युवा दम्पतियों को सतत आपस में जोड़े रखने की योजना है। श्री प्रदीप कुमार कासलीवाल एवं श्री बाहुबली पंड्या इसमें अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। फोन नं.- 09300828128

बैंगलोर- यहाँ विजयनगर में आचार्यप्रवर श्री जयमल जी म.सा. की 303वीं जयन्ती मनायी गई तथा साध्वी श्री जयमाला जी 95 दिवसीय तप का अभिनन्दन किया गया।

बधाई/चुनाव

रत्नसंघ के ईश्वरबाबू, डॉ. विनोद सुराणा आदि का सम्मान

चेन्नई- राज्यसभा सदस्य ईश्वरलाल जैन (देखें, परिचय जिनवाणी अगस्त-2010) को 3 अक्टूबर रविवार को वर्ल्ड जैन मिशन द्वारा 'जैन समाज-रत्न' और देश-दुनिया के नामी विधि प्रतिष्ठान सुराणा एण्ड सुराणा इण्टरनेशनल अटोर्नीज के कर्ताधर्ता (सीईओ) डॉ. विनोद सुराणा को 'विश्व युवा-रत्न' अलंकरण से सम्मानित किया गया। सुश्राविका लीलावती सुराणा और सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष पी. शिखरमल सुराणा के सुपुत्र डॉ. विनोद सुराणा उच्च न्याय-शिक्षा प्राप्त एक अन्तरराष्ट्रीय युवा वकील तथा विधिवेत्ता हैं। उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय से कानून में डॉक्टरेट की। अमेरिका के कॉर्नेल लॉ स्कूल व हार्वर्ड लॉ स्कूल, ब्रिटेन के लन्दन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स तथा भारतीय प्रबंध संस्थान (आई.आई.एम., अहमदाबाद और बैंगलोर) से कानून व विभिन्न विषयों का उच्च अध्ययन किया। न्याय क्षेत्र में उन्होंने छोटी उम्र में बड़े व उल्लेखनीय कीर्तिमान स्थापित किये हैं। भारत के कुछ प्रतिष्ठित विधि विश्वविद्यालयों में अतिथि प्रोफेसर डॉ. सुराणा के कुशल नेतृत्व में 14 मूट अदालत वार्षिक स्पर्धाएँ हर वर्ष होती हैं, जिनमें 32000 से अधिक विधि विद्यार्थी लाभान्वित हो चुके हैं। यह कार्य अपने परिमाण में अब तक का विश्व में सबसे बड़ा कार्य है। न्याय-जगत की जानी-मानी हस्तियों ने डॉ. सुराणा के कार्यों की सराहना की है। डॉ. सुराणा प्रथम गैर-अमेरिकन हैं, जो अमेरिका में 85 देशों के वकीलों और विद्यार्थियों के संगठन 'इंटरनेशनल लॉ स्टूडेण्ट एसोसिएशन' के अध्यक्ष चुने गये। भारतीय प्रधानमंत्री के जापान और दक्षिण अफ्रीका के प्रवास में उनके शिष्टमण्डल में जाने वाले आप एकमात्र वकील हैं। न्याय, कानून, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के अनेक संगठनों से जुड़े डॉ. सुराणा का व्यक्तित्व बहुआयामी योग्यताओं का अद्भुत मिश्रण है। जैनत्व के संस्कारों से अनुप्राणित डॉ.सुराणा देश-विदेश में जहाँ भी जाते हैं, वहाँ अपनी जैन जीवन शैली, सादगी और प्रतिभा से सबको प्रभावित कर देते हैं। आप, आपके माता-पिता और धर्मनिष्ठ पत्नी रश्मि, चारों ही गजेन्द्र निधि के न्यासी हैं।

राजा अन्नामलै सभागार में आयोजित भव्य समारोह में "जितो" संस्था

के प्रेरक, जैन एकता के लिए समर्पित गणिवर मुनि नयपद्मसागर को 'विश्व शान्ति दूत' और जैन इण्टरनेशनल विमेन ऑर्गनाइजेशन (जिवो) की प्रेरिका साध्वी मयणाश्री को 'विश्व नारी-रत्न' की उपाधियाँ प्रदान की गई। इस अवसर पर' राजस्थान के पूर्व गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया, पत्रकार अमृत जैन (दिल्ली) और समाज सेवी सुशील बांठिया (उदयपुर) को भी 'जैन समाज-रत्न' अलंकरण से नवाजा गया। इसी अवसर पर पन्द्रह उपवास से ऊपर के दर्जनों तपस्वियों का बहुमान किया गया।

जोधपुर- युवारत्न श्री धीरज जी डोसी, कार्यालय कर्मी, स्वाध्याय संघ, जोधपुर

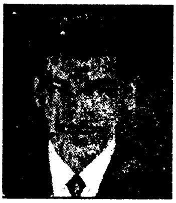

को 'कन्या भ्रूण हत्या' विषयक निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर 11 हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया गया है। प्रतियोगिता दुर्ग (छत्तीसगढ़) से ''नानेश जैन ज्ञान प्रतियोगिता'' के रूप में आयोजित थी।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ, श्राविकारत्न श्रीमती बिलमकंवर जी मेहता

धर्मपत्नी सुश्रावक श्री छतरचन्द जी मेहता का 5 अक्टूबर 2010 को देहावसान शुभ भावों से अपनी सुपुत्री श्रीमती उर्मिला सिंघवी से नवकार मंत्र श्रवण करते-करते हो गया। श्राविकारत्न की परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। वे ज्ञान-क्रिया सम्पन्न संत-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में सदैव तत्पर रहती थीं। सामायिक-स्वाध्याय के प्रति रुचिशील श्राविकारत्न का जीवन सेवाभावना, सरलता, सहनशीलता, सादगी आदि गुणों से समन्वित था। घोड़ों का चौक स्थानक में नियमित धर्म-ध्यान करने वाली प्रमुख श्राविकाओं में आपका नाम था। आपने अपने जीवन में कई व्रत-नियम अंगीकार कर रखे थे। आप सामायिक, प्रतिक्रमण, नवकारसी, रात्रिकालीन तिविहार व अन्य व्रत 30-40 वर्षों से नियमित करती रही व आपने अनेक आयम्बिल ओलीजी व बड़ी तपस्याएँ कीं। आपके द्वारा प्रदत्त संस्कारों से ही सम्पूर्ण मेहता परिवार संघ-सेवा में अग्रणी रहता है। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री आनन्दचन्द जी व पुत्रवधू श्रीमती शशीजी कोलकाता के सम्मानित एवं नित्य

सामायिक करने वाले श्रावक-श्राविका हैं। आपके मंझले पुत्र श्री प्रकाशचन्द जी व पुत्रवधू श्रीमती प्रभा जी आबूधाबी (U.A.E.) में रहते हुए नित्यप्रति सामायिक करते हैं। 15 वर्षों से वहाँ पर पर्युषण पर्व में अट्ठाई करते हुए वहाँ के लोगों को प्रतिक्रमण करवाते हैं। इस वर्ष इन्होंने 15 की तपस्या की। आपके कनिष्ठ पुत्र श्री अरूण जी मेहता (पूर्व स्वाध्याय-संघ सचिव व पूर्व संघ-महामंत्री) व पुत्रवधू श्रीमती सुनीता जी मेहता (पूर्व श्राविका मण्डल महामंत्री एवं वर्तमान श्राविका मण्डल, जोधपुर की अध्यक्षा) जोधपुर में रहते हुए संघ के प्रत्येक धार्मिक क्रियाओं में अग्रणी रहते हैं एवं धर्म की अच्छी जानकारी रखते हैं। आपके पौत्र-पौत्र वधुएँ व पौत्री भी अच्छे धार्मिक संस्कारवान एवं रुचिवान हैं।

चेन्नई- श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ श्राविकारत्न श्रीमती प्रमिला जी बाघमार धर्मपत्नी

संघ-सेवी, कर्तव्यनिष्ठ श्री गणपतराज जी बाघमार एवं पुत्रवधू परम गुरुभक्त दृढ़धर्मी श्रावकरत्न श्री घीसूलाल जी बाघमार (कोसाणा) का 20 अक्टूबर 2010 को एक दिवसीय संलेखना संथारापूर्वक स्वर्गगमन हो गया। सुश्राविका ने अपना अन्तिम समय जानकर जागृत अवस्था में जयगच्छीय पूज्य श्री जयधुरन्धर मुनि जी के मुखारविन्द से 19 अक्टूबर को संलेखना संथारा स्वीकार किया था। बाघमार परिवार की आचार्य हस्ती, आचार्य हीरा एवं उपाध्याय मान के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति रही है। श्रीमती प्रमिला जी अस्वस्थता में भी धर्ममय रहकर साधना-आराधना में रत रही। आपने अपने जीवनकाल में 8,9,15 दिवसीय एवं कई छोटी-बड़ी तपस्याएँ कीं। आप अपने पीछे सुपुत्र हेमन्त जी, उपेन्द्र जी का भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं। समाधिमरण के उपलक्ष्य में उदारमना सुश्रावक श्री गणपतराज जी बाघमार ने संघ-समाज के धर्मकार्यों हेतु बड़ी सम्मानजनक राशि प्रदान की है। आपके परिवार में दोनों पुत्रों सहित तीन गजेन्द्र निधि के सदस्य हैं।

नागौर- स्थानकवासी संघ एवं रत्न संघ के पूर्व अध्यक्ष सेवानिष्ठ वयोवृद्ध सेठ

श्रीमान सन्तोकचन्द जी सुराणा का 96 वर्ष की आयु में 15 घंटे तक चले संथारे के साथ 16 अक्टूबर 2010 को समाधिमरण हो गया। आपने साध्वीरत्न इन्दुबाला जी म.सा. के मुखारविन्द से पच्चक्खाण कर उनके सान्निध्य में समाधिमरण प्राप्त किया।

आप हस्तीमल जी म.सा. के अनन्य भक्त थे। आप दो पुत्र, छः पुत्रियाँ, चार पौत्र, चार प्रपौत्रों से भरापूरा परिवार छोड़कर काल को प्राप्त हुए हैं। आजीवन शीलव्रती होने के साथ आपके प्रतिदिन सामायिक एवं रात्रि भोजन का त्याग था। युवाओं को आप सामायिक, प्रतिक्रमण के लिए प्रेरित करते थे। आपका पूरा परिवार आचार्यप्रवर, उपाध्याय प्रवर एवं सन्त-सतीवृन्द का दृढ़भक्त है। आपने संघ की महती सेवा की है। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर के नागौर चातुर्मास में भी सुराणा परिवार ने ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप के साथ चतुर्विध संघ-सेवा का लाभ लिया। जीवन के अन्तिम क्षणों में भी समाधि भावों में लीन रहकर संघ-समाज के लिए अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया।

जयपुर- समाजसेवी, संघनिष्ठ सुश्रावक श्री ज्ञानचन्द जी बम्ब का 12 अक्टूबर

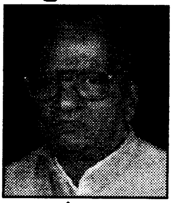

2010 को स्वर्गगमन हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप अपने जीवनकाल में कई धार्मिक, सामाजिक एवं सरकारी संस्थाओं के पदों पर आसीन रहे। आपश्री ने श्री अमर जैन मेडीकल रिलीफ सोसाइटी के संयोजक पद एवं अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक के उपाध्यक्ष पद को सुशोभित किया। आपको अपने चाचा संघ रत्न सुश्रावक स्व.श्री सिरहमल जी बम्ब से विरासत में धार्मिक एवं राजनैतिक संस्कार प्राप्त हुए। नगरनिगम के सदस्य रूप में जनता की सेवा में सदैव तत्पर रहने के साथ सकल जैन समाज के संत-सतीवर्ग की स्वास्थ्य संबंधी सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आपके परिवार की आचार्य प्रवर, उपाध्याय प्रवर एवं सन्त-सती प्रवर के प्रति पूर्ण श्रद्धा भक्ति है। आप अपने पीछे धर्मसहायिका धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रा जी बम्ब, दो पुत्र एवं दो पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं। परिवार जनों ने मृत्यु उपरान्त आपके नेत्र दान किए हैं।

चेन्नई- श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ एवं कर्तव्यनिष्ठ सुश्रावक श्री मांगीलाल जी कोठारी

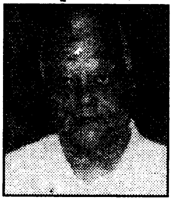

सुपुत्र स्व. श्री केवलचन्द जी कोठारी, चेन्नई का खवासपुरा (मारवाड़) में 82 वर्ष की वय में 16 सितम्बर 2010 को स्वर्गवास हो गया। साधक सुश्रावक ने आजीवन शीलव्रत का नियम लेने के साथ 11,9,8, 3 की तपस्याएँ कीं। आप जमीकन्द के त्यागी थे तथा प्रतिवर्ष नियम से आचार्य श्री, उपाध्याय श्री और साध्वी प्रमुखा के दर्शन-वन्दन के लिए जाते थे। आप अपने पीछे पुत्र प्रकाशचन्द जी कोठारी एवं तीन सुपुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं। आप शासन

प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के सांसारिक बहनोई थे।

हैदराबाद- श्रीमती सुआ बाई जी धर्मपत्नी स्व. श्री फूलचन्द जी कटारिया का 25 सितम्बर 2010 को छह दिवसीय चौविहार संलेखना के साथ मरण हो गया। आपने 2 वर्षी तप, मासखमण, 60 अठाई, 6 पचोले, 6 चोले, 125 तेले आदि कई दीर्घकालीन तप किए।

चांगोटोला (बालाघाट) - दृढ़धर्मी धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री जेठमल जी मोदी का

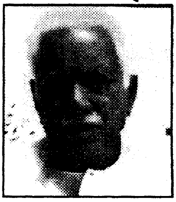

79 वर्ष की अवस्था में 24 सितम्बर 2010 को संलेखना संथारा सहित देवलोक गमन हो गया। आप पिछले 30-35 वर्षों से नवकारसी एवं चौविहार का प्रत्याख्यान नियमित रूप से करते थे। प्रतिदिन उभयकालीन प्रतिक्रमण एवं 5-6 सामायिक किया करते थे। स्वास्थ्य में गिरावट के चलते व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. से त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण करते समय परिवार में शोक संताप एवं आडम्बर न करने के पच्चखाण ले लिये थे। 24 सितम्बर 2010 को पूर्ण सजगता से संथारा ग्रहण कर 3 बार 'मत्थएण वंदामि' उच्चारण कर उन्होंने देह त्यागी। क्रियावान चारित्र आत्माओं पर उनकी अटूट श्रद्धा थी।-अमित जैन

जोधपुर- गुरुभक्त संघसेवी सुश्राविका उमरावकंवर जी भण्डारी धर्मपत्नी संघसेवी

सुश्रावक श्री सरदारमल जी भण्डारी का 20 अक्टूबर 2010 को देहावसान हो गया। श्रद्धानिष्ठ श्राविका की सामायिक-स्वाध्याय के प्रति विशेष रुचि थी। उनका अधिकांश समय धर्मसाधना में व्यतीत होता था। उन्होंने अनेकविध त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। आप द्वारा प्रदत्त सुसंस्कारों के कारण आपके सभी सुपुत्र शिक्षा, चिकित्सा एवं व्यवसाय के क्षेत्र में विशिष्ट ख्याति प्राप्त हैं। आपके प्रेम एवं वात्सल्य भाव के कारण पूरा भण्डारी परिवार माला में पिरोये मोतियों के समान सुशोभित हैं। आप अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की पूर्व महासचिव श्रीमती बिमला जी भण्डारी की सासूजी थी।

सोजत सिटी-सुश्राविका श्रीमती पुष्पाकंवर जी धर्मपत्नी श्री उत्तमचन्दजी कोरी मूथा सुपुत्री श्रीमती चूकी कंवर जी मांगीलाल जी गोलेच्छा गिरी वाले का 17 अक्टूबर, 2010 को देहावसान हो गया। श्राविकारत्न का जीवन धर्मनिष्ठ था। रत्न संघ के शासन सेवा समिति के पूर्व सदस्य श्रावकरत्न श्री हस्तीमल जी

गोलेच्छा, ब्यावर की वे सांसारिक अग्रजा थी।

भोपालगढ़- निर्भीक एवं स्पष्टवक्ता संतसेवी, संघसेवी श्री गौतमचन्द जी

चौरडिया का करीब 60 वर्ष की उम्र में 3 अक्टूबर, 2010 को भोपालगढ़ में चैन्नई से आये दर्शनार्थी संघ का आतिथ्य सत्कार करते-करते स्वर्गवास हो गया। आपकी आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत एवं सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा थी। महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. के चातुर्मास में आपने सती मंडल की सेवा एवं आतिथ्य सत्कार का अभूतपूर्व लाभ लिया। आप अपने पीछे 2 पुत्र एवं 3 पुत्रियों का भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।

दिल्ली- धर्मपरायण, कर्मठ समाजसेवी, निर्भीक लेखक, ओजस्वी वक्ता,

सुश्रावक श्री कमल चन्द्र जी जैन (मालू) का हृदय गति रुक जाने से 3 अक्टूबर 2010 को निधन हो गया। आप सरलता, सादगी एवं उदारता की प्रतिमूर्ति थे। आप श्रद्धेय उप. प्रवर्तिनी महासती श्री कौशल्या जी महाराज 'श्रमणी' के सांसारिक भाई थे। आप अपने अन्तिम समय में चाँदनी चौक (बारादरी) दिल्ली के ओसवाल जैन समाज के इतिहास के तथ्यों का संकलन करने में व्यस्त थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

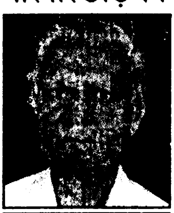

जोधपुर- सुश्रावक श्री महावीरचन्द जी सिंघवी सुपुत्र स्व. श्री उमरावचन्द जी सिंघवी का 8 अक्टूबर 2010 को स्वर्गगमन हो गया। आप धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न थे। आपकी सामायिक-स्वाध्याय के प्रति विशेष रुचि थी। आपका जीवन सरल था।

भरतपुर- सुश्रावक श्री मुकेशचन्द जी जैन का स्वर्गवास 55 वर्ष की वय में 03 अक्टूबर 2010 को ब्रेन हेमरेज से हो गया। आप स्वाध्याय संघ की सभी गतिविधियों से जुड़े हुए थे। उनकी आचार्य श्री एवं रत्नवंश के समस्त संत एवं सतियों पर अटूट श्रद्धा थी।

रामपुर (महाराष्ट्र)- श्री भागचन्द जी बोकड़िया का 85 वर्ष की वय में 8 सितम्बर 2010 को निधन हो गया।

कुण्डेरा- धर्मनिष्ठ, सेवाभावी एवं श्री पोरवाल संघ (समिति) क्षेत्र सवाईमाधोपुर के पूर्व अध्यक्ष सुश्रावक श्री रामप्रताप जी पंचौली का 1 सितम्बर 2010 को

स्वर्गगमन हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे।

जोधपुर- संघ-सेवी सुश्रावक श्री सुरेशचन्द जी मोहनोत का 18 अक्टूबर, 2010 को देहावसान हो गया। आपकी रत्न संघ के संत-सतीवृन्द के प्रति पूर्ण श्रद्धा-भक्ति थी। आप सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में यथाशक्य भाग लेते थे। मोहनोत परिवार संघ-सेवा में समर्पित रहा है।

गदग (कर्नाटक)- सुश्राविका श्रीमती जम्मूदेवी बागरेचा धर्मपत्नी स्व. श्री

चुन्नीलाल जी बागरेचा का 86 वर्ष की उम्र में दिनांक 24 अक्टूबर 2010 को स्वर्गगमन हो गया। आप धर्मनिष्ठ सुश्राविका थी। उनका जीवन सरलता, मृदुता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई है।

जोधपुर- सुश्रावक श्री सायरचन्द जी घीया का स्वर्गवास दिनांक 11 अक्टूबर 2010 को हो गया। आप धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न थे। सादा जीवन उच्च विचार की उक्ति आपके जीवन में परिलक्षित होती थी। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

हार्दिक आभार

अध्यात्म चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में मैसूर (कर्नाटक) में दिनाँक 17 से 19 सितम्बर 2010 को व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में त्रिदिवसीय अध्यात्म चेतना आयाम शिविर श्री एस.एस. जैन संघ, मैसूर के तत्त्वावधान में त्याग-तप के साथ सम्पन्न हुआ। त्रिदिवसीय अध्यात्म आयाम की पूर्ण सफलता हेतु मैसूर श्री संघ के पदाधिकारियों व सदस्यों का हार्दिक आभार। जो श्राविकाएँ अध्यात्म चेतना वर्ष की पूर्णता पर आचार्य प्रवर के विराजित स्थान पर पारणक करना चाहती हैं वे भी हमें सूचित करें।

-मधु सुराणा, अध्यक्ष, 9382679660

श्री अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर (राज.)

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

3000/- साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

723 श्री जैन महावीर भवन, बासन गेट, भरतपुर (राजस्थान)

724 श्री प्रसन्न जी पारख, स्टेशन रोड़, जलगाँव (महाराष्ट्र)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

12811 Shri Sanjay C. Kothari ji, Sayaji Gunj, Baroda (Guj.)

12814 Shri Prakash Chand ji Jain, Aundh, Pune (M.H.)

12816 श्री जिनेश गुगलिया, अरिहन्त, कुशल ऑटो के पीछे, अमरावती (महाराष्ट्र)

12817 डॉ.सोनल एम.भायानीजी,विजयगढ़ अपार्टमेन्ट,माँगीलाल प्लॉट,कैंप,अमरावती (महा)

12818 श्री मितुल जी विजावत, नागरिक बैंक के पास, भवानीमण्डी, जिला–झालावाड़ (राज.)

12819 श्री संजय जी संचेती, 1/5, शांतिकुञ्ज, मेन रोड़, अलवर (राजस्थान)

12820 श्री नरेन्द्रमल जी डागा, 65-सी, देवनगर, पाललिंक रोड, जोधपुर (राजस्थान)

12821 श्री निवेश जी कुम्भट , 406, नीला गुलाब, 1 सी रोड, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)

12822 श्री गिरिश के. गुन्देचा जी, शान्ति मेडिकल स्टोर, 1910, रामलेन, रत्नागिरि (महा.)

12823 श्री गौरवजी जैन, अग्रसेन कॉलोनी के पीछे, वरगमा रोड, हिण्डौनसिटी, करौली (राज.)

12824 श्री चन्दूलाल जी जैन, राजहंस ज्वैलर्स, एम. जी. रोड, महाड़, जिला–रायगढ़ (महा.)

12825 श्रीमती रीना जी शाह, चिन्मय अपार्टमेन्ट, आनन्द महल रोड़, अडाजन, सूरत (गुज.)

12826 श्री नेमकुमार जी जैन, 1646/13, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

12827 श्री राजेन्द्र जी सर्राफ, सर्राफ सदन, रायपुर का हत्था, पावटा बी रोड, जोधपुर (राज.)

12828 श्री रामभरोसे जी (शशि), राम भवन, पोस्ट–गोटन, जिला–नागौर (राजस्थान)

12829 श्री विजय कुमार जी जैन, 185, लाल बाग, झालरापाटन, जिला–झालावाड़ (राज.)

12842 श्री माँगीलाल जी गोठी,ए-3, जैनम्, पावटा रोड, काबरा स्कूल के पास, जोधपुर(राज.)

12845 Smt.Rajkumari ji, West Mamballam, Chennai (T.N.)

12846 Shri Ramesh Kumar ji Ranka, Selam (Tamilnadu)

12848 श्री विमलचन्दजी जैन,अभय सैकेण्डरी स्कूल के पास,गंजखेरली,जिला–अलवर(राज.)

12849 श्री रोपिलजी जैन, हनुमान मंदिर के पीछे, नगर रोड चुंगी, डीग, जिला–अलवर (राज.)

12850 श्री विकास कुमार जी जैन, ए-74, बुद्ध विहार, विजय मंदिर रोड़, अलवर (राजस्थान)

12851 श्री सुभाषचन्दजी जैन, पुरानी अनाज मंडी के पीछे, गंजखेरली, जिला–अलवर (राज.)

12852 श्री अतुल जी जैन (एडवोकेट), 3, सिविल लाईन, अलवर (राजस्थान)

12853 श्री राजकुमार जी जैन, 1 क 43-44, शिवाजी पार्क, अलवर (राजस्थान)

12854 श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन, बी-142, सूर्य नगर, अलवर (राजस्थान)

12855 श्रीमती पुष्पलताजी जैन, आनन्दपुरम्, निकट पृथ्वीनाथ मंदिर,शाहगंज, आगरा (उ.प्र.)

12856 श्री अशोकजी जैन,राधिकाविहार,कर्मयोगी एनक्लेव,कमला नगर के पास,आगरा(उ.प्र)

12857 श्री एम. एल. जी जैन, 25/241, नयाबास, लोहामण्डी, आगरा (राजस्थान)

12858 श्री यशवन्त जी खण्डेलवाल, 503, राजेन्द्र नगर, भरतपुर (राजस्थान)

12859 श्रीमती शशिकांताजी जैन,राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय,मण्डी अटलबन्ध,भरतपुर (राज.)

12860 श्री हरिओम जी सारस्वत, नये हास्पिटल के पीछे, भरतपुर (राजस्थान)

12861 श्रीमती पुष्पा जी जैन, कोठारी भवन, पाईबाग, बासनगेट, भरतपुर (राजस्थान)
12862 श्री थानसिंह जी सैनी, डिप्टी एस.एस., बयाना जक्शंन, बयाना, जिला-भरतपुर (राज.)
12863 श्री प्रशान्त कुमार जी जैन, मु.पोस्ट-भोंट, वाया-सेवर, जिला-भरतपुर (राजस्थान)
12864 श्री प्रवीण जी जैन, सी-108, रणजीत नगर, भरतपुर (राजस्थान)
12865 श्री वीरेन्द्र जी सोलंकी, ए-7, इन्द्रा नगर, हीरादास, भरतपुर (राजस्थान)
12866 श्री एस.के.जैन जी, विद्युत लोको शेड, पश्चिम रेलवे कॉलोनी, तुगलकाबाद, नई दिल्ली
12867 श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन, 1432, सराय वार्ड, नियर रेल्वे स्टेशन राऊ, इन्दौर (म.प.)
12868 श्री शिवकुमार जी जैन (एडवोकेट), ख्वास जी का रास्ता, बड़ी चौपड़, जयपुर (राज.)
12869 श्री अरूणजी जैन, 201, पर्ल अक्षिता अपार्टमेन्ट, सूर्य मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.)
12870 श्री शीतल जी जैन, 5-झ-55, जवाहर नगर, टिफिन सेन्टर के पास, जयपुर (राज.)
12871 श्री सुरेशचन्द जी जैन, नारायण निवास के सामने, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राज.)
12872 श्री अमितराजजी जैन, 67, प्रताप नगर, ग्लास फैक्ट्री के पीछे टोंक रोड़, जयपुर (राज.)
12873 श्री दीपक जी जैन, 54/147, पंचवटी मार्ग, हीरापथ, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
12874 श्री विवेक कुमार जी जैन, 79/64, शिप्रा पथ, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
12875 श्री प्रकाशचन्द जी जैन, 124/229, थड़ी मार्केट, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
12876 श्री खेमचन्द जी जैन, 76/67, शिप्रा पथ, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
12877 श्री विमलचन्द जी जैन, 67/2, अयोध्या पथ, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
12878 श्रीमती ऊषा जी जैन, बी-252, ज्ञानदीप, वैशाली नगर, जयपुर (राजस्थान)
12879 श्री विकास जी जैन, गली नं. 9/ए 249, मोतीनगर, जयपुर (राजस्थान)
12881 Shri Ajit ji Singavi, Dombivali (East), Mumbai(M.H.)
12883 श्री जिनेश जी जैन, 33, गाँधी नगर विस्तार, अलवर (राजस्थान)
12884 श्री सत्येन्द्र जी कुम्भट, आनन्द 41, बापू नगर, पाली-मारवाड़ (राजस्थान)
12885 श्री रमेशचन्द जी जैन, 19, न्यू ग्रेन मार्केट, साढौरा (हरियाणा)

44 सदस्य अर्द्धमूल्य योजना श्री उत्तमचन्द जी भंडारी, बैंगलोर के सौजन्य से

12815 श्री सुनील जी लोढ़ा, मु.पोस्ट-धनोप, वाया-कोठिया, जिला-भीलवाड़ा (राजस्थान-2)
12847 श्री रिखबचन्दजी सुखलेचा, एम.एस.बी.का रास्ता, जौहरीबाजार, जयपुर (राजस्थान-3)
12880 श्री लखपतराजजी सिंघवी, राधाविहार कॉलोनी, न्यू सांगानेर रोड, सोडाला, जयपुर (राज.)
12882 श्री देवेन्द्र कुमार जी सामोता, 14/47, शिप्रा पथ, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
12886 श्री हेमप्रकाशजी जैन, रामा जनरल स्टोर, पोस्ट-कुण्डेरा, जिला-सवाईमाधोपुर (राज.)

अर्द्धमूल्य योजना श्री मदनलाल जी बाघमार, जबलपुर के सौजन्य से

12812 श्री जीवनदास जी नामदेव, गोरखपुर बाजार, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
12813 श्री राजेश जी वत्सल, पान दरीबा, सर्राफा वार्ड, जबलपुर (मध्यप्रदेश)

50 सदस्य अर्द्धमूल्य योजना श्री दिनेश जी खिंवसरा, नागौर के सौजन्य से

12830 श्री शान्तिलाल जी ओस्तवाल, सदर बाजार, गोटन, जिला-नागौर (राजस्थान)
12831 श्री सम्पतराज जी कांकरिया, जोधपुर रोड़, पीपाड़सिटी, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
12832 श्री मांगीलाल जी जीरावला, सिंधी धर्मशाला के पास, प्रताप नगर, जोधपुर (राज.)

12833 श्री पदमचन्द जी ओस्तवाल, रसाली स्टोर्स, मु.पोस्ट–गोटन, जिला–नागौर (राज.)

12834 श्री प्रेमचन्द जी लुणावत, मु.पोस्ट–पांचलासिद्धा, जिला–नागौर (राजस्थान)

12835 श्री सुमेरचन्दजी चोरड़िया,टॉवर चौराहा,103,डागलिया चेम्बर्स,प्रथम मंजिल, इन्दौर

12836 श्री रतनेशजी बोहरा,चौहान साहिब का नोहरा,तुर्जी का झालरा के पास,जोधपुर (राज.)

12837 श्री पीयूष जी बोहरा, 715, महावीर नगर, महामन्दिर, जोधपुर (राजस्थान)

12838 श्री नवरतन जी छल्लानी, 3 सी, महावीर नगर, महामन्दिर, जोधपुर (राजस्थान)

12839 श्री महावीरचन्द जी बाफणा, जोधपुर रोड़, गोटन, जिला–नागौर (राजस्थान)

12840 श्री सुशील कुमार जी, जैन मन्दिर के पास, गोटन, जिला–नागौर (राजस्थान)

12841 श्री अमृतकुमारजी चोरड़िया,मु.पोस्ट–कलमाडी, ता.–शाहदा,जिला–नदुरबार (महा.)

12843 श्री राजेश जी भंसाली, शांतिपुरा, हाथी का ओडा, जोधपुर (राजस्थान)

12844 श्री निखिलजी भंसाली,दाऊ जी का मंदिर के सामने,हाथीराम का ओडा,जोधपुर(राज.)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

11000/- श्रीमती लाडकंवर जी, श्री प्रकाशचन्द जी कोठारी, चेन्नई, स्व. श्री मांगीलाल जी कोठारी, चेन्नई की पावन स्मृति में भेंट।

5100/- श्री सोहनलाल जी बुधमल जी, सम्पतराज जी, राजेन्द्र जी बाघमार, मैसूर, सोहनलाल जी बाघमार के परिवार द्वारा पन्द्रह की 1, नौ की 2, आठ की 3, सात की 1, छह की 1, तेले की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

5000/- श्रीमती शान्तिबाई जी बोहरा धर्मपत्नी श्री सजनमल जी बोहरा, वैलीपुरम-चेन्नई, की ओर से भेंट।

5000/- श्री मोहनलाल, पारसमल जी, सुशील कुमार जी, आनन्द कुमार जी (ब्यावर वाले), तिरूवन्नामलाई पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पाली में, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के गोटन में एवं सभी सन्त-सती मंडल चातुर्मास स्थलों पर दर्शन, वन्दन करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

3000/- श्री श्रेणिकराज जी, सुनीलकुमार जी धोका, मैसूर, व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. ठाणा 6 के मैसूर चातुर्मास एवं श्रीमती सुनीता बाई धोका के मासखमण के उपलक्ष्य में।

3000/- श्री रीखबचन्द जी, सुभाषचन्द जी अशोक कुमार जी श्रेणिकराज जी धोका, मैसूर, व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. ठाणा 6 के मैसूर चातुर्मास एवं श्रीमती ललीता बाई धोका के मासखमण के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/- उत्तमचन्द जी विमलराज जी नागसेठिया, मारथली-बैंगलोर, अपने ससुर जी स्व. श्री मांगीलाल जी कोठारी की पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्री प्रकाशचन्द जी लुणिया, पल्लिपट्ट आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पाली में दर्शन, वन्दन एवं आगामी चातुर्मास निमाज में करने की विनति के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री जयचन्द जी लुणिया, पल्लिपट्ट मातुश्री की स्मृति में एवं आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पाली में दर्शन, वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री विनयचन्द जी, प्रकाशचन्द जी, सुरेशचन्द जी बम्ब, जयपुर, श्रीमान् ज्ञानचन्द जी सुपुत्र स्व. श्री अनोपचन्द जी बम्ब का दिनांक 12/10/2010 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

2000/- श्री पी. दलपतराज जी अरविन्द कुमार जी सिंघवी, मैसूर, श्री अरविन्द सिंघवी की 8 की तपस्या, पुत्रवधू श्रीमती पायल सिंघवी की 9 की तपस्या, पुत्रवधू श्रीमती आरती की 9 की तपस्या, धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या देवी के एकान्तर तप की तपस्या एवं पुत्र अभिषेक सिंघवी के तेले के उपलक्ष्य में भेंट।

2000/- श्री जीवराज जी, कमलसिंह जी हींगड़, मदनगंज-किशनगढ़ सप्रेम भेंट।

1111/- श्री पुखराज जी, भागचन्द जी पारख, जलगाँव, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पाली में दर्शन, वन्दन करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती लाड़देवी जी सुकलेचा, ब्यावर, सुपौत्र रत्न के जन्म होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री मनसुखलाल जी, अशोक जी, राकेश जी एम. गुगलिया, लोणावाला, श्री अशोक मनसुखलाल जी गुगलिया के ग्यारह की तपस्या सुख-साता पूर्वक सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री धीरजकुमार जी मेहता, चेन्नई, श्रीमती ममता धर्मपत्नी श्री राजकुमार जी मेहता, पुत्रवधू श्री प्रसन्नराज जी मेहता के 15 की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री शाह प्रेमराज जी, आनन्द कुमार जी मुणोत, के.जी.एफ., श्री आनन्द कुमार जी मुणोत के ग्यारह की तपस्या सुख-साता पूर्वक सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री चम्पालाल जी भंवरलाल जी पारख, डोंडाइचा, प्रचार-प्रसार हेतु सप्रेम भेंट।

1100/- श्री जवाहरलाल जी श्रीमती शोभाकँवर जी बाघमार (कोसाणा वाले), चेन्नई, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पाली में, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के गोटन में एवं सभी सती मंडल के चातुर्मास स्थलों पर सजोड़े दर्शन, वन्दन करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री भंवरलाल जी, रावलचन्द जी दोगड, आगोलाई वाले, श्री सवाईचन्द जी, स्वरूप चन्द जी के अठाई तप पर एवं आचार्य प्रवर के दर्शन वन्दन करने पर सहयोग।

1100/- श्रीमती मंजु जी नाहटा, चेन्नई, पूज्य आचार्यप्रवर, उपाध्याय प्रवर एवं सतियों के दर्शन-वन्दन का लाभ लेने पर भेंट।

1100/- श्री रतनलाल जी, पवन कुमार जी कोठारी, गोटन, श्री पवन कुमार जी सुपुत्र श्री रतनलाल जी कोठारी के द्वारा उपाध्याय प्रवर के गोटन चातुर्मास में 32 की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री ईश्वरलाल जी लोढ़ा, जलगांव, श्री हर्षद लोढ़ा के स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने एवं आचार्य प्रवर एवं उपाध्याय प्रवर के दर्शन वन्दन का लाभ लेने के उपलक्ष्य में भेंट।

1001/- श्री प्रसन्नचन्द जी भण्डारी, चेन्नई, श्रीमान् प्रसन्नचन्द जी भण्डारी द्वारा सपत्नीक शासन प्रभाविका साध्वी प्रमुखा जी म.सा. के मुखारविन्द से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार करने पर भेंट।

1000/- श्री मनमोहनराज जी, गौतमचन्द जी एवं समस्त घीया परिवार, पीपाड़ शहर, अपने पिता श्रीमान् सायरचन्द जी घीया का स्वर्गवास दिनाँक 11.10.2010 को होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

1000/- श्री दलपत जी, अरविन्दकुमार जी सिंघवी, मैसूर, महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 5 के चातुर्मास के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री मोहनलाल जी सुरेशकुमार जी, विजयकुमार जी बोहरा, मैसूर, महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. की प्रेरणा से मोहनलाल जी बोहरा के शीलव्रत अंगीकार करने के उपलक्ष्य में।

1000/- श्री कौशल बोथरा सुपुत्र श्री मन्नालाल जी बोथरा, जोधपुर, पर्युषण पर्व में सहयोग।

1000/- श्री दौलतमल जी, श्री टोडरमल जी, विनोद जी, नवरतनजी, मुकटमणि जी सुराणा, नागौर, संघ रत्न श्री सेठ संतोकचन्द जी सुराणा के संलेखना संथारा पूर्वक (15 घण्टे) के देवलोकगमन होने पर उनकी स्मृति में भेंट।

911/- श्री पुखराज जी भागचन्द जी पारख, जलगाँव, श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के गोटन में दर्शन, वन्दन करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

555/- श्री महेन्द्र एम. गांग, सूरत, श्रीमती पुष्पकँवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री मनमोहनमल जी गांग (जोधपुर वाले) की पुण्य स्मृति में भेंट।

511/- श्री रामलक्ष्मण जी कुम्भट, जोधपुर, अपनी माताश्री स्व. श्रीमती उगमकंवर धर्मपत्नी स्व. श्री मगराज जी कुम्भट का स्वर्गगमन होने पर उनकी स्मृति में भेंट।

501/- श्री बाबूलाल जी, पीयूष कुमार जी जैन, रामनगर-सोडाला, जयपुर, पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि के पाली में एवं उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के गोटन में दर्शन वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री ओमप्रकाश जी जैन, नवसारी, चि. दीपू जी जैन के पुत्र रत्न चि. तनय होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री रतनलाल जी फूलफगर, फतेपुर-जलगाँव, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन, वन्दन के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री जगदीश जी, हनुमान जी जैन, सवाईमाधोपुर, चि. संदीप के पुत्र रत्न का जन्म होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री लड्डूलाल जी, पारसचन्द जी जैन (देवली वाले), सवाईमाधोपुर काका जी श्री हंसराज जी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्री प्रकाशचन्द जी, राजेश कुमार जी जैन, दौसा, श्री राजेश कुमार जी के द्वारा साध्वी प्रमुखा जी के मुखारविन्द से सपत्नीक शीलव्रत अंगीकार करने पर भेंट।

500/- श्री दुलीचन्द जी, सुनीलकुमार जी खाबीया, अपनी सुपुत्री श्रीमती संगीताबाई के तेले की तपस्या में भेंट।

500/- श्री सुभाष जी जैन, अलवर, चि.अनुराग सुपुत्र श्री सुभाष जी संग सौ. प्रिया सुपुत्री श्री करणराज जी भण्डारी जालोर हाल निवासी मदुराई के विवाहोपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री पारसमल जी, हेमन्त कुमार जी ओस्तवाल, बैंगलोर, हाल मुकाम भोपालगढ़, श्रीमती अरूणा धर्मपत्नी श्री दौलतराज जी बोहरा-बैंगलोर वालों के 16 की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री नेमीचन्द जी, पंकज जी डोसी, जोधपुर, अपने पुत्र श्री धीरज डोसी के नानेश जैन ज्ञान प्रतियोगिता में निबन्ध लेखन पर प्रथम पुरस्कार राशि 11,000 रूपये प्राप्त होने पर भेंट।

500/- श्री मदनलाल जी, अनीलकुमार जी, सुनील कुमार जी रांका, गुलाबपुरा-भीलवाड़ा, श्रीमती कंचन देवी रांका धर्मपत्नी श्री मदनलाल जी रांका के 9 की तपस्या में भेंट।

500/- श्री पारसमल जी, हेमन्त कुमार जी, रिखबचन्द जी ओस्तवाल, बैंगलोर हाल मुकाम भोपालगढ़, आचार्य प्रवर, उपाध्याय प्रवर एवं संत-सतियों के दर्शन-वन्दन-प्रवचन का लाभ लेने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री सुभाष जी जैन, अलवर, चि. अनुराग संग सौ. कां. प्रिया सुपुत्री श्री करणराज जी भण्डारी, जालौर हाल निवासी मदुराई के विवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री अभय कुमार जी नाहटा, के.जी.एफ., श्रीमती मंजूबाई जी नाहटा के ग्यारह की तपस्या सुख-साता पूर्वक सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री वर्धमान स्थानकवासी संघ, कालीकट पर्युषण पर्वाराधिराज पर स्वाध्यायी द्वारा प्रचार-प्रसार तथा धर्म आराधना के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती कमलाबाई जी, उगमराज जी कांकरिया, चेन्नई, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के परिवार सहित दर्शन- वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती सायरदेवी जी बस्तीमल जी चोरड़िया, चेन्नई, पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन, वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री एस.पी. जैन एवं डॉ. ए. के. जैन, करौली, पूज्य पिताश्री की 36वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री रिखबचन्द जी धोका, मैसूर, व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के मैसूर चातुर्मास एवं आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पाली में दर्शन, वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री आनन्दराज जी सुनीलकुमार जी भंसाली पटवा, श्रीमती ममता पटवा भंसाली धर्मपत्नी श्री आनंदराज जी भंसाली पटवा के 9 की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री किरणराज जी गौतमराज जी राजेन्द्र कुमार जी पटवा, मैसूर, श्रीमती संगीता पटवा धर्मपत्नी श्री राजेश जी पटवा के 11 की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री धनराज जी एवं श्रीमती कमलाबाई पारख, लुणी वाले, विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. के दर्शन एवं उनके मुखारविन्द से आजीवन शीलव्रत लेने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी श्री सुगनराज जी गुगलिया, अपने पूजनीय दादीसा श्रीमती सुआबाई धर्मपत्नी स्व. श्री मूलचन्द जी कटारिया का 6 दिवसीय चौविहार संलेखना संथारा पूर्वक पंडित मरण दिनाँक 25.09.2010 को होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री महावीरचंद जी तातेड़, चेन्नई, श्री महावीरचन्द जी तातेड़ एवं धर्म सहायिका श्रीमती शकुन्तला देवी की शादी के 31 वर्ष पूर्ण होने एवं संत-सतियों के दर्शन-वन्दन का लाभ लेने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री शिवनाथ चन्द जी, राजकुमार जी सिंघवी, जोधपुर, श्री महावीरचन्द जी सिंघवी सुपुत्र स्व. श्री उमरावचन्दजी सिंघवी का 08.10.2010 को स्वर्गगमन होने पर उनकी स्मृति में।

500/- श्री शिवनाथचन्द जी सिंघवी, पाली, श्रीमती ममता सिंघवी धर्मपत्नी श्री प्रमोद सिंघवी पुत्रवधू श्री शिवनाथचन्द जी सिंघवी एवं पौत्र वधू स्व. श्री महावीरचन्द जी सिंघवी के मासखमण की तपस्या पाली में सानन्द सम्पन्न होने पर भेंट।

500/- श्री पी. राजकुमार जी जैन, चेन्नई, की ओर से भेंट।

500/- डॉ. चन्दनबाला, सहायक आचार्य, विधि संकाय, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, अपने पिता श्री जौहरीमल जी संकलेचा के 30 नवम्बर को जन्म-दिवस पर।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

10000/- श्रीमान् छतरचन्द जी मेहता, जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती बिलमकंवर जी मेहता की पुण्य-स्मृति में स्वाध्याय संघ की स्तम्भ सदस्यता हेतु।

9000/- श्रीमती लाडकंवर जी कोठारी धर्मपत्नी स्व. श्री मांगीलाल जी कोठारी एवं सुपुत्र श्री प्रकाशचन्द जी कोठारी, चेन्नई, की ओर से भेंट।

5100/- श्री रतनलाल जी, पवन कुमार जी कोठारी, गोटन, पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री

हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/- श्री मदनलाल जी, सुरेशकुमार जी दुगड, कपासन, पर्युषण सहायतार्थ भेंट।
2100/- श्री मोहनलाल जी ओस्तवाल, कृष्णागिरी
1200/- श्री (डॉ.) जीवराज जी जैन, जमशेदपुर, पर्युषण सहायतार्थ भेंट।
501/- श्री मांगीलाल जी, महेन्द्रकुमार जी मुणोत, हिंगणघाट(महा.) पर्युषण सहायतार्थ भेंट।
500/- श्री पारसमल जी, हेमन्तकुमार जी ओस्तवाल, श्रीमती अरूणा जी धर्मपत्नी श्री दौलतराज जी के 16 की तपस्या हेतु।
500/- श्री पारसमल जी, हेमन्त कुमार जी ओस्तवाल, पर्युषण सहायतार्थ भेंट।
500/- श्री प्रकाश जी मुथा, आलन्दूर, पर्युषण सहायतार्थ भेंट।
500/- श्री मदनराज जी मुथा, आलन्दूर, पर्युषण सहायतार्थ भेंट।
500/- श्री मांगीलाल जी कोठारी, आलन्दूर, पर्युषण सहायतार्थ भेंट।
500/- श्री जीवराज जी किरणराज जी धारीवाल, आलन्दूर
500/- श्री प्रसन्नजी मेहता, विल्लुपुरम

पर्युषण सहायता

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
10100	पल्लीपट्ट	7000	पनरुटी	5101	आरकाट
5100	कपासन	5100	कालीकट	5100	चिन्तादरीपेठ
5100	गुडियातम	5100	एम सी रोड	5100	मिरसा पेठ
5000	कडलूर	5000	वडपलनी	5000	होसुर
4100	अयनावरम	3100	छिंदवाड़ा	3100	आवड़ी
3100	चेंगलपेठ	3100	आलन्दूर	3100	नुगम्बाक्कम
3100	श्रीकालाहस्ती	3100	विल्लूपुरम	3001	कृष्णागिरी
2300	मण्डपिया	2101	सतारा	2101	पुन्नमल्लै
2100	कल्लाकुरची	2100	पुत्तुर	2100	रेणीगुन्टा
2100	मदुरांतकम	2100	हैदराबाद	2100	देहरादून
2100	रायपुरम	2100	नेलीकुप्पम	2000	सतारा
1800	उन्हैल	1601	गरौठ	1500	नंगनल्लूर
1100	भीलवाड़ा	1100	चित्तुर	1100	तिरकोईलूर
1100	कारंजा	1100	अलवर	1100	पेरम्बाक्कम
1015	कुनरूतुर	1000	मनली	1100	सौंदाणा
701	देई	501	देवली	501	मुकटी
500	भराडी	500	नागद		

महाराष्ट्र स्वाध्याय संघ को प्राप्त पर्युषण सहायता

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
5001	विदिशा	4001	महाड़	2501	वाकोद
2500	अंबेजोगाई	1111	तोंडापुर	1111	वालुज
1101	शिरूड़	1101	आलेगांव	1101	फत्तेपुर
1100	भड़गांव	1100	सिल्लोड़	1100	मुक्ताईनगर

1100	दुसरबीड़	1100	नरडाणा	1001	इच्छापुर
1001	ताहराबाद	1000	विटनेर	1000	पारशिवनी
900	कासमपुरा	751	बोरकुंड	700	मांगलादेवी
700	बेटावद	700	सौंदाणा	601	वरखेड़ी
501	मुकटी	501	फागणा	501	रालेगांव
501	शेन्दूर्णी	501	वरणगांव	501	चांदुर रेल्वे
501	देऊर बुद्रक	500	वाकड़ी	500	नागद
500	लोहारा	500	लासुर	500	भराड़ी
500	खलणा	500	जायखेड़ा		

स्वाध्याय संघ शाखा-बजरिया को साभार प्राप्त

501/- श्री राजूलाल जी नरेन्द्रकुमार जी जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर, अपने पुत्र श्री जिनेन्द्र जी जैन का शुभ विवाह सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री कालूलाल जी, मांगीलाल जी जैन 'उनियारा वाले', इन्दौर, अपने सुपुत्र श्री ऋषभ का शुभ विवाह सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सादर भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

3,00,000/- श्री राजीव जी, नीता जी डागा, जोधपुर (राज.)

12,000/- श्री रिखबचन्द जी, रतनकंवर जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)

12,000/- श्रीमती करिशमा जी जैन सुराणा सुपुत्री श्री श्रीपाल जी सुराणा, चेन्नई (तमिलनाडु)

12,000/- मैसर्स कल्याणमल कनकमल चोरडिया ट्रस्ट, चेन्नई (तमिलनाडु)

12,000/- श्री दौलतमल चोरडिया, चेन्नई (तमिलनाडु)

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***श्री अशोक जी कवाड़,*** 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

कार्तिक शुक्ला 8	रविवार	14.11.2010	अष्टमी
कार्तिक शुक्ला 14	शनिवार	20.11.2010	चतुर्दशी
कार्तिक शुक्ला 15	रविवार	21.11.2010	चातुर्मासिक पक्खी, वीर लोंकाशाह जयन्ती
मार्गशीर्ष कृष्णा 8	सोमवार	29.11.2010	अष्टमी
मार्गशीर्ष कृष्णा 14	शनिवार	04.12.2010	चतुर्दशी
मार्गशीर्ष कृष्णा 30	रविवार	05.12.2010	पक्खी
मार्गशीर्ष शुक्ला 8	सोमवार	13.12.2010	अष्टमी
मार्गशीर्ष शुक्ला 8	मंगलवार	14.12.2010	अष्टमी
मार्गशीर्ष शुक्ला 14	सोमवार	20.12.2010	चतुर्दशी, पक्खी

हस्ती-जन्मशती

विनम्र निवेदन

अध्यात्म चेतना वर्ष के अन्तर्गत सम्पन्न त्याग-तप, साधना-आराधना के साथ संघ-समाज में रचनात्मक कार्यों का विवरण-विवेचन भिजवाएं

अध्यात्मयोगी युगमनीषी आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. का 100 वाँ जन्म-दिवस पौष शुक्ला चतुर्दशी तदनुसार दिनाँक 30 दिसम्बर,2009 से संघ द्वारा अध्यात्म-चेतना वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द की सतत एवं प्रभावी प्रेरणा, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के सद्प्रयासों से आचार्यश्री हस्ती जन्म शताब्दी समारोह समिति सहित सकल जैन समाज ने अध्यात्म-चेतना वर्ष की सफलता में व्रत-नियम अंगीकार तो किए ही, परोपकार के साथ रचनात्मक कार्यों में बढ़-चढ़ कर भूमिका व भागीदारी प्रदर्शित की है।

संघ-समाज में अध्यात्म-चेतना वर्ष के अन्तर्गत व्यक्तिगत स्तर से लेकर संघ स्तर पर एक ओर जहाँ व्रत-प्रत्याख्यानों की प्रभावना रही वहीं गाँव-गाँव, नगर-नगर और महानगरों में ज्ञानाराधन-तपाराधन के साथ परोपकार की शुभभावना से अनेकानेक रचनात्मक कार्य सम्पन्न हुए हैं।

आपके यहाँ सम्पादित कार्यक्रमों, तपाराधन व व्रतग्रहण की शीघ्र जानकारी अपेक्षित है ताकि इसे समिति के प्रतिवेदन में सम्मिलित किया जा सके। प्रतिवेदन समापन समारोह के अवसर पर प्रस्तुत किया जायेगा। अध्यात्म चेतना वर्ष समापन समारोह दिनाँक 16 जनवरी, 2011 से 19 जनवरी, 2011 तक परम पूज्य आचार्य श्री के विराजित स्थान पर प्रस्तावित है। दिनाँक 19 जनवरी, 2011 को एकान्तर/वर्षीतप आराधकों के पारणक व बहुमान, शीलव्रत आराधकों, बारहव्रत धारकों के बहुमान के साथ ही 10 वर्ष तक की वय वाले बालक-बालिकाओं जिन्होंने अर्थ सहित प्रतिक्रमण कंठस्थ किया है, का सम्मान किया जाना प्रस्तावित है। आप अपने यहाँ की प्रविष्टियाँ शीघ्र प्रेषित करावें।

ज्ञानेन्द्र बाफना
(संयोजक)
आचार्य श्री हस्ती शताब्दी समिति

पूरणराज अबानी
(महामंत्री)
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

अध्यात्म चेतना वर्ष मनाएँ

बारह व्रती बनें

आओ प्रत्याख्यान ग्रहण करें

मान्यवर,

सादर जय जिनेन्द्र!

युगमनीषी युग प्रभावक परमाराध्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. का जन्म-शताब्दी वर्ष पूज्यपाद के सुशिष्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परम पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र म.सा. एवं गुरु भगवंतों तथा पूज्य महासतीवृन्द की प्रेरणा एवं मंगलमय आशीर्वाद से अध्यात्म चेतना वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

परम पूज्य आचार्य भगवन्त का साधनामय जीवन हमें भी व्रतधारी श्रावक बन कर अपनी अध्यात्म चेतना के रूपान्तरण का संदेश देता है। तीर्थंकर भगवन्तों के श्रावक-श्राविकाओं की गणना व्रतधारी श्रावकों की अपेक्षा से है। जन्मशताब्दी वर्ष के पावन प्रसंग पर हम सब व्रतधारी श्रावक बनें, ज्ञान, दर्शन, चारित्र की साधना में आगे बढ़ें यही हमारी, हमारे आराध्य गुरुवर्य की पावन स्मृति में सच्चा श्रद्धा-समर्पण होगा। हम जीवन पर्यन्त के लिये पूर्ण बारह व्रत ग्रहण कर सकें, यह सर्वश्रेष्ठ होगा, पर कदाचित् प्रारंभ में ऐसा न कर पायें तो-

1. कठिन प्रतीत होने वाले एकाध व्रत के सिवाय शेष व्रत अवश्य अंगीकार करें। युवा साथी भी कम से कम पाँच अणुव्रत अवश्य अंगीकार करें।
2. आगे के व्रतों में प्रारम्भिक तौर पर कुछ आगारों के साथ भी व्रत अंगीकार किये जा सकते हैं।
   (1) पन्द्रह कर्मादान का त्यागः वर्तमान व्यवसाय के अतिरिक्त ऐसे नये व्यापार व्यवसाय का त्याग।
   (2) नवमाँ सामायिक व्रतः अपने ग्राम/नगर में रहते हुए नित्यप्रति एक सामायिक अवश्य करें। किसी दिन न हो सके तो दूसरे दिन पूर्ति करने का लक्ष्य रहे, अन्यथा महीने भर में किसी भी दिन एक से अधिक सामायिक कर पूर्ति अवश्य हो।
   (3) दसवाँ देशावगासिक व्रतः प्रतिदिन प्रातःकाल चौदह नियमों की अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य के अनुसार ग्रहण करना तथा तीन मनोरथ का चिन्तन करना।
   (4) ग्यारहवाँ पौषध एवं दया व्रतः वर्ष में कम से कम दो उपवास के साथ रात्रि पौषध या कम से कम दो दया व्रत (कम से कम सात प्रहर की दया) करना।

प्रति वर्ष अपने द्वारा ग्रहण किये गये व्रतों की समीक्षा कर मर्यादा को सीमित कर व्रताराधना में आगे बढ़ने का लक्ष्य रखें।

अध्यात्म चेतना वर्ष कार्यक्रम व व्रताराधन के बारे में कोई भी सहयोग, समाधान या स्पष्टीकरण अपेक्षित हो तो आचार्य श्री हस्ती शताब्दी समिति के कार्यकर्ताओं से सम्पर्क करें।

निवेदक

आचार्य श्री हस्ती शताब्दी समिति

एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.) फोन : 0291-2636763, 2641445

Gurudev

SURANA™

yes, the best TMT

DRI Plant

Electric Arc Furnace

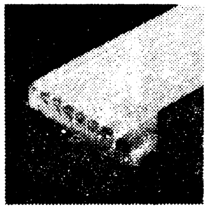

Billets

Rolling Mil

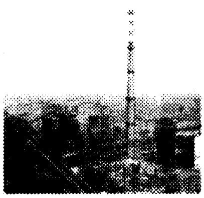

Captive Power Plant

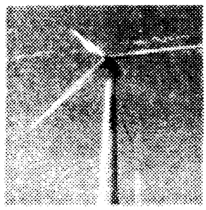

Windmill

With best wishes from

ISO 9001 : 2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/

Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL | POWER | MINING

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

N0. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

नैतिक एवं धार्मिक संस्कार शिविर

दक्षिण भारत में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वाधान में शीतकाल में नैतिक एवं धार्मिक संस्कार शिविरों का आयोजन स्थानीय स्तर पर करवाने के लिए सम्पर्क करावें – **जितेन्द्र डागा**, जयपुर (उपाध्यक्ष, अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्) 09829011588, **राजेन्द्र लुंकड़**, ईरोड (संयोजक) 09360025001

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेघावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

ज्ञान का एक दीया जलाईये,
सहयोग के लिए आगे आईये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का
लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बन्धुवर,

आप अपने निकटतम क्षेत्र के सभी गुरु भाईयों के प्रति आदर एवं प्रेम के साथ उनके व्यावहारिक एवं धार्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु इस योजना के आवेदन पत्र भरवाकर इस योजना के उद्देश्यों को सफल बनाने में सहयोगी बनें।

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रु. 12000/- के गुणक में दान राशि **"Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund"** योजना के नाम चैक/ड्राफ्ट (Donation to Gajendra Nidhi are exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें –

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (09381041097)
2. सुमतिचन्द मेहता, पीपाड़ (09414462729)
3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (09414921164)
4. बुधमल बोहरा, चैन्नई (09444235065)
5. राजकुमार गोलेच्छा, पाली (09829020742)
6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (09414563597)
7. कुशलचन्द गोटेवाला, सवाई माधोपुर (09460441570)
8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (09821055932)
9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (09829011589)
10. महेन्द्र बाफना, जलगाँव (09422773411)
11. हरीश कवाड़, चैन्नई (09500114455)

सहयोग राशि भेजने, योजना सम्बन्धी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें –

B. Budhmal Bohra

No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-600079 (T.N.) • Telefax : 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from:

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)

098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.

S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.

NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES

NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS

NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 11 ★ मूल्य : 10 रु.
10 नवम्बर, 2010 ★ कार्तिक, 2067

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

KALPATARU
GARDENS

Offering 2 BHK and E3 Homes apartment with state-of-the-art amenities include a clubhouse with a well equipped gymnasium, swimming pool, squash and badminton court, landscaped gardens, a children's play area and multi-level car parking.

Other Projects:

- Kalpataru Aura - Ghatkopar (W) • Kalpataru Towers, Kandivali (E)
- Kalpataru Riverside, Panvel • Kalpataru Hills, Thane (E) • Srishti, Mira Road

KALPA-TARU®

Site: Kalpataru Gardens, Off Ashok Chakravarty Road, Near Jain Temple, Kandivali (East), Mumbai - 400 101. **Tel.: 022-2887 2914**
H.O.: Kalpataru Limited, 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055. **Tel.: 022-3064 3065 / 3064 5000** or Fax: 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com or visit www.kalpataru.com

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।